कविराज बांकीदास

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप मे राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ—रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे है, जिसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है । भारत में लेखन-कला का सभवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख ।

नागार्जुनकोण्डा : दूसरी सदी ईसवी

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्य के निर्माता

कविराज बांकीदास

लेखक
सौभाग्यसिंह शेखावत

साहित्य अकादेमी

Kaviraj Bankidas : A monograph in Hindi by Soubhagya Singh Shekhawat on the Rajasthani author. Sahitya Akademi, New Delhi (1992), Rs. 15.

प्रथम संस्करण : 1992

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स.,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053

304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास 600 018

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग,
दादर, बम्बई 400 014

ए. डी. ए. रंगमन्दिर 109, जे. सी. मार्ग, बंगलौर 560 002

मूल्य : पन्द्रह रुपये

ISBN 81-7201-362-0

लेज़र-सैटिंग : वैलविश पब्लिशर्स, पीतमपुरा
दिल्ली 110 034

प्रिंटर्स : दीप प्रिंटर्स,
दिल्ली 110 007

अनुक्रम

लेखकीय निवेदन

कविराज बाकीदास अपने युग के अति प्रसिद्ध कवि, इतिहासविद्, राजनीतिज्ञ और चतुर सभासद हुए हैं । जोधपुर के महाराजा मानसिह के ये बड़े कृपापात्र रहे है इनकी रचनाओ का विस्तार और वैविध्य पर्याप्त चर्चित रहा है । अग्रेजो का विरोध, अहिंसा की भावना, कृषको का आदर तथा सद्‌गुणो की स्तुति इनके काव्य के प्रधान गुण रहे हैं । इसी प्रकार दुर्गुणो की निदा भी इन्होने जी भर कर की है । वीरता, वदान्यता आदि सद्‌गुणो की प्रशस्ति तथा कायरता, कृपणता, वणिको द्वारा शोषण, चुगली करने वालो और स्त्रैण लोगो के अपयश का भी विस्तार से वर्णन किया गया है ।

काव्य-रचना के अतिरिक्त "बाकीदास री ख्यात" के नाम से प्रकाशित ऐतिहासिक टिप्पणियों का इनका सग्रह भी बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है । प्रसिद्ध इतिहासकारो ने भी इसकी उपादेयता को स्वीकार किया है और अपने ग्रन्थो में स्थान-स्थान पर इनकी टिप्पणियों को मान्यता देकर उद्‌घृत किया है ।

बांकीदास सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, फारसी, पिंगल, डिंगल आदि भाषाओ के पडित थे और इनके शास्त्रीय ग्रन्थों का इन्होने विधिवत् अध्ययन किया था । ये बहुज्ञ और विद्वन्मण्डली के रत्न थे । छंदशास्त्र विषयक कई ग्रन्थ इनके रचे हुए हैं, जिनमे काव्य के गुण-दोषो का सागोपांग विवेचन किया गया है । ये काव्य-रसिक तथा ज्ञान-पिपासु विद्वान् थे और अनेक भाषाओ के ग्रंथ-रत्नों का सम्यक् अध्ययन भी इन्होने किया था । भाषाओ पर इनके इतने अच्छे अधिकार के कारण ही महाराजा मानसिंह ने इन्हें अपना भाषा-गुरु बनाया था और लाख पसाव (एक लाख के मोल का पुरस्कार) दिया था । पर इनकी निर्भीकता से मानसिह ने रुष्ट होकर इन्हें दो बार निर्वासन का दण्ड भी दिया था ।

प्रस्तुत मोनोग्राफ (लघु पुस्तिका) मे बाकीदास के जीवन की प्रमुख घटनाओं का चित्रण तो है ही पर उनकी समस्त कृतियो का परिचय भी दिया गया है । कृतियों के विस्तार, विषय-वैविध्य, महत्त्व, काव्य सौन्दर्य तथा राजस्थानी साहित्य की देन पर भी प्रकाश डाला गया है जिससे कवि को समझने तथा सराहने में सहायता मिलेगी ।

एक परिशिष्ट मे कवि की कुछ रचनाओ के अंश भी प्रकाशित किए गए हैं । इन अशो मे वीरों, कायरो, दातारो, कृपणो आदि की कविता के अतिरिक्त, डिंगलगीत, स्फुट दोहे, कवित्त तथा अन्य छन्द भी सम्मिलित किए गए है । पाडित्य विषयक रचनाओ में काव्य के गुण-दोषो के अशो को विस्तार से बचने के लिए छोड़ दिया गया है ।

इन्ही रचनाओ से सम्बन्धित प्रमुख ऐतिहासिक तथा सास्कृतिक टिप्पणिया भी दी गई है ताकि अर्थ को समझने में सरलता रहे ।

पुस्तिका के आकार को देखते हुए तथा रचना विस्तार को समाविष्ट करने के उद्देश्य से समस्त उपयोगी जानकारी का संकलन कर दिया गया है । बाकीदास को जानने-समझने का इच्छुक कोई भी पाठक कवि को उसके समग्र रूप में देख सकेगा ।

— सौभाग्यसिंह शेखावत

दीपमालिका 2046
अक्टूबर, 1989

बांकीदास का युग और तत्कालीन परिस्थितियां

कविराज बाकीदास का जन्म १९ वी शताव्दी की द्वितीय बीसी के प्रारम्भ मे हुआ था। राजस्थान में तब छोटे बड़े सब ही राज्य राजपूत शासको के अधिकार क्षेत्र में थे। ये राजवाडे यों तो आन्तरिक मामलो मे स्वतत्र और स्वशासी कहलाते थे, पर वस्तुतः ये दिल्ली की केन्द्रीय मुगल-सत्ता के अधीन राज्य थे। मुगल शाहशाह अकबर के साथ राजस्थान की शासकीय जाति राजपूतो का राजनीतिक सम्बन्ध तथा सम्पर्क जुड़ जाने से मेवाड़ के सीशोदिया घराने के शासक भी अपनी स्वतंत्रता बचाए नहीं रख सके थे। अधिकाश रियासती शासक सर्वथा मुगलो की कृपा और सैनिक सेवा के कृपाकाक्षी बन गये थे। मेवाड़ के शासक महाराणाओ के अनेक भाई-बन्धु तथा जागीरदार भी मुगलों की सेवा मे प्रविष्ट हो गए थे। मुगल बादशाह सैनिक सेवारत रियासती शासकों तथा उनके सहोदर सम्बन्धियो को जागीरे, मनसब और सैनिक पदों पर नियत कर राजस्थान से दूर सल्तनत के अन्य प्रांतो में उन्हें नियत करते थे। इस प्रकार राजस्थान की इस सैनिक जाति के योग्य और कारगुजार लोग अनवरत वर्षो तक अपने वतन से अलग दूर ही रहते रहे। इनमें कतिपय शासको की तो मृत्यु भी दक्षिण, उत्तर और पूर्वी प्रांतो मे ही हुई। मुगलो की इस अत्यावश्यक नीति का अत केन्द्र में मुगल-सत्ता की समाप्ति के पश्चात ही कही जाकर हुआ।

मुगल-सत्ता के अंतिम दिनो मे उनकी हिन्दू विरोधी नीति मे कुछ परिवर्तन आया और शनैः शनैः मुगलो की सत्ता पर पकड़ भी ढ़ीली पडने लगी। इसी शैथिल्य और दुर्बलता का लाभ उठाकर दक्षिण की नवगठित मरहठा शक्ति का राजस्थान में प्रवेश हुआ।

यह नवीन मरहठाबल राजस्थान के शासकों के पारस्परिक बैर-विरोध और लडाइयों का लाभ उठा कर उन पर प्रभावी होने लगा । राजस्थान के जयपुर, जोधपुर और उदयपुर तीनों ही बड़े और सबल राज्यों में आपसी संघर्षों और उत्तराधिकार के प्रश्नों को लेकर एक दूसरे के विरुद्ध तलवारें निकलने लगी और भाले तानें जाने लगे । अनेक स्थानों पर रक्त की फागें खेली गई । इन खूनी खेलों के कारण मरहठो और उनके भाड़ायती सैनिक पंडारी आदि की मन चाही बन गई । राजस्थान के राजा, सामंत, और सैनिक समूह दो दलो में बटकर दो पक्ष बन गये । इस प्रकार बंदर-बिल्ली न्याय का सा राजस्थान मे वातावरण बन गया । सैनिक सहायता खुली बोली लगकर बिकने लगी । जो पक्ष अधिक अर्थ देता था, मरहठे और पंडारे उसी की सहायता पर पहुंच जाते थे । वे आगजनी, लूटपाट और मारकाट कर बर्बादी का ताण्डव मचा देते थे । उनकी उचित अनुचित रूप से केवल मात्र अर्थ संचय के अलिरिक्त न कोई नीति थी और न कोई दृष्टि थी । अनिश्चय, आतंक और दुश्चिंताओं के वात्यचक्रों में राजस्थान की शासन-सत्ता और जन जीवन इधर-उधर उड़ रहा था । ऐसी उथल-पुथल और अस्थिर राजनैतिक स्थिति में कविराज बांकीदास का जन्म हुआ था ।

इधर डच, फ्रेन्च, और अंग्रेज प्रभृति यूरोपीय व्यापारिक जातियाँ भी व्यापार की मर्यादाओं को त्याग कर आपस में अपने सत्ता-झोले को फैलाने में लग गये थे । अन्ततोगत्वा अंग्रेजों ने अपने विदेशी प्रतिद्वंदियों को सैनिक और राजनीतिक पटक देकर अपना वर्चस्व सिद्ध कर दिया और वे सैनिक सहायता और संरक्षण के ब्याज से संधि, समझौतों के नाम पर मरहठों से पीड़ित राजस्थान के राजपूत शासकों की स्वतंत्र सत्ता को लीलने में जुट गये । तब कविराज बांकीदास के संरक्षक और जोधपुर के अंतिम स्वतंत्र शासक महाराजा मानसिंह के अतिरिक्त राजस्थान का कोई भी शासक इस विषाक्त संरक्षण नीति की वास्तविकता को या तो समझे नहीं या परिस्थितिवश जानते हुए भी उनकी कथित शांति की गोद में बैठने के लिये विवश हो गये थे । वे मरहठों और पंडारों के अत्याचारों से मुक्ति पाने

में ही अपना हित समझ चुके थे और अंग्रेजो के सरक्षण को अपने लिये वरदान मान चुके थे ।

अंत में उथल-पुथल के उस युग मे अग्रेजों के सत्ता-पाश ने भारत भूमि को अपनी अर्थ लोलुप पकड़ मे ले लिया और वह जकड सन् १९४७ में जाकर ही कही छूटी और भारत स्वाधीन हुआ ।

जीवन सम्बन्धी ज्ञातव्य

बाकीदास अपने समय के अतीव प्रतिभा सम्पन्न तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति थे । मारवाड़ के महाराजा मानसिह उनको बहुत चाहते थे । इनका जन्म वि. स. १८२८ में मारवाड के भाडियावास ग्राम मे चारण जाति की आशिया शाखा में हुआ था जो इनके पूर्वज आशा नाम के व्यक्ति से प्रारम्भ हुई मानी जाती है । इनके पिता का नाम फतहदान और माता का नाम हिन्दूबाई था । आशिया चारण मारु चारणो के तिरेपन गोत्रों मे गिनी जाते है । कई लोगों की मान्यता है कि आशिया पहिले अभसूरा चारण कहलाते थे । अभसूरा नामक चारण के बणसूर, मोहड़, लालस, सामोर, सूधा और आशा नाम के छः पुत्र हुए जिनसे प्रत्येक की उक्त पृथक-पृथक शाखायें प्रचलित हुई ।

चारणो और राजपूतो का निकट का सम्बन्ध चला आ रहा है । चारण लोग क्षत्रिय आश्रयदाताओ का यशगान करते और उनसे वस्त्र, आभूषण, घोड़े, हाथी और भूमि तथा जागीर प्राप्त करते आये हैं । क्षत्रिय जाति के पोलपात (प्रतोलीपात्र) चारणो की शाखा विशेष के लोग रहते आये है । उदाहरणातः मेवाड के सीसोदियों के सौदा, जैसलमेर के भाटियो के रतनू, सिरोही के देवडा चौहानों के आढ़ा तथा जोधपुर के राठौड़ो कें रोहड़िया शाखा के चारण पोलपात रहे है । इसी प्रकार आशिया शाखा के चारण राठौड़ो की सिंधल शाखा से सम्बन्ध थे ।

यह मान्यता है कि चारण लोग आश्रयदाता के निवास पर हठ करते थे ताकि उन्हें अधिक त्याग मिल सके । बारहठ (द्वारहठ) शब्द को लोग इसी प्रथा से जोड़ते हैं । पर द्वारहठ परम्परा तो बहुत पुरानी है, और उससे चारण कवियो का कोई विशेष संबंध नही है ।

विवाह आदि मागलिक अवसरों पर आश्रयदाता क्षत्रिय पोलपात चारणों को घोड़ा तथा द्रव्य पुरस्कार स्वरूप देते थे । यह द्रव्य त्याग कहलाता था । सिंधलों से पहिले आशिया चारण नाग तथा प्रतिहार क्षत्रियों के पोलपात थे और उनसे मांगलिक अवसरों तथा पर्व त्यौहारों आदि पर पुरस्कार प्राप्त करते थे । आशिया चारणों का निवास मारवाड़ के रोहाड़ा नामक गाँव में था । उस समय मडौर नाग क्षत्रियों के अधिकार में था । नागो के बाद पड़िहार, चौहान और परमार (पंवार) क्षत्रियो ने वहां राज्य किया । प्रतिहारो से झगड़ा होने के कारण आशिया चारण जीविका विहीन हो गये जिसका वर्णन भांडियावास गाँव के आसिया चारण पाबूदान ने करणीप्रकाश नामक अपने काव्य मे किया है । राव जोघा के समय में पुंजराज आशिया को उसने खाटावास गाँव देकर अपना सरंक्षण प्रदान किया । पुंजराज के छः पुत्र थे । जिनमें सबसे छोटा माला था । वह अपने समय का उच्च श्रेणी का कवि था । उसने अपनी काव्य कला से प्रभावित कर सिवाना के शासक राणा देवीदास से भांडियावास गाँव प्राप्त किया । माला के क्रमानुयायी वैरसी, भीमा, खेतसी, नाथा, सूजा, शक्तिदान और फतहदान हुए । इस फतहदान की पत्नी हिन्दूबाई की कुक्षि से वि. सं. १८२८ में बांकीदास का जन्म हुआ ।

शिक्षा

बाकीदास ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता से ग्रहण की । दोहे, सोरठे, कवित्त तथा गोत आदि बनाने का अभ्यास कर १६ वर्ष की आयु में वह अपने पिता के साथ अपनी काव्य रचना की परीक्षा देने रायपुर के उदार ठाकुर अर्जुनसिंह के पास आया । अर्जुनसिंह की प्रशंसा में उसने तत्काल निम्न दोहा रचकर सुनाया—

रवि रथ चक्र गणेश रद, नाक अलंकृत नार ।
यूं हिज इक इल पर अजा, दीपै सूर दतार ।।

हे अर्जुनसिंह ! जैसे सूर्य के रथ के एक ही पहिया, गणेश के एक ही दांत तथा सती नारी के नाक पर एक ही नथाभूषण

(नथ, नाथ, पति) होता है, वैसे ही पृथ्वी तल पर तू एक ही शूर दातार पुरुष है ।

ठाकुर अर्जुनसिंह उसकी उक्ति वैचित्र्य, वाक पटुता और काव्य रचना पर बडे प्रसन्न हुए और उसकी इच्छानुसार उसे भावी शिक्षा के लिये जोधपुर मे अपनी हवेली पर भेज दिया । बांकीदास ने जोधपुर में विभिन्न विद्वानों से सारस्वत पूवार्द्ध, सारस्वत उत्तरार्द्ध, चद्रिका, कुवलयानंद, काव्य प्रकाश, गणित, ज्योतिष, शालिहोत्र, भूगोल, इतिहास, पुरान, मीमासा आदि विद्याओ तथा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रस, डिगल, ब्रज, पंजाबी, पर्शियन तथा अरबी आदि भाषाओं के अनेक ग्रंथो का अध्ययन किया । बांकीदास ने इस सम्बध में स्वयं कहा है कि– बक इतेयक गुरु किये, जितयेक सिर पर केस ।

अपना अध्ययन पूर्ण कर फिर वह महाराजा मानसिह के आध्यात्मिक गुरु आयस देवनाथ के माध्यम से गुणग्राही महाराजा मानसिंह के दरबार मे पहुचा और महाराजा से लाख पसाव, जागीर, पालकी आदि उच्च सम्मान सहित महाराजा के काव्य गुरु का पद प्राप्त किया ।

बांकीदास के आश्रयदाता महाराजा मानसिंह कवि-पक्षियों के साक्षात् कल्पतरु थे । उनके दरबार में अनेक कवि, कलाविद्, संगीतकार आदि सम्मान तथा जीविका प्राप्त कर अयाचक बन गये थे ।

फतमल सुतरी फेंट, हठ कर कवि न चढै हिये ।
जग में आसल जेठ, सिधपत तूठा सांपजै ।।

— आयस देवनाथ

अतएव कहा जा सकता है कि बाकीदास चारण कवि जाति की दीर्घ परम्परा मे अपने प्रकार का एक बहुभाषी, बाहुपाठी, बहुश्रुत, शास्त्रो, शस्त्रों, विधाओं और कलाओं का निष्णात् विद्वान था ।

कृति-परिचय

कविराज ने यद्यपि कोई वृहत् प्रबंध काव्य तो नहीं लिखा पर उनकी लघु तथा स्फुट रचनाओं का विस्तार इतना अधिक है कि उसे देखकर चकित रह जाना पड़ता है । विषय विवरण की दृष्टि से भी ये रचनाये अद्वितीय कही जा सकती है । बांकीदास ने अपने समय की आवश्यकता को देखते हुए जो निर्भीक रचनाये की हैं, उनसे उनकी अपने युग के प्रति जागरूकता सिद्ध होती है । रचनाओं का वर्णन निम्न प्रकार है:—

1. सूर बत्तीसी ; 2. सीह छत्तीसी ; 3. वीर विनोद ; 4. धवल पच्चीसी ; 5. दातार बावनी ; 6. नीति मजरी ; 7. सुपह छत्तीसी ; 8. वैसक वारता ; 9. मावडिया मिजाज ; 10. कृपण दर्पण ; 11. मोह मर्दन ; 12. चुगलमुख चपेटिका ; 13. वैस वारता ; 14. कुकवि बत्तीसी ; 15. बिदुर बत्तीसी ; 16. भुरजाल भूषण ; 17. गंगा लहरी ; 18. जेहल जस जड़ाव ; 19. कायर बावनी ; 20. झमाल नख सिख ; 21. सुजस छत्तीसी ; 22. संतोष बावनी 23. सिद्धराव छत्तीसी ; 24. वचन विवेक पच्चीसी ; 25. कृपण पच्चीसी ; 26. हमरोट छत्तीसी ; 27. स्फुट संग्रह[1] ; 28. थलवट बत्तीसी[2] और ; 29. बांकीदास

---

1 इनमें से 27 कृतियां नागरी प्रचारिणी सभा काशी से **बांकीदास ग्रन्थावली** भाग-1 सम्पादक रामकर्ण आसोपा, **बांकीदास ग्रंथावली**, भाग-2 संपादक रामनारायण दूगड तथा **बांकीदास ग्रंथावली**, भाग-3 सम्पादक कविया मुरारिदान व महताबचन्द खारेड के नाम से प्रकाशित हैं ।

2 थलवट बत्तीसी - **राजस्थानी निबन्ध संग्रह** लेखक सौभाग्यसिह शेखावत प्रकाशक हिन्दी पुस्तक मन्दिर जोधपुर तथा **बांकीदास री ख्यात** सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा प्रकाशित हुई है ।

री ख्यात । नागरी प्रचारिणी की ग्रंथावलियों में कृष्ण चन्द्रिका, विरह चन्द्रिका, मान यसो मण्डन, चन्द्र दूषण दर्पण, वैसाख वीरता संग्रह, श्री दरबार रा कवित्त, रस तथा अलंकार ग्रन्थ, वृत्त रत्नाकर भाषा तथा व्याख्या, महाभारत छन्दानुवाद, गीत तथा छन्दो का सग्रह और अन्तर्लापिका, कुल 12 कृतियां अप्रकाशित गिनायी है । इस प्रकार कविराज द्वारा सर्जित प्रकाशित, अप्रकशित कुल 41 कृतियो की साहित्य-संसार में चर्चा है । इन चर्चित कृतियो में तीन पच्चीसियां, तीन बत्तीसियां, छः छत्तीसियां, तीन बावनिया और अन्य वीर विनोद, नीति मजरी, मोह मर्दन चुगल मुख चपेटिका, मावड़िया मिजाज आदि नामधेय रचनाएं हैं जिनमे 75 दोहो से अधिक की कोई भी कृति नहीं है । ये समस्त कृतियां दोहा तथा सोरठा छन्द में निर्मित हैं । यहां आगे इस सूची की प्रत्येक कृति का सोदाहरण सार-सक्षेप देना समीचीन होगा—

(1) सूर छत्तीसी —

यह रचना जैसा कि नाम से ही प्रकट है छत्तीस दोहा छन्दो में सर्जित लघु काव्य कृति है । इसमे कवि ने "वीर" के पर्यायवाची शूर के स्वभाव, निर्भीकता, आत्मविश्वास, बलिदान की भावना तथा पौरुष-पराक्रम का स्तवन किया है । प्रतीक शैली की इस कृति में जहाँ एक और शूरवीर के रणोत्साह, समयातुरता, वीरांगना की आकांक्षा, पति की अदम्य पराक्रमता आदि उदात्त गुणो का उन्मेष पाया जाता है वहाँ दूसरी ओर कायरों, प्राण विसर्जन-भीरुओं, भयातुरों और कृपणों की भरपूर भर्त्सना, उपहास तथा निन्दा वर्णित है । वीर और सिंह की स्वभावगत साम्यता, कार्य-सादृश्यता और पौरुष प्रदर्शन का अतीव ही प्रभविष्णुता के साथ चित्रण किया गया है । कवि ने काव्य-सर्जन का प्रयोजन एक दोहे में इस प्रकार घोषित किया है—

सींह छत्तीसी सांभले, छाकै बंस छत्तीस ।
बांकै पाटी वीररस, वरणी विसवा बीस ।।

क्षत्रियों के छत्तीस वंशों को अपने कुल-धर्म की शिक्षा देने वाली इस कृति के रचनाकाल के बारे में कवि स्वयं मौन है ।

(2) वीर विनोद –

यह भी कविराज के मुक्तक दोहो की संकलित कृति है । इसमें वीर भावनाओ से ओतप्रोत तथा वीररस से परिप्लावित 75 दोहे है । सिंह छत्तीसी और इस कृति में विषय तथा वर्णनगत समानता है । रचना का उद्देश्य भी समान ही हैं । राजस्थानी काव्य में वीर के प्रतीक रूप मे सिंह तथा वाराह को मानकर अनेक कवियों ने स्फुट छन्द रचे हैं । बांकीदास ने भी सिह के माध्यम से वीर कर्म का चित्रण किया है । कई दोहों में कवि ईश्वरदास बारहठ के "हालाझाला रा कुंडलिया" के दोहो की भावावृत्ति परिलक्षित होती है । कवि ने कृति के अन्तिम दोहे मे रचना प्रेरणा तथा रचना लक्ष्य का इस प्रकार संकेत दिया है–

वीरां काज वणावियौ, बाकै वीर विनोद ।
बधसी सुणियां वाचियां, मन मे वीरां मोद ।।

रचना तिथि की कृतिकार ने कोई सूचना नही दी है ।

(3) धवल पचीसी –

धवल पच्चीसी मे कवि प्रणीत 25 स्फुट दोहे है । इसमे धवल (श्वेत बृषभ, जो बल और पौरुष का प्रतीक गिना जाता है) कें ब्याज से शूरवीर के पराक्रम और दायित्व-वहन का आख्यान है । धवल के कन्धों या शृंग पर धरा का भार धारण किये रहने की पौराणिक प्रसिद्धि है । वह धरा का भार वहन करने में समर्थ माना गया है । धवल की ही भांति धवल का प्रतीक वीर पुरुष भी युद्ध-भार को वहन करने मे सबल गिना जाता हैं । धवल के मिस राजस्थानी काव्य मे अनेक कवियों द्वारा सर्जित दोहे, सोरठे तथा कवित्तादि छन्द मिलते है । जिनमें धवल की उन्नत तथा पुष्ट सबल स्कंधता, भार वहन की क्षमता, दायित्व-ग्रहण और उसके परिपालन की आश्वस्तता आदि विशेषताओं का आलेखन मिलता है । धवल पच्चीसी में भी उसी पारम्परिक भावधारा तथा वर्णन शैली का अनुसरण किया गया है । राजस्थान मे धवल की अनिवार्य उपयोगिता तथा महत्त्व है । इसीलिए कवि ने इस कृति मे गणपति, सरस्वती अथवा ईश वन्दना के स्थान पर प्रारम्भ में ही धवल-वन्दना कर धवल के प्रति

अपनी असीम आस्था तथा प्रेम भक्ति दरसायी है—

राघव रयणायर रसा, सेस महेस्वर वैण ।
सुणै वधायौ गिरि सुता, सो व्हौ मो सुख दैण ।।
तू क्यू गणपत नाम लै, जोतै धवळौ ज्यार ।
गणपत हंदा बाप रौ, धवळ उठावै भार ।।

इस प्रकार कविराज ने धवल पच्चीसी की रचना तथा धवल वन्दना की सार्थकता एवं औचित्य दिखाया है । धवल द्वन्द्व ध्वंसक गणपति के पिता महेश्वर का वाहन वैतरणी से तारण वाली धेनु का पुत्र है, अतएवं वह स्वयं ही वन्दनीय व अर्चनीय है । कृषि प्रधान राजस्थान मे वृषभ की उपयोगिता तथा महत्ता निर्विवाद है । खेत-खलिहान, वन-उपवन, कूप-वापिका, शकट-गाड़ी, सवारी, बोझ-भार आदि विविध जीविकोपार्जनीय दैनदिन कार्यों का सम्पादन बैल के बिना सम्भव नहीं है । इस रूपकात्मक लघुकृति का रचनाकाल चैत्र मास 1883 वि. है—

अट्ठारै तैयासिये, चैत मास नम स्याम ।।
रूपक वंक वणाविया, धवळ पचीसी नाम ।।

(4) दातार बावनी —

दातार बावनी 53 दोहों में निबद्ध काव्य कृति है । इसका विषय दानवीर और दान-महिमा का वर्णन है । कृति मे लेखक ने प्रारम्भ में वदान्यता का विविध रूप में व्याख्यान किया है । तदनंतर दानी और कृपण की स्वभावगत मनोवृत्ति, द्रव्य-प्रेम, त्याग भावना आदि के मनोवैज्ञानिक सटीक चित्र खींचे हैं । अनेक दोहों में कृपण-वृत्ति वाले धनाढ्यों का उपहास किया गया है । उन्हें फटकारा, ललकारा तथा दुत्कारा गया है । कवि की धारणा के अनुसार इस संसार में वे ही सत्पुरुष भाग्यशाली, यशस्वी तथा अर्चनीय है जिनके नाम का जनमानस प्रभात वेला में स्मरण कर अपना दैनिक कार्य प्रारम्भ करते हैं ।

बांकीदास ने दातार की आम्र विटप, सरोवर, वापिका तथा कूपादि के साथ समता दिखाते हुए उदारता, आश्रयता एवं परोपकारिता आदि महत भावों की ओर मानव मन को आकृष्ट करने का प्रयत्न किया

है । दानियों के घर परिवार में दूध दही की नदिया (दूधा दहियां छोल) और कृपणों के कपालों पर वज्रपात के प्रहार की कामना की है । "दाम गाठ मत देह" द्रव्य को गाठ बांधकर कैद मत कर आदि उक्तियो द्वारा धन के सदुपयोग की प्रेरणा दी है । दानवीर राजा कर्ण, ऊनड़ जाम, बाघा कोटडिया, आशा डाबी, बच्छराज गौड़ और आयस लाडूनाथ जैसे अनेक परवर्ती एवं समवर्ती प्रसिद्ध दानवीरों की भूरि-भूरि श्लाघा की है । कवि-दृष्टि मे धन की सार्थकता संचय में नही अपितु असहाय, अभाव पीड़ित की सहायता तथा परोपकार मे व्यय करने में है ।

(5) नीति मंजरी –

यह दोहा, सोरठा, बडा दोहा तथा तूवेरी जाति के दोहों वाली 39 छन्दो की नीति-वाचक रचना है । इसमे कवि ने शत्रु को कण्टक, सर्प, विष, वृश्चिक, व्याध्र, सिह और चीता के तुल्य प्राणघातक कहा है । विरोध तथा शत्रुता को मानव समाज और मानव-धर्म के लिए घातक तथा निंदनीय बताया है । पर-द्रव्य लुब्धक मानव, पर द्रव्य हरणी वेश्या और पर प्राण लोभी वैरी के कर्म में अभिन्नता दरसायी है । संसार में सफलता पूर्वक जीवन-यात्रा पूर्ण करने के लिए वाणी का नियन्त्रण, देश काल पात्रानुसार व्यवहार, परनारी, परधन और पर निदा से विमुखता को आधारभूत माना है । अपनी बात को सटीक और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने के लिए अनेक दृष्टान्तो तथा मुहावरो का व्यवहार कथ्य तथा प्रभाव को सप्राण बना देते है–

पाणी पड़ियौ पेख पग, दिल मत हरख दिवाल ।
पैला पाड़ण पडत पग, इण री आहिज चाल ।।

रचनाकाल की सूचना कवि ने एक दोहे में इस प्रकार दी है–

अट्ठारा सौ अढंतरौ 1878 चैत बीज पख सांम ।
बाकै ग्रथ वणावियौ, नीत मंजरी नाम ।।

(6) सुपह छत्तीसी –

यह भी कविराज बांकीदास की दोहामय रचना है । इसमें 36 दोहे है जिनका वर्ण्य विषय सुभट है । सुभट श्रेणी के कवि ने युद्ध वीर और दानवीर दो भाग किये हैं । युद्धों की क्रीडास्थली

राजस्थान में योद्धा-समाज के प्रति सर्व साधारण तक में बड़ी श्रद्धा तथा पूजा की भावना रही है । राजस्थान के कवियो ने सती साध्वी नारियो और योद्धाओ के उत्सर्गमय कार्यों का अपनी ओजस्वी वाणी में अभिनन्दन किया है । इस कोटि के सहस्रों दोहे राजस्थानी समाज मे बहुत प्रचलित है । बांकीदास ने उसी प्राचीन परम्परा मे प्रचलित कवि धर्म का पालन करते हुए अपने पूर्वकालीन समरशूरों, धर्मधीरों और दान-वीरो पर दोहों के रूप में भाषा-सुमन समर्पित कर प्रथित वीरो की प्रशस्ति बखानी है । इसमें बांकीदास ने योद्धा के सहयोगी अस्त्र शस्त्रादि उपकरणो एव शास्त्र और वीर-धर्म को भी वर्णन में स्थान दिया है । रचना काव्य तथा इतिहास उभय पक्षों से मनोरंजक तथा ज्ञान-वर्द्धक है । हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान और सुलतान मुहम्मद गौरी के युद्ध प्रसंग का एक चमत्कार पूर्ण दोहा द्रष्टव्य है ।

सर विद्या इम सीखजै, जिम सीखी पीथल्ल ।
सर गौरीवै साझियौ, दीठ हीण दूझल्ल ।।

यहां सर द्वयर्थक है । यमकालंकार से वर्णन-कौशल में निखार आ गया है । कवि ने इस कृति का नामकरण छत्तीसी किया है, पर इस में 39 दोहे हैं–

सुपह छत्तीसी दूहड़ा, सुपहा तणा छतीस ।
सरल वणाया समझ चित, वांकै विसवावीस ।।

(7) वैसक वारता –

यह 59 दोहों की कृति है जिसमे वैश्या और वैश्यागामी दुष्कर्मियो की खुलकर खबर ली है । व्यभिचार तथा परनारी गमन को सामाजिक दोष मानकर इससे देश, समाज, जाति और कुल की अधोगति का कारण दिग्दर्शित किया है । मध्यकालीन भारतीय समाज में बहु पत्नी प्रथा, दासी-दास प्रथा, पासवान-उपपत्नी प्रथा तथा वैश्या प्रथा एक भयानक कलंक रहा है । वैश्यावृत्ति के कारण समाज के कुलीन और सम्पन्न अभिजात्य वशों की भयंकर दुर्दशा हुई है । इसी दोष के कारण विवाहिता सद् चरित्राओं को अपमान और यातनाएँ भी सहन करने के लिए विवश होना पड़ा । देश तथा समाज के लिए

कलंक स्वरूप ऐसे वैश्या-वल्लभो, वनिता-व्यभिचारियो, कामी करोडपतियो, अधोगामी अधिपतियों तथा सन्नारियों का सतीत्व हरण कर्त्ता दुराचारी समाज कंटको की "वैसक वारता" में खूब खाल खेची है । सामाजिक बुराइयों के प्रति सजग कवि ने व्यभिचार के दोषो का विशदता के साथ वर्णन कर मानव को सच्चरित्र तथा सन्मार्ग की ओर उन्मुख करने की प्रेरणा दी है । सुखदा और दुःखदा नारियो का भेद दिखाते हुए कवि ने दुःखदा नारी के लक्षण बताये हैं:—

साम्प्रत जाणी सोखता, चितली जाण चुडैल ।
हार गयो अछता हुवो, छतो थकौ ही छैल ।।

रचना का निर्माण काल नहीं दिया है ।

(8) मावड़िया मिजाज —

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है यह कृति मावड़िया मिजाजियो (स्त्रैण प्रकृति के मनुष्यो) को इंगित कर लिखी हुई है । अन्तःपुर में पालित, पोषित, शिक्षित, रक्षित और दिनरात नारियो के बीच बने रहने वाले व्यक्ति का स्वभाव, व्यवहार, क्रिया कलाप, वार्त्तालाप एव कार्यविधि मे स्त्रियो के तौर तरीके आ जाते है । ऐसे स्त्री सुलभ स्वभाव के व्यक्तियो को "राण्डुला, राण्डघटा, जनानियां तथा मावड़िया मिजाजी" अभिधान से सम्बोधित किया जाता है । कवि ने आकृति मे नर एव प्रकृति मे नारी पुरुषो को निदाढिया, बिना पयोधर वाम, पापड फोड़ कर गर्वित होने वाले, तथा दिन मे उल्लू की भाति घर रूपी कोटर मे दुबके पडे रहने वाले स्त्रियोचित आचरण वाले पुरुषो पर कसकर वचन-कशाघात किये है । मानव मिजाज के पारखी बांकीदास ने 88 दोहो की इस कृति में स्त्रैणो के लक्षणो का अनूठा वर्णन किया है । मावड़िया का एक शब्द चित्र देखिए—

मावड़ियौ वन माझलौ, सो नह जाय सिकार ।
डोला मिनखी सू डरै, मूसा ज्यू मुरदार ।।

इसमे मुहावरो की छटा भी रग बरसाती है । रचना काल की सूचना कवि ने नही दी है ।

(9) कृपण दर्पण —

कृपण दर्पण कविराजा बाकीदास कृत 45 दोहो की काव्य कृति

है । इस रचना में लेखक ने कृपण-वृत्ती मक्खी-चूसों की विविध प्रकार से मखौल उड़ायी है । धन की सार्थकता दान-पुण्य, परोपकार, सत्कार्यो मे व्यय तथा भोगने मे मानी है । दान-पुण्य की महिमा का गुणानुवाद प्रत्येक युग तथा प्रत्येक धर्म एव आस्था मे विश्वास रखने वाले लोगो ने किया है । धन की दान, भोग और विनाश तीन गति मानी है । इनमें भी दान को सर्वोत्तम स्थान दिया है—

दान भोग अरु नास है, यह धन की गति तीन ।
वह धन होय विनास, जो देवै नहिं खाय नहिं ।।

धन का अन्ततोगत्वा नाश अवश्यंभावी है । अतएव अभावग्रस्तों, बुभूक्षितो, गुणवानो, याचनार्थियों तथा पुण्य कार्यो में व्यय कर उदारचित्त व्यक्ति सुयश लाभकर सदैव स्मरणीय बने रहते हैं । कजूस लोग धन का संचय करके मर जाते है और द्रव्य ज्यो का त्यों पीछे पड़ा रह जाता है । ऐसे लोगों को ससार मृत्यु के साथ ही सदा सर्वदा के लिए भुला देता है ।

बांकीदास ने कृपण और नपुंसक को एक सदृश्य उपमित किया है । दोनो ही भोग से दूर भागते हैं । कृपणता को एक बड़े अवगुण की सज्ञा दी गई है । सूम की स्वभाव-वृत्ति एक दोहे में चित्रित है—

दियौ सबद सुणियौ दुसह, लागी तन मन लाय ।
सूम दियौ न करै सदन, परब दियाली पाय ।।

(10) मोह-मर्दन –

यह 39 स्फुट दोहों की रचना है । रचना के शीर्षक तथा वर्ण्य-विषय से अनुमान किया जा सकता है कि यह कवि के जीवन के सांध्यकाल के समीप की रचना है । अमूमन शांत भाव की ऐसी कृतियां लेखक जीवन के चतुर्थ चरण में ही लिखने के लिए प्रेरित होता है । इसमें निर्वैरता, जनमगल की भावना, संसार की अनित्यता, संसारिक-सुख-साधनों की क्षणभंगुरता, संसार के सम्बन्ध एवं सम्बन्धियो के स्वार्थपूर्ण रिश्ते-नाते, देह की उत्तरोत्तर दिन प्रतिदिन क्षण क्षण क्षीण होती शक्ति, ईश्वर नाम-स्मरण में रुचि, नाम की अमरता, सुकर्म की महत्ता और ज्ञान, ध्यान, उपासना आदि का कवि

ने प्रतिपादन किया है । कृति में सर्वत्र ज्ञान की भावोर्मिया तरंगित है । कृति में संस्कृत तथा अपभ्रंश भाषा के प्राचीन पदो के भाव भीयत्र तत्र झलकते है । समानता सूचक एक उदाहरण निम्न पक्तियो में देखा जा सकता है—

खग इण साकर खोर रै, सग न सागर गूण ।

सब दिन पूरै साइयां, चांच दई सौ चूंण ।। (बांकीदास)

बाकीदास ने सासारिक कार्यों मे आपाद मस्तक लिप्त धन लोभियो, माया मोह-ग्रस्तो को चेतावनी देते हुए, समता, जीव-दया, परहितता आदि भारतीय सनातन सिद्धान्तो तथा आदर्शों के परिपालन के लिए उत्साहित किया है । जीव-जगत की क्षणभगुरता पर सटीक ही कहा है—

रे थोड़ी ऊमर रही, काय न छोडै कूड़ ।

हिय अधा तू नाखू अब, धन्धा ऊपर धूड़ ।।

इस कृति के चिन्तन से ज्ञात होता है कि कविराज वृद्धावस्था में मास, मदिरा तथा तामसिक भोजन का त्याग कर ईश्वर-चिन्तन की ओर लग गये थे । रचना मे शान्तरस की सलिला पाप-पुण्यो के कूलों को स्पर्श करती बही है ।

(11) चुगल मुख चपेटिका —

यह वस्तुतः इधर से उधर करने वाले चुगद, चापलूस व्यक्तियों के चाटुकारितापूर्ण कुकृत्यों को उजागर करने वाले 52 दोहा छन्दो की पुस्तिका है । राज-समाज तथा बड़े घरानो के लोगो के कान लगकर कुछ क्षुद्र वृत्ति, हीन प्रकृति के लोग चापलूसी से बड़े बन जाते हैं । ऐसे व्यक्ति समय-असमय अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने स्वामी, समाज तथा राष्ट्र के हिताहित की उपेक्षा कर अपने चहेतों के कान मे फूंक मारते रहते हैं । बड़े लोगो मे आमतौर से मनुष्य की बहुत कम पहिचान होती है । वे कानों के कच्चे तथा चापलूसी पसन्द होते हैं । इससे व्यक्ति की अपकीर्त्ति और समाज का अहित ही होता है । राज, समाज तथा संस्था, सगठनो में कई बार चुगलों के कारण सज्जनों और समाज, स्वामी-सेवियों को अपमानित ही नहीं अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़ा है ।

समाज ऐसे कुत्सित-कर्मा दुष्ट जनों को गर्हित नामों से स्मरण करता है । बांकीदास ने चापलूस कोटि के पापसना, परद्रोहियों के मुख पर अपने इस काव्य से अच्छा प्रहार किया है । चुगलों के मुख को शौचालय और चुगली पूर्ण वाक्य को विष्टा उपमित करते हुए कहा है—

चुगली करतां चुगल रा, जुग होटडा जुडन्त ।
मल नांखण जाणै मिलै, दोय ठीकरा दन्त ।।

श्रोता के कान को ओडी (विष्टापात्र) और चुगली को विष्टा कहते हुए पुनः लिखा है—

मुख ओडी रै माहिलै, पर काचड़ा पुरीष ।
पटकै रोड़ी श्रवण पर, सै चडाल सरीष ।।

अन्त मे चुगल की सहज पहिचान देते हुए कवि ने निम्नलिखित दोहे के साथ इस कृति को समाप्त किया है—

अै दूहा मै आखिया, रसनीत रौ रहाड़ ।
सभा भरी मझ सांभलै, चिड़ै जिकौ हिज चाड ।।

(12) **वैस-वारता—**

कुल 77 दोहो की यह कृति वणिक-समाज को लक्ष्य कर लिखी हुई है । वैश्य वृत्ति को एक सामाजिक कुव्यवस्था के रूप मे निंद्य मानकर समाज को इस वृत्ति से जाग्रत किया गया है । कवि के अनुसार वैश्य समाज मे येन केन प्रकारेण धन-संचय की प्रवृत्ति पायी जाती है । धन ही वैश्य का सम्मान, धन ही उसकी प्रतिष्ठा और धन ही उसका मोक्ष है । कवि ने कृति के माध्यम से वित्त लोलुभ वणिकों की नाना प्रकार से भर्त्सना की है । कवि ने इसमे बड़ी बारीकी के साथ बनियों का *अध्ययन प्रस्तुत किया है । लगता है कि कवि के समय में ब्याज-बट्टे का व्यवसाय बहुत फैला हुआ* था और इस के कुप्रभाव से समाज बड़ा पीड़ित था । शोषण की इस प्रवृत्ति का शिकार स्वयं कविराज भी कभी हुए हों तो कोई *आश्चर्य नहीं है । यह प्रथा और व्यवसाय समूचे राजस्थान में फैला* हुआ था । बनियों का तोल-माप में गड़बड़ी करना, कम तोलकर देना, अधिक तोलकर वापस लेना, बढ़ा चढ़ाकर लिख लेना, प्रदत्त

राशि को जमा न कर समुचित और सही ढंग से हिसाब न रखना आदि कई निम्नस्तरीय तथा असत्य तरीको का इसमे उल्लेख किया गया है ।

वणिक्-समाज की कृत्रिम अथवा कायरता जन्य लड़ाई का बडा ही व्यगात्मक वर्णन किया है । एक रोचक उदाहरण देखिए—

कर कम चालै जीभ अत, सिर पाघड़ सिरकंत ।
विढ़ै बजारा बाणिया, मुख मूछा फरकंत ।।

वणिक्-समाज पर कविया करणीदान और कविया हिंगलाजदान रचित "बाणिया रासी भी हास्य रस की बडी सरस कृतिया है । वस्तुतः बाकीदास ने विवेचित कृति मे बाजार के बहादुरो का बड़ा यथार्थ तथा सजीव चित्राकन किया है ।

(13) कुकवि बत्तीसी —

कुकवि बत्तीसी मे कविराज ने भाषा, छन्द तथा अलकारो से अभिज्ञ तुकबाज ठोठ कवियों को कुकवि सम्बोधन प्रदान किया है । अपने पूर्ववर्त्ती ऐसे ठोठ काव्यकारों को धूर्त्त, कूट, छली, चालाक, कैतव और तस्कर बताकर उनकी पोल खोली है । इस श्रेणी के कवि कुकवि बत्तीसी के कवि की दृष्टि मे मरालो की मण्डली मे बक-समाज के तुल्य अशोभित होते है । बाकीदास की परिभाषा मे छन्द, अलकार, शब्दकोश, व्याकरण, लोक-व्यवहार, राजनीति, इतिहास और धर्मशास्त्रो का सुपठित अध्येता ही सत्कवि पद का अधिकारी है, अन्य कंठ, गलाबाज कवि तो सुन्दर शरीर मे विस्फोट व्रण की भाति काव्य रूपी काया को विद्रूप करने वाले बिषव्रण कवि है—

रूपक कूकवि रसण सू, बिगड़ै यू रसवंत ।
ज्यू विष फोटक रोग बस, वप सोभा बिगड़ंत ।।

यह कृति 39 दोहों की है और रचना 1871 श्रावण कृष्ण पक्ष 10वी तिथि की है

एकोतरै अठार सौ, सांवण दसमी स्याम ।
बुध धुर रची बतीसका, पोखण सुकवि तमाम ।।

(14) बिदुर बत्तीसी —

बत्तीसी संज्ञक इस रचना मे 37 दोहे है । इसमे दास-दासियों

की कुप्रथा एवं दास-वृत्ति के मनुष्यों का चरित्राख्यान है । दासी पुत्रों के लक्षण, स्वभाव, व्यवहार, आचरण, प्रभाव, रहन-सहन, तुनक-मिजाजी और उनकी संगति के लक्षणों, कुटेवों, और दोषों पर मनोवैज्ञानिक तरीके से चिन्तन कर प्रकाश डाला गया है । उनसे बचे रहने के लिए भी संकेत दिये गये हैं । ऐसे ओछे आचार विहीन मनुष्य चलते रस्ते चाहे जिस पर रुष्ट होकर उसका अहित कर सकते हैं । ये लोग बड़े अहंकारी, मिथ्याभिमानी, और ओढ़े हुए बडप्पन वाले होते हैं । रचना में उनके ईर्ष्यालुपन, कलह-प्रियता और बिगड़ैल आचरण आदि वर्णित हैं । लोकनीति के ज्ञान के लिए यह कृति पठनीय ही नहीं स्मरणीय भी है । कवि-वर्णन से स्पष्ट होता है कि समाज दासी-जादों तथा यतियों के दुराचरणों और प्रभाव से संत्रस्त था । राज्य-शासन पर ये लोग प्रभावी दखल रखते थे । रचना के अन्त का दोहा इस प्रकार है—

बिदर बतीसी बींदणी, जतीरास वर जास ।
व्याह थयौ वैसाख में, पूरण प्रेम प्रकास ।।

ऊपर के दोहे से यह भी संकेतित है कि कविराज ने बिदुर बत्तीसी की तरह ही यतियों के अनाचार का उद्घाटक "यतिरासा" भी लिखा था, पर वह अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है ।

(15) भुरजाल् भूषण —

प्राचीन संस्कृतादि काव्य-ग्रंथों में कोट-किलों के निर्माण और उनके इतिहास-वर्णन का पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है । दुर्गों की भारतीय साहित्य में आठ श्रेणियाँ वर्णित की गई है । दुर्गों की सामरिक तथा रक्षात्मक महत्ता रही है । राजस्थान में दुर्गों तथा किलों का एक वितान-सा तना हुआ है । आडाबला गिरिमाला शृंखला के शिखर शृंगों तथा भूमि भाग पर निर्मित छोटे बड़े सहस्त्रों किले अतीतकाल की गौरवगाथाएं समेटे हुए तपस्वी के समान आज भी मौन खड़े हैं । राजस्थानी काव्यकारों ने दुर्गों की सुदृढ़ता, दुर्जेयता, दुर्गमता इत्यादि को लक्ष्य कर सहस्रों दोहे, सोरठे, कवित्त लिखे है । मध्यकालीन युद्ध-प्रणाली में किलों की उपयोगिता सर्वमान्य थी । राजस्थानी काव्य में राजस्थान स्थित प्रत्येक किले से सम्बन्धित

काव्य पंक्तियॉ प्राप्त हो सकती है । भारतीय समाज के लिए तीर्थ-स्वरूप चित्तौड़ दुर्ग का महात्म्य बाकीदास के पूर्ववत्ती डूगरसी रतनू ने भी अपने दोहे छन्दों मे वर्णित किया है । उसी वन्दनीय भाव-शैली मे बाकीदास ने चित्तौड़ की गौरव गरिमा का उद्धाटन करने वाले 70 दोहो की कृति का नामकरण "भुरजाल भूषण" किया है ।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास मे चित्तौड़ दुर्ग का भारतीय स्वातन्त्र्य के प्रहरी के रूप में स्मरण हुआ है । यह जौहर और साको की पुण्यस्थली तथा शौर्य कथाओ की तीर्थस्थली रही है । बांकीदास स्वतन्त्रता का प्रबल उपासक तथा अभिभाषक था । बांकीदास के काल में भरतपुर के किले पर मरहठों और अग्रेजो के मध्य लोमहर्षक लोहा टकराया था । जाट नरेश रणजीतसिह भरतपुर के तत्कालीन शासक और मरहठा नृपति यशवतराव होलकर इन्दौर ने अपने समवेत सैन्य बल से अग्रेजो का मुकाबिला किया था । सम्भव है "भुरजाल़ भूषण" काव्य की प्रेरणा उक्त युद्ध ने ही कवि को दी हो । भुरजाल़ भूषण मे मुगल-मेवाड़ सग्राम के शूरवीर सेनानायक वीरवर जयमल्ल राठौड़, ईश्वरदास राठौड़, रावत पत्ता चूंडावत, रावत साईदास, ठाकुर भीम डोडिया तथा सम्राट अकबर, नवाब आसफखांन, रावत दुर्गभानु चद्रावत आदि की दर्पोक्तियों, वीरोक्तियों का बडा ही ओजमयी शब्दावली मे व्याख्यान है ।

भुरजाल़ भूषण साहित्य जगत मे बड़ी चर्चित कृति रही है । इसकी लोकप्रियता से प्रभावित होकर बांकीदास के ही एक सम्बन्धी पाबूदान आसिया ने भुरजाल़ भूषण की अनुकृति पर भाखर भूषण काव्य की सर्जना की । भाखर भूषण में अर्बुदाचल का दोहो में वर्णन है । वर्णन बडा ही यथार्थ और काव्योचित्त है । कई स्थलो पर तो बडी अछूती उपमाओं का प्रयोग है, जैसे एक स्थल पर मेघ घटा में कौधती विद्युत की चमक में गिरि शिखर भगवा वेशधारी सन्यासी की भ्राति दे जाते हैं—

मुल़कै काल़ै जल़द मझ, तड़त घटा मझ तेम ।
पल़कै शिखर पहाड़ रै, जोगी भगवां जेम ।।

भुरजाल भूषण की रचना की समय सूचना कवि ने नही दी है । कृति का अन्तिम दोहा उद्धृत है–

गुण भूषण भुरजाल रौ, जस मै दुत जागंत ।
बांकीदास वणावियौ, बांचै नर बुधवत ।।"

(16) गंगालहरी –

पतित-पावनी गंगा भारतीय समाज में परम पवित्र और मुक्ति दायिनी मानी जाती है । उसके अनंत उपकारो के प्रति शतियो से हिन्दू समाज मे अनंत आस्था प्रचलित है । गगा-सलिल की पवित्रता, उसकी निर्मलता, और उसके प्रति अनन्य भक्ति का भारतीय कवि समाज ने भक्ति विनीत होकर कीर्त्तन किया है । संस्कृत के आदि कवि बाल्मीकि, महाकवि कालीदास, महाकवि जगन्नाथ, आद्य शंकराचार्य जैसी महान् विभूतियों से लेकर भाषा के कवि ग्वाल, पद्माकर, रत्नाकर तक अनेक कवियो ने गगा का स्तवन कर अपने को धन्य कहा है । राजस्थानी कवियों मे मध्यकाल के प्रसिद्ध भक्त कवि महाराज पृथ्वीराज राठौड़ बीकानेर ने "भागीरथी रा दूहा" शीर्षक से 88 दोहों सोरठो में गंगा का महात्म्य बताया है । इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए बाकीदास ने बडे ही प्रभावशाली ढंग और प्रवाहपूर्ण भाषा में गगालहरी की रचना की है । इसमे कुल 44 छन्द हैं । स्पष्टतः कविराज बांकीदास इस रचना में अपने पूर्वकालीन कवि के वर्ण्य-प्रभाव से अप्रभावित नही रहे है ।

रचनाकाल की सूचना नहीं दी गई है । बानगी के रूप मे अधोलिखित दोहा दृष्टव्य है–

मदायण तो माग, पग देतां पुरखां तणा ।
भूतल जागै भाग, अघ भागै खिण एक मे ।।

(17) जेहल जस जड़ाव –

इस कृति मे कच्छ भुज (गुर्जर प्रदेश) के दानवीर राजकुमार जैसा (जयशाह या जयसिंह) की उदारता का 84 दोहों मे वर्णन किया है । राजकुमार जयसिंह यादव कुल की जाडेचा शाखा में जन्मा था । उसके पिता का नाम भारा (भारमल्ल) था वह मुगल बादशाह अकबर तथा उसके उत्तराधिकारी जहागीर का समसामयिक था ।

अबुल फज़ल ने अकबर की गुजरात यात्रा में राव भारमल्ल की उससे भेट का उल्लेख किया है । जयसिंह के पूर्व पुरुषों मे राव लाखा (लक्षराज) फूलाणी तथा राव ऊनड़ जाम की भी भारतीय श्रेष्ठ दातारो मे गणना की जाती है ।

जयसिह काव्य रसिक, कला रंजक, उदार स्वभाव, कीर्ति प्रेमी और मनमौजी मिजाज का व्यक्ति था । उदारता की वजह से उसकी दान-कीर्ति की कहानियाँ जीवनकाल मे ही प्रातीय सीमाओ का अतिक्रमण कर पड़ौसी प्रान्तों में फैल गई थी । राजा कर्ण, राजा भोज, राजा विक्रमादित्य, राजा शिवि, राव लाखा और जाम ऊनड़ की वदान्यता की तरह ही जयसिह की प्रसिद्धि कवि वाणी पर चलती थी । "जेहल जस जड़ाव" मे बांकीदास ने उसकी लोकप्रसिद्धि को काव्य बद्ध किया है । उसके दोहे इतने लोकप्रिय हो चले थे कि राजस्थानी शासक-समाज तथा दरबारी लोक में कहावतो तथा दृष्टान्तो के रूप मे जन-कण्ठो पर रमते थे । जैसा (जयसिह) अतिथियो, कविगणो, और याचकों का पलक पांवड़े बिछा कर स्वागत सत्कार करता था । वह कविराजाओ को हाथी, घोड़े, आभूषण, द्रव्य और वस्त्रादि समर्पित कर हर्षित होता था । उसकी वदान्यता की प्रसिद्धि तथा कीर्ति सम्बन्धी तीन दोहे उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

खून करै खट बरण पिण, कुंवर करै नह क्रोध ।
भाराणी क्रन भोज ज्यूं, पायौ अचल प्रबोध ।।
देस देस लाखा दुवा, जस थारौ जेहल्ल ।
जावै पण जाणै नहीं, अेह अच्छेरा गल्ल ।।
जवहर जेहलियाह, तैंन किया घोड़ां तणा ।।
दिल सुध दान दियाह, काठी घाटी कवियणं ।।

जेहल जस जड़ाव की वर्णन शैली का अनुसरण कर बाकीदास के छोटे भाई बुधसेन के पौत्त पाबूदान ने "जेखल जस जड़ाव" नाम से सूअर के पराक्रम और निर्भीकता का वर्णन किया है ।

(18) कायर बावनी –

बावनी बोधक यह 54 दोहों की रचना है । "मावड़िया मिजाज" "वीर विनोद" तथा " सुपह छत्तीसी" रचने के बाद "कायर बावनी"

की रचना से ऐसा मालूम होता है कि कायरों के इतने वर्णन से कवि को सन्तोष नहीं हुआ और उसे उसी विषय पर "कायर बावनी" की और रचना करनी पड़ी । इसमें पुरुषो, स्वामिद्रोहियो, पथभ्रष्ट पतितों, कुत्सितकर्मा कुटिलो, छलियों, चमचागीरी करने वालों तथा निकृष्ट मति मनुष्यो का चरित्र चित्रण किया है । निजी लोभ वश· नीच लोग बुरे से बुरे दुष्कर्म करने मे भी लज्जा का अनुभव नहीं करते । ऐसे लोग समय आने पर न्याय-अन्याय, नीति-अनीति तथा पक्ष-विपक्ष का विचार किये बिना चाहे जिधर लुढ़क जाते हैं । स्वार्थवश वे अपने स्वामी तथा अनन्त हितैषी तक का अनिष्ट करने से नही चूकते हैं । इसी पंक्ति के लोभ-लिप्त, किंपुरुषों, वचन-वीरो तथा कर्त्तव्य-कायरों पर कविराज ने तीखे वचन-बाणो की बौछारें की हैं । विशेषकर राजपुरुषो तथा कुलीन पुरुषो को उनसे सतर्क रहने के लिए चेताया गया है । कृपण के धन और किंपुरुष की कृपाण किसी भी समय कोशं (खजाना तथा म्यान) से बाहर नही निकलती । यहा श्लेषालंकार मे कोश शब्द का अर्थ द्वयर्थक है–

अदतां केरी अत्थ ज्यू, कायर री किरमाल़ ।
कोड़ प्रकारां कोस सूं, नह पावै नीकाल़ ।।

कायर और वीर के स्नान की तुलना एक दोहो मे व्यक्त हुई है–

मजन करै रुधीर मनु, सूरा सारा धार ।
कायरड़ा मजन करै, आसू धार मझार ।।

कवि ने कृति का प्रयणन काल एक दोहे मे वि. स. 1871 श्रावण शुक्ला द्वितीया घोषित किया हैं–

अेकोतरै अठार सै, श्रावण दुतियक स्वेत ।
वाके ग्रन्थ वणवियौ, कायर कुजस निकेत ।।

(19) झमाल राधिका नखसिख वर्णन –

यह "झमाल" नामक गीत छन्द में रचित कुल 27 छन्दो की श्रृंगारिक सुन्दर रचना है । इसमें कवि ने उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षाओ का प्रयोग कर श्रीकृष्ण प्रिया राधिकाजी का आलंकारिक नखशिख वर्णन किया है । श्रृंगार-रस से ओतप्रोत इस सरस कृति में लेखक

ने मर्यादित तथा संतुलित रूप मे नख-शिख का वर्णन करते हुए श्रद्धा, आस्था और भक्ति का वर्णन किया है । लौकिक काम्य अथवा सासारिक विषय-वासनाओं के विकृतिपूर्ण वर्णन को इसमें पास तक नहीं फटकने दिया है । सर्वत्र लौकिक मर्यादा का रक्षण कवि की वर्णन-निपुणता को प्रकट करता है । रीतिकालीन कवियों की सी अश्लीलता के लिए जरा भी गुजायश इसमें नही है । कहीं कही तो वर्णन बड़ा ही चित्ताकर्षक तथा भव्य बन गया है । राधा रानी की भौंहो तथा सुन्दर लोचनों की छवि के वर्णन की छटायुक्त पंक्तियाँ देखने योग्य हैं–

काली भँवराली कली, भूंहा वाकड़ियांह ।
कमल-प्रभात विकासिया, इसडी आखड़ियाह ।।

कृति का नाम-निर्देशन अन्तिम दो पक्तियो मे इस प्रकार किया है–

आणे यति अनुसार, उकत्ती अंकड़ा ।
बाकै कही झमाल, बिहारी बकडा ।।

(20) सुजस छत्तीसी –

यह कृत्ति भी रूप विधान, भाव-प्रवणता तथा शैली आदि में दातार बावनी का अनुसरण करती है । इसमें कुल 38 दोहे है । कवि ने अपनी सुपह छत्तीसी, दातार बावनी आदि पूर्व उल्लेखित रचनाओ की तरह वीरता, त्याग आदि विषयो का पनरावर्त्तन किया है । यशधनी, उदार-स्वभाव, वीरोचित प्रकृति और अकृपण मानवों के उच्चादर्शो तथा ख्याति-लब्ध उदारमना सत्पुरुषों की यशःकीर्त्ति का लोक-प्रसिद्धि के आधार पर बखान किया है । यह प्रशस्ति-परक रचना है । रचना के उदाहरण का एक दोहा बानगी हेतु देखिए–

सदा करै सनमान, मीठा बोलै हंस मिलै ।
दियै धरा धन दान, जस खाटै ठाकर जिकै ।

(21) सन्तोष बावनी –

यह बावनी सज्ञक 55 दोहों-सोरठों की मुक्तक समूह की कृति है । कृतिकार ने इसमें संतोष, निर्लोभ, सहनशीलता, परोपकार-परायणता, धीरज, शान्ति, भगवदाराधन आदि मानवीय उच्च गुणों की प्रशंसा तथा समाज की काया के लिए घावतुल्य लोभ, लालच,

स्वार्थ, अनीति, अधर्म और असन्तोष जैसे अवगुणो की निन्दा की है । इस प्रकार लोकधर्म और जन-जीवन में सन्तोष का महात्म्य निर्देश किया है । समाज-सुधार और सामाजिक अभ्युदय की आधार भित्ति के रूप में सन्तोष बावनी मे कतिपय ललित वाक्य-सूत्र गुंथे हैं । इससे कवि के लोक-सम्पर्क का भी पता चलता है । लोक के प्रति उसके चिन्तन की साक्षी की यह कृति हाँ भरती है । वस्तुतः यह मनुष्य को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने की पावन भावना से लिखी जान पड़ती है । ईश्वरीय शक्ति मे असीम आस्था एव धैर्य-बल का प्रतिपादक यह दोहा बड़ा सारगर्भित बन पडा है—

सबर राख कुसमै समै, कासूं धबर करीस ।
खिण खिण लै जग ची खबर, जबर सगत जगदीस ।।

सभी संतों, सत्पुरुषो तथा नीतिकारो ने सुखी जीवन के लिए सन्तोष को प्रथम स्थान दिया है । लोक नीति में भी "सतोषी सदा सुखी तथा लोभ गलौ कटावै" आदि कहावती पद्याश इसी तथ्य को उद्घटित करते हैं । बाकीदास ने इस लोक विश्वास को इस प्रकार दुहराया है—

ज्यारै खाख बिछावणौ, ओढ़ण नू आकास ।
ब्रह्म पोख सतोख वित, पूरण सुख त्यां पास ।।

कवि ने रचना काल का निर्देश इस प्रकार किया है—

अट्ठारासै अठतरै, मौजी फागण मास ।
सुद तेरस सतोख गुण, बरणै बाकीदास ।।

(22) सिधराव छत्तीसी –

कविवर ने राजस्थान के सीमावर्ती गुजरात प्रदेश की अनहिलवाड़ा पाटन रियासत के अद्वितीय वीर तथा महान् उदार सिद्धराज जयसिह की लोक प्रथित प्रशस्ति को उक्त कृति मे निबद्ध किया है । राजस्थानी समाज में राजा सिद्धराज जयसिंह की चरित्र-कथा तथा साहस और अद्भुत दान की आख्यायिकाएँ बहुचर्चित तथा लोक रुचिकारक रही हैं । वह एक राजा ही नहीं बल्कि लोकनायक भी था । उसका जन्म क्षत्रियों के सोलंकी कुल मे हुआ था ।

कवि ने इस छत्तीसी में सिद्धराज जयसिंह के कोंकण, देवगिरि,

केरल आदि देशों या प्रान्तों पर सैनिक अभियानों का उल्लेख किया है । वर्णन का मुख्य स्वर चरित नायक की वदान्यता तथा युद्ध वीरता है । वीर और उदार हृदय व्यक्ति ही समाज मे प्रशंसित होते हैं और उनका ही कवि एवं गायक वन्दन कर लोकानुरंजन करते है । कविराज ने काव्य-नायक के प्रति लोक-श्रद्धा को शब्दों मे बाँध कर अपनी वाणी को सफल बनाया है । मरण-धर्मा प्राणी की कीर्ति ही संसार मे सदा अमर रहती है । ऐसी रचनाएँ मानव को परोपकार और कर्त्तव्य-बोध का सन्देश देती है । कुछ दोहो का रसास्वादन कीजिए—

पोगर दांतूसल़ धकै, डाल़ बचै नह डंड ।
कुजर चाल़क रा करै, खंड खंड श्रीखंड ।।
सोमेश्वर अवतार सुण, सोलकी सिधराव ।
कही छतीसी वंक कवि, जिण रै अरथ जड़ाव ।।
जेथ मलै़तर मेखचा, गडै मलै़तर मेख ।
जलै़ मलै़तर ईंधणा, दल़ चाल़क रौ देख ।।
अनमी कंध नमाविया, नाणा भरै नरेस ।
जीतौ तूं जैसिधदे, दिखण तणा सौ देस ।।
यह 39 दोहो में समाप्त हुई है ।

(23) वचन विवेक पच्चीसी —

वचन विवेक पच्चीसी नाम की इस रचना का विषय विवेक, वचन-व्यवहार और संभाषण कला है । अप्रिय, अशिष्ट, अश्लील एव गाली-गलौज की शब्दावली के कुफल व हानियाँ तथा सभ्य, मधुर, हितकारी, शुभ तथा सविवेक परचित्त को प्रसन्न करने वाले वचनों के प्रयोग पर कवि ने काफी जोर दिया है । इसमें राजस्थानी जन-जीवन तथा लोक-व्यवहार में व्यवहुत अनेक सूक्तियां शोभित हैं । लेखक ने अपने जीवन के लम्बे समय में प्राप्त अनुभवो का मधुर पेय इस कृति मे उंडेल दिया है । कतिपय दोहे तो अनुभव सूत्र के रूप में परिलक्षित होते हैं— गरल़ बराबर गाल़, गाल़ न ऊठै गूमड़ी, कुवचन मुख कहणौ नहीं, सुवचन कहणौ सूद्ध, जग में नर हल़का जिकै, हल़का बोलै बोल, इत्यादि । शत्रुता, मित्रता,

प्रेम-प्रीति आदि के लिए वचन का विवेक, वाणी का संयम और व्यवहार में सावधानी अत्यावश्यक है । कुवचन मित्र को शत्रु और सुवचन शत्रु को मित्र में परिवर्त्तित कर देता है । जिह्वा द्वारा हितकर वचन बोलने से गांठ का कुछ नहीं जाता है । वचन से ही किसी का भला होता हो तो सुवचन बोलना चाहिए—

पारख कीधी पंडितां, सरब मिलै संतांह ।
ज्यारै जीभ भलाइयां, त्यारै भाग भलांह ।।

स्नेह-सरोवर की सीमा में अपशब्द तत्काल छिद्र कर देता है । सज्जन लोग स्नेह शब्दों से मित्र बनाते और दुर्जन लोग गाली गलौच देकर प्रेम-पयोधि की पाज को फोड़ डालते हैं—

सज्जन बांधै पाल़ सिर, सीसा छकिया गाल़ ।
दुरजण फोड़ै गाल़ दै, प्रीत सरोवर पाल़ ।।

प्रीति के लिए अप्रिय वचन अग्नि-स्फुलिंग तुल्य हैं । परन्तु दुर्मति नीच स्वभाव के लोग अपनी हीन प्रकृति के कारण लाचार होते हैं । नाग के मुख से विष फेन ही निकलेगा । इसी तरह दुष्टजन के मुंह से तो अपशब्द ही निकलेंगे—

बांका बिखं फल़ नीपजै, ज्यूं विखं तर री डाल़ ।
यूं दुरजण री जीभड़ी, रेकारौ कै गाल़ ।।

(24) कृपण पच्चीसी —

कृपण-दर्पण के पश्चात् कविराज की इसी विषय (कृपणता) से सम्बद्ध कृपण पच्चीसी नामक यह दूसरी कृति है । इसमे 29 दोहे हैं । लगता है कि कृपण-दर्पण की रचना से कवि को सतोष नहीं हुआ और उसी विषय पर कृपण पच्चीसी जैसी नयी रचना का सर्जन करना पड़ा । दोनों ही कृतियों में रूप-साम्य, विषय-साम्य और विचार की समानता है । सूमों, लुब्धकों तथा संचयी-वृत्ति के मनुष्यों का अपयश और असंग्रही, अपरिग्रही, और दानियो का आशंसन प्रशंसन वर्णन का खास मुद्दा रहा है । इस रचना पर कविराज बांकीदास के पूर्ववर्त्ती भक्त कवि ईश्वरदास बारहठ, संत कबीरदास आदि कवियों की रचनाओं का गहरा प्रभाव जान पड़ता है । कतिपय उदाहरण मिलाइये—

देव किसी उपमा दिवां, तैं सरज्या सह कोय ।
तूझ सरीखौ तुहिज तूं, अवर न दूजौ कोय ।।
ईश्वरदास बारहठ

दरब किसी उपमा दियां, तो सूं है सह कोय ।
तो सारीखौ तुंहिज तूं, अवर न दूजौ कोय ।।
बांकीदास आसिया

एक अन्य उदाहरण में कबीरदास और बांकीदास के दोहों में तुल्यता इस प्रकार प्रकटित हुई है—

कबीरा का घर चौवटे, गल़ कट्टू के पास ।
करणी जासी आपकी, क्या बेटा क्या बाप ।
संत कबीरदास

पापी पाप न कीजियै, न्यारा रहियै आप ।
करणी आपौ आप री, कुंण बेटौ कुंण बाप ।।

इसी प्रकार कही कहीं नरहरिदास बारहठ के अवतार चरित और भक्त पीपा की वाणी से भी बाकीदास प्रभावित हुए प्रतीत होते हैं । पर, इससे यह नहीं मान लेना चाहिए कि इसमे कवि का मौलिक कुछ है ही नही । अनेक दोहों में कवि का मौलिक चिंतन, भावाभिव्यक्ति की सरसता तथा अर्थ-वैभव पाठक को आनन्द-विभोर किये बिना नहीं रहते । सर्प तथा सूम की समता का वर्णन बड़ा सही और सटीक बन पड़ा है । दोनों की गुणागुण ग्राहृय शक्ति का भी यह दोहा सुन्दर उदाहरण है—

रीझै विखधर राग सूं, किया न जिण रै कान ।
कान किया क्यों क्रपण रै, सुणैं न क्योंही ग्यान ।।

कृपण की चित्त वृत्ति पर नीचे लिखे दोहे में सबल तथा सार्थक प्रहार किया है—

लुल़ डाल़ी तर लोभ रै, झूले रहिया झूल ।
देणौ दान कबूल नह, क्रपणां मरण कबूल ।।

(25) हमरोट छत्तीसी —

सिंध प्रांत (अब पाकिस्तान) के अमरकोट राज्य का शासक राणा हम्मीर परमार बड़ा उदार हुआ । उसने अपने जीवनकाल में चारण,

भाट एवं राव जाति के कवियों, विद्वानों तथा याचकों को हाथी, घोड़े, वस्त्र तथा नकद रुपये दानकर बड़ा नाम कमाया । बाकीदास ने अपने दोहों मे उपर्युक्त तथ्य को दुहराते हुए कहा है—

जस दिस दिस ओपी जिकां, लोपी नह कुल लाज ।
दिया हजारा एक दिन, धाट तणा धजराज ।।

हमरोट छत्तीस में कवि ने राणा हम्मीर की दान-प्रशंसा के साथ साथ अमरकोट की प्राकृतिक स्थिति, प्रकृति-सुषमा, दुर्ग की सुदृढ़ता, हम्मीर के वंशजो की वदान्यता, वहां की सुन्दरियों का सौन्दर्य और मुगल बादशाह अकबर की जन्मस्थली होने के गौरव आदि का वर्णन किया है । अमरकोट की सोढी राजकुमारियो का अप्रतिम सौन्दर्य राजस्थान मे पूगल की पद्मिनियो की भांति चर्चित रहा है । लोक देवता पाबू राठौड की भार्या सती सोढी अमरकोट के राणा की ही राजकन्या थी । सौन्दर्य तथा लावण्य मे अनुपम अमरकोट की ललनाओ का रूप-सौन्दर्य पढिये—

एके पदमण वासतै, सींघल गयौ रतन्न ।
ऊमरकोट ना आवियौ, मतो कियौ की मन्न ।।
आखड़ियां अणियालिया, काजल रेख कियांह ।
बीभलिया भावंदियां, लाज सनेह लियांह ।।
झखां खंजरीटां म्रगा, सबर हतक सराह ।
जैतवार ज्यारा नयण, सरोरुहां सुथरांह ।।

कवि ने 40 दोहो की इस रचना का नामकरण हमरोट छत्तीसी किया है । हमरोट का तत्सम रूप हम्मीरकोट (हम्मीर का दुर्ग) है । ऊमरकोट की तत्सामयिक स्थिति, वैभव आदि के अध्ययन के लिए यह कृति सहायक सिद्ध हो सकती है । कवि के संरक्षक महाराजा मानसिंह के तेरह महारानियां थीं । इससे अनुमान किया जा सकता है कि बांकीदास सोढो के विषय में बहुत कुछ जान सुन चुका होगा ।

इतना सब वर्णन करने के बाद अब कवि की अज्ञात, कम ज्ञात, अचर्चित और अप्रकाशित कृतियों पर विचार किया जा रहा है । बांकीदास ने दीधार्यु होते हुए तथा महाराजा मानसिंह का संरक्षण

प्राप्त करके भी कोई बड़ा प्रबन्ध काव्य अथवा महाकाव्य नहीं लिखा जिसके लिए बाकीदास जैसी प्रतिभा से सहज अपेक्षा की जा सकती थी । उसके सामने अपने पूर्ववर्ती केशवदास गाडण, करणीदान कविया, वीरभानु रतनू आदि का उदाहरण भी था । पर, उससे ऐसा कुछ नहीं बन पड़ा ।

(26) मान जसो मंडण –

मान जसो मडण अथवा मान जयो मंडन कविराजा की अद्यावधि प्राप्त ग्रन्थों में सबसे बडी रचना है । इसमें 232 दोहे-सोरठे है । इसमें कवि ने अपने संरक्षक महाराजा मानसिंह की वीरता, वदान्यता, विद्या-प्रेम, कवि के प्रति अनुग्रह, उनकी नाथ-भक्ति, सकट काल मे धैर्य, इष्टदेव की आराधना व अनन्य आस्था, अपने विपत्तिकालीन साथी सहयोगी व्यक्तियो तथा सामंतो के प्रति महाराजा की कृतज्ञता, मरहठो की सहायता, शरणागत रक्षा, अग्रेजो की रीति-नीति की आलोचना तथा विरोध आदि विविध सम सामयिक घटना-चक्रों एव प्रसगो पर समय-समय पर रचित स्फुट छन्दो का संकलन है । यह दीर्घकालीन-सर्जन का संग्रह ग्रन्थ है । कवि ने अपने पोषक महाराजा मानसिंह की कृपाओ का अनेक प्रकार से अनेक छन्दों में प्रशस्ति-वर्णन किया है । अंग्रेजो और मरहठों तथा महाराजा आदि के तात्कालिक सम्बन्धो के लिए यह कृति कुछ सूचनाएँ देती है । रजवाड़ो के इन देशीय तथा परदेशीय विरोधियो के प्रति महाराजा के दृष्टिकोण का भी यह पुस्तक अप्रत्यक्ष निर्देशन करती है । मानसिह और अग्रेजो के सम्बन्ध का निम्नलिखित दोहा एक प्रमाण है–

पेसकसी दीधी प्रगट, सारां कीधी संध ।
फांटौ नहीं फिरंग रौ, कांटो सबल़ कमंध ।।

मरहठों ने राजस्थान को लगभग एक शताब्दी तक लूटा-खसोटा था । राजस्थान के शासक और प्रजा उन्हें "दिखणी गनीम" कहकर अपना कट्टर शत्रु मानती थी, पर जब अंग्रेजो ने भारतवर्ष को हथियाने की योजना बनायी तो महाराजा मानसिह के रूप में राजस्थानी समाज ने मरहठो के प्रति अपना आक्रोश और वैर विरोध भुलाकर उनको शरण दी, और उनकी सहायता की । मानसिंह की

यह राजनीतिक दूरन्देशी मान जसो मण्डण में अनेकशः व्याख्यायित हुई है—

किंग इन्द्रजिम कोपियौ, जसवंतौ मैणाक ।
सरण राखियौ समंद ज्यूं, पह मानै दिलपाक ।।
दिखण प्रभंजण सुख दियण, वण घण सुमन विकास ।
जसवंत हरौ जसवंत जिम, वरणै बांकीदास ।।

इन्दौर के स्वाधीनता प्रेमी तथा अंग्रेज-विद्रोही महाराजा जसवंतराव होलकर की महाराजा मानसिंह ने जो सहायता की थी, वह उपरोक्त दोहों में मुखरित है ।

बांकीदास, मानसिंह की अनुकम्पाओं को बारम्बार मान जसो मंडण में दुहराता है । वस्तुत— यह मानसिंह के प्रति कवि की अपार कृतज्ञताओं का एक दोहा-कोष कहा जा सकता है । आश्रयदाता के प्रति अनुराग तथा आभार प्रकट करते हुए कहा गया है—

पात तणौ क्रम पांन, आडौ दिन हूंतौ इतां ।
मिलतां भूपत मान, हिवै आज अलगौ हुवौ ।।
पारस सूरत पौरसौ, चिंतामण री चाह ।
रही नही त्रौ रीझियां, मान मूझ मन मांह ।।
बात उबारण वडम ची, जाहर जसरथ जूप ।
श्रीमुख कहियौ सुकवि नूं, भाषागुर तैं भूप ।।
दरब कुरब इलकाब दै, दै गज सासण दान ।
तैं वायक पातां तणा, मुंहगा कीधा मान ।।

मानसिंह सही रूप में कवि-पक्षियों के लिए कल्पतरु था । उसका आश्रय प्राप्त कर सूर्यमल्ल मीस्सण के दादा बदन मीस्सण ने "रस गुलजार, महादान मेहडू, ने "मान प्रकास" तथा अन्य अनेक कवियों ने ग्रन्थ रचनाएं की । मान जसो मंडण उन सबमें उत्तम कोटि का तथा विषय वैविध्य लिये हुए है । मानसिंह कालीन राजस्थान के राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तनों, परिस्थितियों आदि का बदलाव और प्रभाव इत्यादि के अध्ययन के लिए इसमें काफी संकेत-सूत्र हैं । दरबारी संस्कृति के तत्व तो इस कृति में पद पद पर परिलक्षित मिलते हैं ।

(27) कविमत मंडण –

यह राजस्थानी भाषा मे लिखित काव्य शास्त्र का लक्षण ग्रथ है । इसमें काव्यादि के गुण-दोषो का विवेचन किया गया है । कवि मतानुसार राजस्थानी भाषा में अपनी श्रेणी का यह प्रथम ग्रथ है, पर यह कथन सही नहीं माना जा सकता । इस विषय पर नागराज पिंगल, पिंगल शिरोमणि, रघुवर जस-प्रकास, कविकुल बोध, रघुनाथ रूपक आदि एक दर्जन ग्रन्थ उपलब्ध हैं । इस मे लेखक ने पहले काव्य दोषो का विवेचन किया है और तदनुपरात काव्य-गुणों का आलेखन किया है । ग्रन्थ-लेखन का प्रयोजन निर्देशित करते हुए लिखा है–

कवि समझै विण किम करै, दोष काव्य सू दूर ।
दूषण वक दिखावसी, जिणही काज जरूर ।।
भूषण ग्रंथन भाखियौ, प्रथम विनोद प्रकास ।
कीनौ दोषण ग्रन्थ कौ, दै चित्त बाकीदास ।।
किण हि न आ रचना करी, मारूभाषा माहि ।
कर हित रचना हूँ, करू, गुरु प्रसाद अवगाहि ।।
ऊधत भाषा औ अरथ, भाषा डीगल भाख ।
मारू भाषा मान जै, सो ई गीता साख ।।

कवि ने काव्य-दोषो का इस प्रकार वर्णन किया है–

कर धारण गत सस्कृत, जरु निररथक जाण ।
असमय जुत (जे) दोष औ, पद मे ही ज प्रमाण ।।

यह कृति अपूर्ण है । "कवि मत मडण" ग्रन्थ के सम्बन्ध मे बाकीदास के भ्रातृज मौड़दान आसिया ने अपने ग्रन्थ पाबू प्रकास के अन्त के छन्दो में निम्नलिखित सूचना दी है

वली बतीस छतीस या वडा बाप मो अक ।
तवू भाग जाडे तिके आखर आडे अक ।।
मालम धर बुधमाल रा आखर चारां ओड़ ।
ऊह दू पग चेला किया, रेणा कज राठौड़ ।।
कवराजा नरपत कियौ, मेधा पारख मांन ।
"कव मत मंडण" गुण कवि, बंधू वांकीदान ।।

इसके दो प्रकरण रहे होंगे जो प्रकाश में आये हैं ।

(29) वृत्त रत्नाकर –

बाकीदास ग्रंथावली भाग 3 में वृत्त रत्नाकर ग्रन्थ की सूचना दी गई है । यह ग्रन्थ अभी तक सम्पूर्ण रूप में प्राप्त नहीं हुआ है । प्राप्त अंश से विदित होता है कि इसमे छन्दो और अलकारो के लक्षण तथा उनकी व्याख्या दी गई है । ग्रन्थ की भाषा का नमूना अवलोक्य है–

" "घणा पदां रैं एकत्व पणौ करै सो समास-जथा-साक वल्लभ है जिण नै सो राजा साक वल्लभ राजा ओ समास । साक राजा मध्यम समास ।" " तदनन्तर लेखक ने गद्य में अलंकारों के दोषो का विवेचन किया है ।

(30) रस अलंकार –

इस सम्बोधन से बांकीदास ग्रन्थावली भाग 3 (नागरी प्रचारिणी सभा काशी का प्रकाशन) में 37 द्वालो का एक लम्बा गीत छापा गया है । गीत में कवि ने रस, उसके भेद और अलंकारो के गुण-दोषो का सामान्य रूप से वर्णन किया है । इसके प्रति भी यह सन्देह जगता है कि यह भी किसी लक्षण ग्रन्थ का ही खडाश हो, पर पर्याप्त जानकारी के बिना साधार कुछ भीं नहीं कहा जा सकता । उदाहरणार्थ गीत का एक दोहा उद्धृत है–

समासोस्ति अप्रस्तुती प्रसंसा, जुड़ै दोष पुनरुक्ति जठै ।
तुल्य विसेसण वस सूं तवजै, अति निरणय मति हूंत अठै ।।

इसी प्रकार इस ग्रन्थावली मे महाभारत छन्दोऽनुवाद, श्रीदरबारी कविता, कृष्णचन्द्र चद्रिका, विरह चन्द्रिका, चमत्कार चन्द्रिका, चन्द्र दूषण दर्पण और वैसाख वार्त्ता सग्रहादि का भी नामोल्लेख किया है । परन्तु, उक्त नाम वाले ग्रन्थ स्वय कविराज सग्रह में भी देखने को नहीं मिले है । महाभारत छंदानुवाद का डा. शक्तिदान कविया ने अपने एक लेख में उल्लेख किया है ।

बाकीदास री ख्यात –

यह कविराज बांकीदास लिखित गद्य की पुस्तक है, जिसका प्रो. नरोत्तमदास स्वामी ने सम्पादन किया है । इसका राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से प्रकाशन हो चुका है । इसमें कुल 2776

बातें हैं जो एक या दो पक्तियों की है । वास्तव में यह कुछ एक पक्तियों मे लिखित टिप्पणियां हैं, जिन्हें कविराजा ने समय समय पर पढ़कर अथवा सुनकर लिपिबद्ध किया था । इसमे राजस्थान के राजाओ, उनके जन्म, विवाह, सन्तान, ननिहालो एव जागीरदारो की वशावली, उनके जीवनकाल की विशेष घटनाए, राज दरबार के अन्य विशिष्ट व्यक्तियों, राजस्थान मे लड़े गए युद्धो, उनके परिणामों आदि का सूत्र रूप मे सकेत दिया हुआ है । वैसे यह कोई क्रमबद्ध ख्यात ग्रन्थ नही है लेकिन इसमे लगभग दो हजार व्यक्तियों, उनके रिश्तेदारों, उनके जन्म, विवाह, दान-पुण्य, भवन निर्माण, युद्धाभियान और मृत्यु आदि की जानकारी समावेशित की गई है । राजस्थान से सम्बन्धित अनेक घटना-प्रसगो, मुसलमान सेना नायको, मरहठा वीरों, चारणो व जैन-विद्वानो तथा इतर प्रातीय राज्यमान्य विशिष्ट पुरुषो के बारे मे भी कई एक ऐतिहासिक स्फुट सन्दर्भ प्राप्य हैं । प्रसिद्ध इतिहासकार महामहोपाध्याय डॉ. गौरीशकर हीराचन्द ओझा का यह मत सर्वथा सत्य है कि "ग्रन्थ क्या है इतिहास का खजाना है । राजपूताना के तमाम राज्यो के इतिहास-सम्बन्धी अनेक रत्न उसमे भरे पडे हैं" । कविराजा का यह ऐतिहासिक सकलन राजस्थान के इतिहास की तो अमूल्य सम्पदा है ही पर भाषा शास्त्रीय अध्ययन तथा सास्कृतिक इतिहास के लिए भी महत्त्व की है । ख्यात के दो उदाहरण दर्शनीय है—

1491— तीस हजार सिपाही ले पठाण भौडै (भडेच) चढ़ मुरतजाखां दिली सू खिलत ले ढूंढाड माथै आयौ, सीकर रै धणी सेखावत देवीसिंघ भाया नूं साथ ले खाटू जाय कजियौ कियौ रिख-पूनम रै दिन, तीन हजार दादू पथी काम आया । बलारां रौ धणी सेखावत हणवतसिंघ काम आयौ । देवीसिंह रा भुज रै तीर लागौ । मुरतजाखा भागौ । पठाण घणा माराणा । फौज लूटी गई । फतै सेखावत कीवी ।

2651— जैसलमेर परै मूमल री मेड़ी है - काक नै (काक नदी) ऊपर मूमल, सूमल, सहजां अै तीन वहना है ।

इस प्रकार इस गद्य-संग्रह मे क्षेत्रीय तथा सामाजिक इतिहास

की उपयोगी सामग्री संगृहीत है ।

थलवट बत्तीसी –

यह कुल 32 दोहा छन्दों में रचित कृति है । कृति का वर्ण्य-विषय मारवाड़ के रेतीले भूभाग थलवट अथवा थली (शेरगढ फलौधी) की भूमि और वहा के निवासियो की दयनीय तथा असस्कृत स्थिति का चित्रण है । थली के लोगो का जीवन-स्तर अत्यन्त ही पिछड़ापन लिये हुए रहा है । थलवट की दारुण दशा और पिछडेपन का मूल कारण वर्षा की कमी, पैदावार का अभाव और उद्योग-धन्धो के साधनो का नही होना है । इस भूभाग के निवासियो का आवास झोपड़े, कच्ची ईटों के छप्पर, छाछ-राबड़ी और बाजरे के खीच का भोजन, रहन-सहन मे सामान्य स्वच्छता, आचार-व्यवहार में अकुशलता, भेड़ बकरियो, गायो, भैसो और ऊटो के समूह का पालन और उनके दूध, घृत, चर्म, केश (ऊन) आदि की बिक्री द्वारा प्राप्त धन से निर्वाह करना पडता है । रेतीला भूभाग और जलाभाव के कारण पेड पौधो, वृक्षो इत्यादि का पूर्ण अभाव भी इस प्रान्त की दरिद्रता बढाने मे सहायक रहा है । कवि ने इस कृति मे थलवट-निवासियो की अभाव जन्य सकटग्रस्त तथा दयनीय दशा का बडा मार्मिक वर्णन किया है । उदाहरणार्थ कुछ पक्तियाँ विलोक्य है–

गाधी जेथ न संचरै, नही बजातां हट्ट ।
सभां नही कवि पिंडता, बुरौ देस थलवट्ट ।।
जीकारा बिण बोलणा, अर सिनान बिण अग ।
मारग सीतल छाह बिण, बिनो धोलहर ध्रग ।।
उमग जंवाई आवियां, कै दीवाली रात ।
थलियां घर दीवौ हुवै, बसुधा जाहर बात ।।
साल ठिकाणे झूपड़ा, भीत ठिकाणै बाड़ ।
बाग ठिकाणै फोग बन, लिखिया जिकां लिलाड़ ।।

थलवट बत्तीसी के अनुकरण पर डा. शक्तिदान कविया ने भी इसी सम्बोधन से 32 दोहे लिखे हैं जिनमें थल-प्रदेश की प्रशंसा की गई है । थली मे भी अब धीरे धीरे शिक्षा प्रसार के कारण लोगों का जीवन-स्तर सुधरने लगा है ।

दूहा जैतसी दूदावत मेड़तिया रा— ठाकुर जैतसिह मेवाड़ राज्य के इतिहास प्रसिद्ध ठिकाने बदनौर का स्वामी था । यह ठिकाना महाराणा उदयसिंह ने मेड़ता राज्य के पदच्युत स्वामी राव जयमल्ल मेड़तिया को प्रदान किया था । महाराणा भीमसंह के समय मे बदनौर का ठाकुर जैतसिंह था । वह अपने पूर्वज राव जयमल्ल, श्यामलदास आदि की भाँति ही बड़ा स्वाभिमानी, स्वामिभक्त, वीर और दानी था । बाकीदास महाराजा मानसिंह का राज्याश्रय प्राप्त करने से पहले या महाराजा की नाराजगी के समय जबकि उसने अयाचनाव्रत नहीं लिया था, बदनौर गया था । ठाकुर ने कविराज की बदनौर मे अच्छी आवभगत की और वहाँ से प्रस्थान के समय पुष्कल द्रव्यादि देकर ससम्मान विदा दी थी । बांकीदास ने अपने इन दोहों में जैतसिह की मिलनसारिता, अतिथि-सत्कार, व्यवहार-निपुणता और काव्य-प्रेम की पुष्कल सराहना की है । उदाहरण के लिए कुछ दोहे सोरठे उद्धृत किये गये है—

जैमल इण धर जाग, धजबंधी चीतौड़ धन ।
तल़ जिम खाग तियाग, रावल़ राजा राव रहि ।।
जोधा में दूदा जबर, ज्या मांहै जैमाल ।
जैमालां मे जैतसी, सिरै दिलेसा साल ।।
समपै सुखपालाह, गजढाला चाढै गुण्या ।
जैतै जैमालांह, इण चाला उजवालि़या ।।
जैतौ आठू जांम, पाता नै दूदापती ।
बतल़ावै वरियाम, काका बाबा बन्ध कही ।।

यह 57 छन्दों में पर्यवसित हुई है । इसकी भाषा बडी सरल और प्रसादगुण सम्पन्न है । रचना तिथि की सूचना अज्ञात है ।

अन्योक्ति पचासिका:—

अन्योक्ति पंचासिका 58 दोहों की कृति है । इसमे अन्य उपदेश के माध्यम से लेखक ने लोक नीति, समाजनीति और राजनीति का सूत्र रूप मे विवेचन किया है । राजसत्ता प्राप्त, शक्तिवान् और धन-सम्पन्न व्यक्तियों की सामाजिक अनयता दुराचरण, न्याय की अवहेलना, अवसर तथा सत्ता-पद का दुरुपयोग बडे लोगों की "जी

साहब" "हुक्म साहब" के साथ हाजिरी भरने वाले चापलूस और खुशामदी लोगो की असली तस्वीर इसमें खींची है । बड़े आदमियों को सीधे मुह सच्ची कहना वक्ता का "आव बैल मुझे मार" कहना है । ऐसे लोगों को अन्योक्ति द्वारा सत्य तथ्य से अवगत कराया जा सकता है । ऐसा करने पर वे बुरा भी नही मानते हैं । कवि ने इस कृति में ब्रजभाषा का व्यवहार किया है । कृति लोक-नीति और लोक-ज्ञान के लिए पठनीय है । एक अभिमानी व्यक्ति को अगस्त्य मुनि की जन्मकथा के बहाने सत्यकथा सुनाते हुए कवि कह रहा है—

तू अगस्त्य अभिमान तज, भौ दद्ध पीनै भूर ।
सर सर तेरौ जनक घट, जाचत बार जरूर ।।

हे अगस्त्य ! तुम समुद्र जल-पान कर क्या गर्व करता है; तेरा पिता कुंभ तो अब भी तालाब पर जल की याचना करता फिरता है ।

गृद्ध और मराल को वर्ण्य बनाकर कहा हुआ दोहा देखिए—

इन गज मोतिन रास पै, बैठो गरबत गृद्ध ।
मानत तुच्छ मराल कौ, निज सोभा की वृद्ध ।।

आत्म प्रशंसकों पर उक्त दोहे मे अच्छी चुटकी ली है । कुछ अन्य दोहे भी हैं—

जंबुक सब्द निसक कर, उर उर धर निज भाज ।
केहर कर है कोप सुन, गजराजन कौ गाज ।।

कई दोहों मे तो नीतिकार कवि वृन्द के दोहों की भाव-सौरभ महक रही है—

धिक धिक सिंधु अथाह जल, पंथी प्यासे जात ।
धन्य ताहि तट कूप जल, पथिकन प्यास नसात ।।

इस प्रकार की अनेक नीति-परक दृष्टातमयी सूक्तियो ने अन्योक्ति पंचासिका में स्थान ग्रहण किया है ।

कवित्त महाराणा भीमसिह मेवाड़ राः— भीमसिंह मेवाड़ (शासनकाल 1778-1828 ई.) बड़े दानी थे । वह प्रतिदिन चारणो, रावों और अन्य आशार्थियों को दान देते थे । इसलिए उनकी उदारता और वदान्यता की मालवा, गुजरात और राजस्थान के राज्यो मे बड़ी ख्याति

फैली हुई थी । वह काव्य प्रेमी, कीर्ति-लोभी और सरस्वती का साधक था । राजस्थानी भाषा का प्रसिद्ध लक्षण ग्रंथ "रघुवर जस प्रकास" उसके राज्याश्रित कवि किसना आढ़ा ने लिखा है । महाराणा भीमसिह के शासनकाल को लेकर किसना ने भीमविलास नामक एक ऐतिहासिक काव्य भी लिखा है । इसी प्रकार महादान मेहडू ने महाराणा भीमसिह की झमाल और भीमप्रकास काव्यों की रचना की । भीमसिह स्वय भी वीरगीत और भक्ति के गेय पद लिखता था । उसने कविराज बांकीदास की प्रसिद्धि और विद्वता की बातें सुन रखी थी । वह बाकीदास को लाख पसाव देकर सम्मानित करना चाहता था । इसके लिए बांकीदास को उदयपुर आने के लिए न्यौता भी दिया था, पर बांकीदास इससे पूर्व महाराजा मानसिंह के अलावा अन्य किसी भी राजा का दान न लेने की प्रतिज्ञा ले चुका था । ऐसी प्रतिज्ञा को अयाचकव्रत कहते हैं । यद्यपि भीमसिंह और बांकीदास की कभी भेट नहीं हुई थी, पर पत्र-व्यवहार और लोक प्रसिद्धि के कारण आपस मे एक दूसरे से सम्बध तथा पत्र-परिचय था । बाकीदास ने उदारचेता महाराणा भीमसिंह की मृत्यु का समाचार सुनकर बड़े भावविहुवल होकर अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की । तेरह छप्पय छन्दो की इस शोक काव्य कृति में बांकीदास ने महाराणा के उदात्त चरित्र की प्रशसा की है । उदाहरण के लिए निम्न पक्तिया देखिए—

नागद्रह निकलंक, लक वगसण जस लोभी ।
माजा हिंदुसथांन, सबल़ भुज डडा सोभी ।।
साभल़ साका सुजस, फिरै क्रपणां मुख काजल़ ।
नेक रहाणा नाम, भलै राणा भीमाजल़ ।।
मेवाड़ धणी महराण मन, दे दरसण दालि़द दल़ण ।
श्रीराण अमाची अरज सुण, वार हेक कीजै वल़ण ।

छप्पय श्री माताजी रा —

यह कविवर कृत केवल 14 छप्पय छन्दो की लघु कृति है । इसमें आधाशक्ति योगमाया की महिमा का स्तवन है । यह रचना संस्कृत के गोपाल सहस्रनाम, विष्णु सहस्त्र

नाम आदि की अनुकरण शैली में लिखित है । अक्सर ऐसे पद्यो को भक्त-समाज कण्ठस्थ कर नित्य पाठ किया करते है । भारतीय पवित्र नदियों गगा, यमुना, गोदावरी आदि के नामो को परिगणित करते हुए इन्हे जगदम्बा के रूप में मानकर स्मरण किया है —

गगा गोदावरी, चन्द्रभागा सरसत्ती ।
सफरा सरजू सिंधु, गोमत्ती साबरमत्ती ।।
कर तोया कौसिकी, मही भीमा कावेरी ।
वटोट काग दिन्नका, कनका दिनकर करी ।।
नरमदा आद जैती नदी, महणारभ मिलापणी ।
तूं हिज प्रगट, मेहातणी, करणी पातक कापणी ।।

इस प्रकार अपनी पूजनीया करणीमाता के रूप में भारतीय नदियों की वंदना-अर्चना की है ।

कवि ने करणीजी के परिचयो को लेकर एक लम्बी निशानी भी लिखी थी, जो श्रीनटनागर शोध सस्थान, सीतामऊ के संग्रह मे है । उसकी प्रतिलिपि नही ली जा सकी ।

दूहा आयस देवनाथ रा —

कवि के आश्रयदाता महाराजा मानसिह नाथ योगियों के अन्ध भक्त तथा अनन्य उपासक थे । नाथों मे देवनाथ महाराजा का धार्मिक गुरु था । उसके वचन से मानसिंह को जोधपुर की राजगद्दी मिली थी । मानसिह का उसकी शक्ति पर असीम विश्वास था । वह राजकाज मे भी महाराजा को सलाह देता था । बीकानेर और जयपुर रियासतों के राजाओं के साथ मानसिंह की संधि तथा मेल-मित्रता स्थापित करने में देवनाथ का प्रमुख हाथ था । वह दान-सम्मान देने में भी बड़ा विख्यात हुआ । कविराज ने अपनी 41 दोहों की विवेच्य कृति में देवनाथ की शरणागत-वत्सलता, विवेकशीलता, गुणग्राहकता, सगीत तथा कलाप्रियता आदि का चित्रांकन किया है । द्रव्य के प्रति उसकी उदासीनता और वदान्यता प्रेम सम्बन्धी कुछ दोहे इस प्रकार हैं

भल सम्पत रौ भोग, जोगेस्वर न्रप भोज जिम ।

जस खाटम रौ जोग, मिलियौ तूंझ महेस रा ।।
नाटक चेटक नाथ, दौलत घणा दिखाविया ।।
सधरै मतै समाथ, देवा तूं नह डहकियौ ।।
लालच जस लेवाह, मन सिधपत सेवा मही ।
दसनामा देवाह, तू बारह पंथां तिलक ।।
त्याग खाग वड तौर, जबदलखा चाढी जिलह ।
जिण पाछै जालौर, देवा भलौ दिखावियौ ।।
राग हबोलौ तातरस, हाका विरद हजार ।
गुण चरचा पारख गुणी, देवा रै दरबार ।।

ऐतिहासिक वीरगीत –

ऐतिहासिक तथा सामाजिक वर्णन की दृष्टि से कविराज द्वारा प्रणीत स्फुट गीत छन्दो का अनुपेक्षणीय महत्व है । कविराजा रचित दो हजार वीरगीतो की प्रसिद्धि रही है किन्तु हमारे अवलोकन मे अभी तक कम ही गीत आये हैं । इन गीतो मे 17 गीत तो कविराजा के पूर्ववर्ती महाराजा जसवतसिह प्रथम, राव अमरसिह नागौर, महाराज पदमसिंह बीकानेर, राव शत्रुशाल हाडा बूंदी, दुर्गादास राठौड़ आदि ऐतिहासिक वीर पुरुषो तथा पाबूजी राठौड़, लोकदेवी करणीजी आदि लोक देवताओं पर हैं और शेष समसामयिक प्रसिद्ध राजाओं-महाराजाओ, शूरवीर सामत-सरदारो, स्वामि-धर्मी राज कर्मचारियो, मुत्सद्दियो तथा धार्मिक नेताओ से समबद्ध हैं । ऐतिहासिकता की नजर से कवि की अन्य कृतियो से कहीं अधिक महत्व इन स्फुट गीतो का है, जो कवि ने विशिष्ट राजपुरुषो, विशिष्ट व्यक्तियो एवं विशिष्ट अवसरों, घटनाओ तथा प्रसगो को चिर स्थायी बनाने के लिए लिखे जिनका सीधा सम्बन्ध तत्कालीन राजकीय पुरुषो, नागरिकों तथा जनता के प्रतिष्ठित राज्य मान्य व्यक्तियो से है । राजस्थान की तत्कालीन राजनीतिक उथल पुथल के अध्ययन के लिए इन गीतो का अति महत्व है । महाराजा मानसिंह के शासनकाल का तो इस गीत निधि के आधार पर इतिहास-सम्मत ढाचा तैयार किया जा सकता है । उसने इन गीतों मे वर्णित घटनाओं एव युद्धों का आँखों देखा वर्णन किया है । महाराजा मानसिह के सैनिक

अभियानों में बाकीदास अमूमन सेना में रहता था । इसी कारण उसके वर्णन मे अतिशयोक्ति नहीं अपितु सच्चाई अधिक है । वह महाराजा का आश्रित कवि था, पर उसने अपने समवर्ती अन्य कवियों की तरह शृगार-विलास, राग रंग, नाच-गान की ओर तनिक भी ध्यान नही दिया । विलास वृत्ति के प्रति उसकी रुचि नही थी । थोथे दरबारी ठाठ-बाट का वर्णन भी उसे नही भाता था । महाराजा मानसिंह के 5 भटियानिया, 4 देवड़ियां, 2 तवर, 1 चावड़ी तथा 1 कछवाही कुल 13 महारानिया, 13 पर्दानशीने और 12 गायिकाएं थी । परन्तु बाकीदास ने इनमें से किसी के लिए भी कुछ नही लिखा । इससे कहा जा सकता है कि वह वीर भावना का अभिभाषक और वीर-धर्म का अनुयायी था । यहां उसके स्फुट गीतो से आम झरा (मालवा) राज्य की राजमाता किसनावती कछवाही का गीत दिया जाता है—

कछवाही कहै सुण केहर, सुत सुण म्हारा वचन सुजाण ।
असपत रौ अन दूध अमीणौ, भला दिखालौ देखै भाण ।।1।।
मत धौ सिर साजै मोरीजण, मोरीजण धौ दुरग मर ।
पतसाह रौ रिजक मूझ पय, करौ ऊजलौ बेढ कर ।।2।।
जैसा सधू पयपै जणणी, सज आयौ दिखणी सिवराज ।
साह लूण मौ खीर सपूता, उजवालौ खगधारां आज ।।3।।
मर दल दिखण लियौ मोरीजण, हाथी ढहिया राड़ हुई ।
कहियौ मा कमधां तिम कीधौ, मां खग धारां जूझ मुई ।।

अुपराकित गीत मै किसनावती, उसके पिता मिर्जाराजा जयसिंह कछवाहा, किसनावती के दो पुत्र केशरीसिंह तथा सुजानसिह, छत्रपति शिवाजी मरहठा और मोरीजण स्थान के युद्ध आदि ऐतिहासिक सूचनाए हैं । इस तरह स्फुट गीत इतिहास की महत्त्वपूर्ण आधार सामग्री से ओतप्रोत हैं ।

स्फुट डिंगल गीत —

वीरगीतों के अतिरिक्त बांकीदास प्रणीत कुछ गीत ऐसे मिले हैं जिनमें देश प्रेम, राष्ट्रभक्ति, स्वातंत्र्य रक्षा, सामाजिक पवित्रता, विदेशी अंग्रेज तथा देशी मरहठा आक्रांताओं का विरोध, राष्ट्रीयता

की भावना का उद्‌बोधन तथा राष्ट्रीय जागरण का सन्देश दिया है । अंग्रेजों के प्रति विरोध का कारण उनकी भारत भूमि को हड़पने की मंशा रहा है - सीत वाहरू आ अरज सुणीजै, रेणां खत्रिया रै राखीजै । दध रै तलै किलकतौ दीजै, कालौ मुख गोरां रौ कीजै ।। कलकत्ता के पश्चात् काशी, मथुरा और मऊ में सैनिक छावनियों के विरोध में कहा है—

थापाणौं कासी मऊ थाणौं, विच ब्रजदेस तन्दूर बजाणौ ।
मारजै टीकम मेछाणौं, हव सारै कीजै हिंदवांणौ ।।

कन्या विक्रय, और पुत्री का डोला देना (विवाह की एक किस्म) की भी कविराज ने निंदा की है । वह ऐसे विवाहों को कन्या विक्रय की श्रेणी देता है—

दीकरी तणै घर नीर नह पीवै दुआ,
खाग बल खाय उबै धरा खाटी ।
करै गुदरांण नित खाय मीठा कवा,
भूख मर दीकरी घरां भाटी ।।

अयोग्य और ऐशोआराम में लिप्त संतान की ताड़ना देते हुए कहा है—

सिरै बैस रच अैस प्याला पियै सराबां,
लाल चख खतग बाधै लपेटा ।
बाप रा घातकां तणा न किया बरंग,
बाप रौ भोगवै पटौ बेटा ।

इसी प्रकार व्यभिचार, अहलकार तथा हुजदार की दुष्टता आर दुष्कर्म की भी भर्त्सना की है ।

भक्ति गीत —

भक्ति गीतों में कृष्णभक्ति, राम-भक्ति और नाथ-भक्ति पर कई गीत प्राप्त हुए हैं । कृष्ण और राम भक्ति के गीतों में सीताहरण, लंकादहन, नागलीला, चीरहरण, दधि-पान और व्रज की लीलाओं का वर्णन किया गया है । नाथ-भक्ति में नाथ पंथ, सम्प्रदाय, योग शक्ति की महिमा, जालंधरनाथ की सिद्धि, देवनाथ, लाडूनाथ, लक्ष्मीनाथ आदि की उदारता और साधना की श्लाघा की गई है । कृष्ण भक्ति

का एक गीत देखने योग्य है—

घ्रत ताजौ चोर अहीरां घर सू, मत जावौ अन ठौड़ मुरार ।
आय छिपौ गिरधरण अमीणै, अतसकरण तणै अधियार ।।1।।
करौ आप उर घणै काढियां, घर घर हर नवनीत घणौ ।
केसव दुरौ न देसी काढ़ै, तम मौ वाला़ हिया तणौ ।।2।।
माखण मूस पुलौ नित माधव, चाचर विमर घुसण री चाह ।
निगह पड़ै न, घुसौ नचीता, मौ मन तणा विवर चै माह ।।3।।
बात एक सौ बात बणाया, फसियौ हू माया रै फंद ।
आया आप मूझ उर अंतर, चादरणौ होसी व्रज चद ।।

इनके अतिरिक्त महावीर हनुमान, इन्द्र आदि पर भी गीत लिखे हैं । नाथों पर कथित गीतों में सिद्धराज जालंधरनाथ के वर्णन का एक गीत यहा दिया जा रहा है । इसमें जालधरनाथ का स्वरूप तथा शक्ति अथवा सिद्धि का आकलन किया गया है—

सधर जटा विसतर लता अमर तर सरोतर,
टोपी सेली डमर भंमर टोली़
नूर दिनकर वदन प्रभा वरसै निकर,
धर क्रपा नजर भर सुधा धोली़ ।।
विमल़ कुंडल़ कल़ा चन्द्र भल़हळै बणै,
सकल़ दुख दल़ दल़ण वजै श्रगी ।
कमडल़ सजल़ बल़ साज अछमाल़ कर,
राज कथा अकल़ आप रंगी ।।
बरण जल़ धरण तन ऊधड़ै विभूती,
नीलमण गिरंद जुसनां निहाली़ ।
जयद सिध निध वसै चरण पकज जठै,
ताप त्रण हरण लग ध्यांन ताली़ ।।
मंडली़ जोगराजा तणी मझारै,
विल़कुल़ै विरद धारै वडाला ।
जनां ऊणत गमै ध्यायगी जल़ंधर,
मिल़ नमै सुरासुर मुगट माल़ा ।।

नीति विषयक गीत —

कविराज ने अपनी दीर्घकालीन आयु में जीवन के उतार-चढ़ाव

के कई अनुभव देखे थे । राजकर्मियो की उत्थान-पतन की कतिपय साक्षियां उनकी काव्य पक्तियों मे घुली मिली, ऊंघती-जागती श्वासें ले रही हैं । उन्होने नीति परक गीतो मे ऐसे ही क्षणो को वाणी दी है । सगति, झूंठे आश्वासन, मधुर भाषिता, कृपण-वृत्ति, स्वार्थान्धिता, ईर्ष्या, धनाधता; अंध-विश्वास, समय की पहिचान इत्यादि कई ऐसे प्रसग नीति-सम्बन्धी गीतों में ग्रंथित हैं । एक अधिकार प्राप्त मदाध व्यक्ति को सावधान करते हुए कहा है—

धन छकियौं नीच सीख नह धारै, लेवा करै अजारै लंक ।
लोका घण कलंक लगाडै, कहै नही घर तणौ कलंक ।।
माया सू अकुलीण मदीजै, अधिका अधिका करै अफंड ।
देखै बलती लाय डूगरा, बलती पगां न देखै बड ।।
वदै नहीं वड वडां बांकला, पाजी लिखमी तणै प्रताप ।
पड़दा नित खोलै पैलां रा, पाणैचा पडदै कर पाप ।।
मोटा मिनख करै नह मुख सूं, वैरी री उतरती बात ।
किबर जकौ अवरां मैं काढै, जाण जकौ टलियोड़ौ जात ।।

नीति और लोक-धर्म सम्बन्धी अभी तक कुछ गीत ही प्राप्त किये जा सके हैं । राजा और साधारण राजपूत में कितना अन्तर होता है, यह कविराज भलीभाति जानते थे । छोटों के पास बाहुयाडबर और चाकचिक्य नहीं होता । बड़े लोग प्रदर्शन प्रिय होते हैं । सामान्य जन पर लिखित एक गीत की पंक्तियाँ उद्धृत है—

कर मांहै गैड्यौ कमर कटारी, बार बार हररस नूं बांच ।
अनजल लै पढ़वा आसीसां, जा गढ हलपतियां जांच ।।
दोरौ हुवै भाटकै डेरा, कदर दुंखां किसूं करै ।
मांग ग्वाडै भल सूधा मन रा, सीधै कापड़ गरज सरै ।।

गेयपद (हरजस) —

नीति, भक्ति के गीतों के अलावा कविराज ने अनेक गेय पद भी लिखे हैं । इनमें श्रीकृष्ण की वृन्दावन, मथुरा, गोकुल आदि स्थानो की बाल्य-क्रीड़ाओं का बखान है । मीरा, बख्तावर, ब्रजनिधि और नागरीदास के पदों की सी भाव-मधुरता और पद-लालित्य इन में है । इन पदों मे ढूंढाड़ी भाषा का प्रयोग है । पद बड़े सरस, मधुर

और भक्ति-रस से परिपूर्ण है । वर्णन में सहजता और स्वाभाविकता छलक रही है—

एक पद देखिए—

झल़ामल़ बीज झबूकै राज ।। टेक ।।
नाचै मोर घटा नभ छायौ,· कोयल कूकै राज ।
मूसल़धार जल़हर जल़ कैरी, महियल़ मूकै राज ।
सोना बेल़ मास सावण रै, सांप्रत सूखै राज ।।

और उस योगिराज के आने पर वियोग की बन्हि शान्त हो जाती है । समस्त महिर समाज मुदित हो उठता है । वे निर्गुण सगुण के भेद से अपने को अलग रखते हुए साफ कहते है—

उण आयां दरसण नूं आवै, मिल़ सारौ महरांणौ ।
निरगुण नूं म्है समझां नांही, निरगुण थै ही जाणौ ।।
श्रोतां री रुच मुजब कहै सो, बकता सुघड़ बखाणौ ।।

कविराज ने नटवर नागर की बाललीला का वर्णन बड़े मनोयोग से किया है । ब्रजबिहारी की व्रजलीला में तो उसका पर्दाफास ही कर दिया है । भक्ति लीन कवि ने साफ-स्पष्ट कहा है—

अपणै स्वारथ आवै औ तौ अपणै स्वारथ आवै ।
पर वनितां रा हरण पतिव्रत, अगणित दाव उपावै ।।
बात बणावै सरल़ सुणावै, बैण बजावै गावै ।
कुंज कुंज रस लैण भंवर ज्यूं, बंकविहारी जावै ।।

कृति-विस्तार, विषय-वैविद्य तथा काव्य-सौन्दर्य

बाकीदास की कृतिया पर्याप्त मात्रा मे हैं । उनमे दोहो, सोरठो, डिगल गीतों, कवित्तों आदि का प्राचुर्य है । लघु काव्यो के दोहे इतने अधिक हैं कि उनमे बत्तीसी, छत्तीसी, बावनी आदि की भरमार है । इस प्रकार सैकड़ो की सख्या मे दोहे उपलब्ध हैं । कहा जाता है कि बाकीदास ने लगभग दो हजार डिगल गीत लिखे थे यद्यपि इतनी बडी मात्रा मे ये प्राप्त नही होते । इनके अतिरिक्त कवित्त और गेय भक्ति-पद भी बडी सख्या मे मिलते हैं । कुछ निसानियो के उदाहरण भी प्राप्त होते हैं । इतनी बडी सख्या मे होने पर भी फुटकर रूप में अपेक्षाकृत कम मिलते हैं । दोहे एक ही प्रकार के है ।

दोहों के बाद डिगल गीतो की बारी है । बडी सख्या मे मिलने की बात कही जाने पर भी ये सैकड़ो की सख्या मे ही मिलते है । कवित्त तो नाम मात्र के ही है । यही स्थिति निशानियो की है पर गेय भक्ति-पद कम नही है । कविता के बाद ऐतिहासिक और विविध विषय-प्रसगों से सम्बन्ध फुटकर टिप्पणिया हैं जिनकी सख्या भी लगभग पौने तीन हजार है । रचनाओ का और कोई प्रकार प्राप्य नही है । बाकीदास की रचनाओ का विस्तार आकार की दृष्टि से इतना अधिक है कि गुणवन्ता की दृष्टि से वह बहुत कम तथा हलकी पड़ती है । दोहे भी अन्य कृतियो की भाति ही है । डिगल गीतो का विस्तार भी कम नहीं है, पर अन्तर केवल इतना ही है कि वे अधिक स्तरीय है । इन सब के अतिरिक्त बाकीदास ने काव्य दोषो पर भी लिखा है । कविमत मडण नाम से उनकी इस विषय की रचना भी प्रकाशित हो चुकी है । इनमे थग्नवट बत्तीसी

नाम की एक अन्य रचना भी छप चुकी है जिसमें राजस्थान के प्राचीन थली (स्थली) नामक भूभाग की निंदा की गई है । विभिन्न शीर्षकों के अधीन दोहों और डिंगल गीतों के अतिरिक्त छप्पय, कवित्तों, निशानियों की रचना की गई है और लगभग २५ झमाले भी बनाई गई है । छंदो की दृष्टि से विस्तार का यही विवरण है ।

इस प्रकार मोटे तौर पर रचनाओ का ससख्य विवरण निम्न प्रकार है:—

सूर छत्तीसी ३८, सीह छत्तीसी ३८, वीर विनोद ७५, घवल पच्चीसी ३४ दातार बावनी ५३, सुजस छत्तीसी ३९, नीति मजरी ३४, वैसक वार्ता ५९, मावड़िया मिजाज ८८, मोह मर्दन ३९, चुगल मुख चपेटिका ५९, वैसवार्ता ७७, विदुर बत्तीसी ३६, भुरजाल भूषण ७0, कुकवि बत्तीसी ३९, गगालहरी ४४, जेहल जस जड़ाव ७४, सिघराव छत्तीसी ३६, कायर बावनी ५४, झमाल राधिका नख सिख वर्णन २७, संतोख बावनी ५५, वचन विवेक पच्चीसी २८ ,कृपण दर्पण ४५, अन्योक्ति पंचासिका ५८, दूहा जैतसी दूदावत रा ५७, हमरोट छत्तीसी ४0, छन्द दूषण दर्पण, विनोद चंद्रिका वर्णन अथवा विरहणी बत्तीसी, मान जसौ मंडण २२९, आयस देवनाथ रा दूहा ४६, थलवट बत्तीसी ३२, महाराजा मानसिंह रा कवित्त, देवनाथ रा कवित्त, ठाकुरा रूपसिंघ जी री झमाल ३0, कविमत मंडण, पद दोष, वाक्य दोष, अन्य दोष, वृन्त रत्नाकर भाषा, अन्तलिपिका, रस अलंकार, कवित्त महाराणा भीमसिघरा २१, छप्पय माताजी रा, कृष्ण चन्द्रिका, विरह चन्द्रिका, चमत्कार चन्द्रिका, वैसक वार्त्ता संग्रह, महाभारत छंदानुवाद और ऐतिहासिक टिप्पण (बांकीदास री ख्यात) है ।

विषय वैविद्य-- विषयो की विविधता की दृष्टि से शायद ही कोई अन्य चारण कवि बांकीदास की तुलना में टिक सके । वे राज सभा से सम्बधित थे और विद्वत् चर्चा में भाग लेते रहते थे । इसलिये उनका बहुज्ञ होना स्वाभाविक था । मूलतः चारण होते हुए वे करणीदेवी के भक्त थे । एक आस्थावान चारण के नाते उन्होने करणी स्तुति के गीत लिख कर अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया है—

कीघौ तै कौप साजियो कान्हो, रिड़मल नै दीधौ तैं राज ।
चारणवाडा तणी चारणी, लोक मही तूं राखै लाज ।।

चारणो की जीविका का मुख्य आधार व्यक्ति-स्तुति द्वारा पुरस्कार, आभूषण, भूमि आदि द्वारा प्राप्त साधन थे । इस यजमान वृत्ति से ही प्रायः चारण का काम चलता था । ये साधन राजाओं, ठाकुरों, धनिको तथा रसिकजनों की वदान्यता से ही प्राप्त होते थे । सम्पन्न राजपूत समाज ही भूमिदान आदि से चिरस्थायी साधन प्रदान कर सकते थे । चारणो को मिलने वाले बहुमूल्य पुरस्कार लाखपसाव, करोड़पसाव (करोड़ प्रसाद) आदि कहलाते थे । जबकि दान मे प्राप्त होने वाली भूमि सांसण कहलाती थी । यह सस्कृत के शासन शब्द का ही अपभ्रश है जो इस अर्थ में सातवी शताब्दी से भी प्रयुक्त होता था ।

बांकीदास को उनके काव्य कौशल तथा वाक् चातुर्य के कारण महाराजा मानसिंह ने (कविराज) की पदवी देकर अपना भाषा गुरु बनाया था । चारण लोग अपने आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के लिये स्वय को (अयाचक) लिखने लगते थे । वे अन्य किसी से दान न लेने का प्रण भी कर लेते थे । ऐसा करने से संभवतः आश्रयदाता उन्हें और अधिक दान देकर आश्वस्त करते थे ।

विद्यागुरु

श्रीमन् मान धरणि पति बहुगुन रास ।
जिन भासा गुरु कीनौ बांकीदास ।।

अयाचक

जग जाहर कवि जोधपुर, देखो बाकीदास ।
मान समंद तज हंस मन, करै न सरवर आस ।।

कविराजा (१)

सद विद्या बहु साजै, बांकी थी बाका वसु ।
कर सूधी कविराज, आज कठी गो आसिया ।।

(२)

मेरु सम रच्छक म्रजादा श्री सुमेरसिंह,

राख्यो राज्य अंग रूप ऐसे कविराजा वो ।

लाखपसाव

बकै बांकीदास री, समवड़ करै न कोय ।
लाख पसाव तो इक दियो, देस निकाला दोय ।।

सासण

नरपत तै मोनू, करे निवाजस, कुरब सपै कविराज कियौ ।
इण कारण हूं थियौ अयाची, बिरदाऊं नह न्नपत वियौ ।
बार बार कीं करू वीनती, मोनू आवै नहीं मिस ।
सासण दीजै गुमन समोभ्रम, दीजै काय बताय दिस ।।

इस प्रकार बांकीदास जहा एक महान् कवि था, वहा वह राजकोप से भी कम पीड़ित नहीं रहा । उसके आश्रयदाता मानसिंह की रीझ और खीझ दोनो ही उसे प्राप्त हुई थी ।

कविराज बाकीदास इतिहास और काव्य शास्त्र दोनो का ज्ञाता था, वह ब्रज, डिंगल, अरबी, फारसी, पंजाबी और गुजराती भाषा का उत्तम जानकार था । फिर भी उसकी अधिकतर रचनाये राजस्थानी (डिंगल) में निबद्ध है । बाकीदास की भाषा के शब्द प्रयोगो का अवलोकन करने पर प्रतीत होता है कि उसने भाव सम्प्रेषण के लिये तत्सम, तद्भव, देशज और अरबी, फारसी शब्दों का अपनी कृतियो मे जगह जगह प्रयोग किया है, परन्तु इन प्रयोगो से भाषा बोझिल या विलष्ट नही बनी हैं । कवि ने राजस्थानी भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए विदेशी भाषाओं के शब्दों के नये रूप गढ़े हैं जिससे राजस्थानी मे ये शब्द आत्मसात् से हो गये है और इस प्रकार राजस्थानी भाषा की यह सम्पत्ति बन गये हैं । ऐसे कुछ शब्द द्रष्टव्य है—

तत्सम शब्द

कपाट, मंत्र, रमाकंत, घरा, गुरुड़ध्वज, सामंत, चमू, गज, मंजरी, मलयाचल, मधुपाली, वारिज, पिपासित, तम, समर, पंचसर, पाषांण, चक्रपाणी, सदन, रसिक, महाक्रोध, मंगल, प्रथम, आगम, सुरपुर,

नरपुर, कनक, चन्द्रक, भवसागर, निगमागम, श्रोता, वनिता, कुंज, वनवास, कर, सदन, खग, व्याकुल, चाप आदि ।

तद्भव

कंवारी, सिर, विखम, लोह्, बयण, खेत, सेज, भोम, प्रमाण, अरक, समहर, दुंरग, विसभर, जवन, मारग, दिखण, महाबुध, ग्रैंाम, दाँत, कांधा, विकल़, दुद्ध, जल़, जुत, नरेस, दाल़द, सयण, कुल़, द्रढ, रसक, घरम, उअर, सरीर, जल़धर, ससि, तीत, प्रसिघ ।

देशज

रजवट, सुखपाल, दीवांण, काका, मधकर, कूड़ा, बीनडिया, कैबी, अवसांण छौल़, सूत, बैड़ां, त्रबक, वरियाम, छौत, खाटरा, आटैत, सीगाल, बीदग, खणी, जड़ंग, भड़ग, करही, चौपाणा, कोहरा, माडा, हूंजा, बल़, ध्रग, विडाणी, झब, झूबै, चाल़ै, झाली, आलौ, धेख, हंजल़दे, खिवण, रौढ़, गैरी, बूकार, चौखल़े, काय, पड़सूदी, फूलमद, महौला, घाल़ै ।

अरबी-फारसी के शब्द

मुलक, दरबान, जिहान, जंग, नूर, सिलह्, मुह्म, अबखास, फुरमांण, आयतां, मजहब, मसीता, तखत, बखत, कदमबोस, हजरत, ख्वाजासरा, हुरम, हसम, खून, माफ, हद, खांवद, खिताब, मुसकल, कवाद, मजलस, जबर, निवाजै, दिल, चसमा, नजर, अदल, अमल, अकल, हमगीर, दावागीर, गरीबनवाज ।

अग्रेजी के शब्द

लाट, जनरैल, करनैल, रिजमट, कीग, कंपणी ।

इसी प्रकार पजाबी भाषा के हंदा, हंदी, असाढा, आदि शब्दो के प्रयोग यत्र तत्र देखे जा सकते हैं । इस प्रकार की शब्दावली के प्रयोग से भाषा में क्लष्टिता अथवा बोझिलपन नहीं आया है । कवि ने राजस्थानी भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुये अरबी फारसी के शब्दो के नये रूप गढे हैं जिससे राजस्थानी मे ये शब्द

आत्मसात् से हो गये हैं । और इस प्रकार राजस्थानी भाषा की ही सम्पत्ति बन गये हैं । भाषा को अलंकृत करने तथा सजीवता में वृद्धि करने के लिये लोकोक्तियां और मुहावरे तथा अलंकार भाषा के लिये टोनिक है । इनके प्रयोग से भाषा में चापल्यता के स्थान पर दाढ्र्यता, रमणीयता और भाव-सौन्दर्य की उत्कष्टता में वृद्धि होती है । बांकीदास ने मुहावरों, लोकोक्तियो और अलंकारों के समुचित और सटीक प्रयोग किये हैं । चारण काव्य परम्परा के शब्दालकार वयणसगाई (वर्णमैत्री) के लाटानुप्रास, श्रुत्यानुप्रास, छेकानुप्रास, यमक आदि अलकारों का पुष्कल प्रयोग किया है । यहा कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं —

अनुप्रास

सक दस सहस सनाह, साजै छक गजसाह सुत ।
निधड़क कीरत नाह, वाह विजै त्राबक बजै ।
सुनजर सूं सुख संपदा, सुनजर हूंत सुगाल ।
आ सुनजर मागूं अमै, वीर बिया विजपाल ।।

अन्त्यानुप्रास ही नहीं छंदो के मध्यांशों में भी कवि ने अनुप्रासो के जड़ाव जड़े हैं—

भूप मान आयौ भलां, जस छायौ जोधाण ।
पायौ पाट बिजमाल रौ, दिल भायौ दुनियाण ।।

लोकोक्ति—

पग न माडै पालियौ, रावतियारौ साथ ।
केहर सू कुसती करै, द्यौ थीणां मे हाथ ।

स्वभावोक्ति

जाणै तोड़ जहांन सू, साध न जांणै सीह ।
निज बल़ सू जुघ नीमजै, ऊगै सूर अबीह ।।

दृष्टांत—

केहर री दीठा कल़ा, खल़ दल़ करसी खेह ।
लूंबां झड़ नह लग्गिया, लूंबां न कानौ लेह ।।

उपमा—

दाता घन जैतौ दियै, जस तेतौ धर पीठ ।
जैसौ गुल लै घालियां तैतौ जीमण मीठ ।।
वारवधू ही हरण वित्त, नेह जणावै नैण ।
भू सिर लेवा ऊचरै, वै ही मीठा वैण ।।

व्यतिरेख—

सांवण जलहर गाज सुण, खीजै उर धर खार ।
जग सूं उलटा जांणणा, बाघा तणा विचार ।।
अप्रस्तुत प्रशंसा—
पग पग काटा पाथरै, वादीलौ वनराव ।
होणो ज्यू त्यूं होवसी, दियै न हीणौ दाव ।।

रूपक—

वक पकत रद नीर मद, गरजण गाज पिछाण ।
पटकै हाथल पचमुख, जलहर मगल जाण ।।

उदाहरण—

सबला खल सू साधियां, निबल जाय खल नास ।
मूसौ मल मंजार कर, बचियौ विपत बिलास ।।

परिणाम—

हिचै मरै खल हाथ, खग धारां कुल खोवणा ।
सूंपै हेकण साथ, सिर वित धर वसुधा सुजस ।।

विचित्र—

नरहरि थंभ विदारियौ, सेवग हदी चाड ।
हेक थाप चूरण हुवा, हिरणाकुस रा हाड ।।

शब्दों के उच्चारण मे सरसता तथा प्रवाहगुण लाने वाला अनुप्रास अलंकार तो रचनाओं मे सर्वत्र मिलता है । इससे कवि की भाषा बहुत ही सरस और प्रवाहमयी बन गई हैं । अनुप्रास के स्वाभाविक

प्रयोग ने उसका माधुर्य और ओज बढ़ा दिया है । काव्योक्तियां, स्वाभावोक्तियां मन को स्निग्ध कर देती है । अतएव बांकादीस की रचनाओं का अध्ययन करने पर यह भलीभांति स्पष्ट हो जाता है कि वह अपने समकालीन कवि समाज में ध्रुव-तारा के समान अपनी अलग और विशिष्ट पहचान बनाये हुये है । उसके काव्य स्वरो मे राजस्थानी समाज, संस्कृति और तत्कालीन मानव प्रकृतियो का सागोपांग चित्र उभर जाता है । किसान की स्थिति, व्यवसायी की प्रकृति और हाकिम हुक्कामों की प्रवृति के साथ साथ देश की दशा का जीता जागता चित्रपट नेत्रों के सामने आ जाता है । वह भारतीय स्वतंत्रता का प्रबलतम उद्बोधक और मत्रदाता था । उसने तत्कालीन भारतीय शासको को बिना जातीय भेद भाव के अपनी ओजस्वी वाणी मे पुरजोर आग्रह करते हुये कहा है कि—

आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर, आंहंस खेंच लियौ उरां ।
राखो रे किहिक रजपूती, मरद हिन्दू की मुसलमान ।

अग्रेज देश पर चढ़ आया । उसने सबके हृदयों से साहस खीच लिया । सब निष्प्राण हो गये । अरे ! हिन्दू या मुसलमान कोई तो साहस कर उसे यहां से बाहर भगाओ । इन पक्तियो मे जहां एक और असहायता, दीनता, पीड़ा और अकर्मण्यता की ध्वनि है, वहां दूसरी और क्या सभी मर गये । यह भाव भी है । कोई तो साहस कर उनसे लोहा लो, हिम्मत करो, यह आकुल हृदय की पुकार, ललकार, चेतावनी, उद्बोधन और उलहना है ।

कवि रचित अंग्रेजो के विरुद्ध चेतावनी के गीतों मे राष्ट्र प्रेम और मातृभूमि के प्रति भक्ति की भावना स्पष्टतः मुखरित है । ये अभिव्यक्तियां उसे एक स्वातंत्रप्रेमी और सजग कवि के रूप में उपस्थित करती हैं ।

इस प्रकार हम निसंदेह और स्पष्ट रूप में बांकीदास को एक युगदृष्टा कवि स्वीकार कर सकते हैं ।

भक्ति-गीत

गीत गोपीनाथ री

कर अळगो गात हूत काबळियौ,
        पैहरीजै बागौ ब्रजपाळ ।
अरज करण मोहण आलीजा,
        चूप करै हू पकडू चाळ ।।1।।
ग्वाळ लिबास निवारै गिरधर,
        पैहरौ मीमौ छैलपणै ।
काठौ ग्रहू बीनती करवा,
        घेर दामणा हरख घणै ।।2।।
कांनां नटवर वेख ढलौ कर,
        भाखू जामो पैहर भलौ ।
सारो मो अहवाल सुणावण,
        पाणा दहुवा ग्रहू पलौ ।।3।।
वाकौ पलै लगाड बिहारी,
        लखमीवर गोबिद नन्दलाल ।
जो मुकरै तो वैकुंठ जाता,
        पकड़ै पलौ जिका नै पाल ।।4।।

गीत भगवान री भगति रौ

औ पाणी पवन जोग ऊपजियौ,
        कायम जिकौ हुबाब कितै ।
उण घर रौ तेड़ै नह आवै,

जोर जणावै मिनख जितै ।।1।।
हूं हूं कहै लड़ै नहं हारै,
टळै नहीं गजराज टला ।
निरदै तणौ बुलावौ नावै,
भावै ज्यूं नर करै भलां ।।2।।
धन रै लोभ निरन्तर धावै,
देस विदेस लगावै दाव ।
जम तेड़ायर लियै नहं जा लग,
पुरस करै पुटिया रा पांव ।।3।।
अंतक रौ तेड़ौ घर आया,
रहियौ कुण, कुण फेर रहै ।।
मोटै धणी पसारी माया,
वांका सूधौ नकौ वहै ।।4।।

गीत नारायग सुमरण रौ

ऊगै व्है असत असत व्है ऊगै,
ठहरै अरक न मानै ठौड़ ।
जीवा रौ अति अलप जीवणौ,
देख डागळा वाळी दौड़ ।।1।।
जेज न लगै दिहाड़ा जातां,
वातां करतां वळौवळ ।
पळ पळ ऊमर घटै प्राणियां,
जाण हथेळी तणौ जळ ।।2।।
कळ में आव वेग की कहणौ,
जळ में नोका वेग जिसौ ।
रैणां देह-धरां चौ रहणौ,
तिल तणा तापण तिसौ ।।3।।
बाकां सारौ जगत वटाऊ,
ग्यानं करै मन मांह गिण ।

जीवण मत दे आप जांणियै,
निकमा दिन विण नारियण ।।4।।

गीत किसन भगवान रौ

ठीगां नह करै गरीबा ठेलै,
वायक साचौ वीसविसौ ।
महर करैही करै मुरारी,
कहर करै तो जोर किसौ ।।1।।
मोटा जिकै आपरा मन सू,
तौड़ै नह छोटा रौ ताग ।
रुषमणपत रीझैई रीझै,
खीजै तो कुंण बाधै षाग ।।2।।
परम दयाल त्रिलोकी पाळग,
दाणव दैत विधूसण दाव ।
तू तूठैही तूठै तीकम,
वरजै रूठां जिकौ वताव ।।3।।
वाला तूंनै किया वेराजी,
करै जीव थित नरक कुअै ।।
राजीपणौ तुहाळो रूड़ौ,
हर तैं जग निरवाह हुअै ।।4।।

गीत हनुमानजा रौ

उपल धात बरखा मची मणमती ऊपरै,
पवंतन तण ऊससण गात बळ पूर ।
पीठ लांगी जरब कोपियौ कमठपत,
चापियौ चरण गिर थयौ चकचूर ।।1।।
केहरी समौभ्रम बदलिया कोयणां,
दोयणां डूबवण समंद दुख रै ।

चढ़ी भ्रगुटी बणी लूम सिर चूमती,
मढ़ी ढिग मडळी नूर मुख रै ।।2।।
राम सोभा चढ़ी दूत इण रीत रौ,
तद पड़ी कमर सूं दसाणण तेग ।
पीठ अहरण कनक तार दिव तणी पर,
वोम आंगण वणी धार कपि वेग ।।3।।
जोम फब अमंद तन मथ परबत जही,
वन समंद रांण वाळी विलोवा ।
अनड़ इम छोड हाटक भंमर ऊडियौ,
जानकी चरण अरविद जोवा ।।4।।
धूजिया दैत दनुजेन्द्र नावै धकै,
वियौ अज तणौ छूटौ सकै बांण ।
देवपत अभावक तणौ पुर दाहिवा,
जळद पावक तणौ गवनियौ जाण ।।5।।
हाक कर निडर अंजणेव इम हालियौ,
बाक फाटा जगत हुवौ बोळौ ।
हठी राघव महंण माहि छानौ हुवौ,
गजब रौ रवानौ हुवौ गोळौ ।।6।।
पैहलकै फाड़ियौ खंभ दैता पछट,
लंक सिर अैहलकै तेज लीधौ ।
तरक वितरक करै लोक देखै तिता,
किसूं नरसिंघ कपि रूप कीधौ ।।7।।
घड़ी उण महोछव देव दुदभ घुरै,
लखण अग्रज तणी मूदड़ी लेर ।
प्रयाणौ कियौ हणुमंत गयणाग पथ,
मलफियौ लंक दखण अकथ मेर ।।8।।
परां आयौ गिरदं रहै किम पालियौ,
चालियौ दिखण दिस वीर चौखौ ।
पुरी लवणोद मझ दुरी नूं पजासी,
जम तणी पुरी नूं हुसी जोखौ ।।9।।

सरब दाखै कवण अेम अवसाण सिध,
धींग मन वेग रौ गरब धांसै ।
उरड रवि साखियौ वीच असमान रै,
वानरै राखियौ गुरड़ वांसै ।।10।।
प्रळैकारी रसम चसम व्है पेखणौ,
भसम व्है श्रग मयणाक भाटा ।
ऊघड़ी रुद्र अैक दसम अवाई,
निसाचर हसम दम जाय न्हाटा ।।11।।
जाग छल साम रौ सांमध्रम जणायौ,
नाग मानव अमर वखाणै नेक ।
अेक रिख उदध नू पियौ भर अंजळी,
उदध नूं उलंघियौ वळी मुख अेक ।।12।।
सूरपण देख राम हुवौ सानियौ,
सोनपुर मानियौ घणौ सांकौ ।
रहै जस अोध रघुवस राजान रा,
वानरा थटै की सुजस वाकौ ।।13।।

गीत इन्द्रदेवता रौ

आगै तू चतुरमास रित आया,
वरसतौ पष में दस वार ।
तै हव दिया मिलण रै ताळा,
अैरावत वाळा असवार ।।1।।
अनदातारां दीजै ओपमा,
इसी वडाई तूझ अछै ।
पाणी तू नह श्रवै पुरंदर,
पांणी श्रवसी कवण पछै ।।2।।
पहली दुरभष तीन पड़ता,
थळ थळ मिनषा ढेर थया ।
इंद्र अजै तू काढ़ै आघौ,

दूजा करसी कवण दया ।।3।।
सारी प्रजा तणा मुष सूखा,
आरत कहूं तो थारौ आंण ।
जळ बरसाव जियाव सकल जग,
मत तरसाव हमैं मघवाण ।।4।।
रच उतराद घटा रळियायत,
नरा वदन ज्यूं आवै नूर ।
घर सौह वसै तुहारा घर सू,
पालर सू सरसता पूर ।।5।।
रौरव जंभ पाक जिम रेसे,
आसा अमां पूरजै आज ।
वरस वरस छत्रपती वीनवै,
अमरावती तणा अधिराज
लेषव सची जेम बण लाडौ,
हव धर विरह सताप हर ।
मोटां लोकपाल सुरमंडण,
क्रपण म होय सुगाळ कर ।।7।।
नभ सांमौ नर नार निहारै,
सूखै करसण विगड़ै सूत ।
सांत रगड़ दरसाव नीर सुव,
पांतर मत अवसर पुरहूत ।।8।।
तपिया गिरवर मेट अबै तूं,
दुसह निदाध दियौ सो दाह ।
हुआं क्रपाल जगत रौ होसी,
नंदन-वन-वासी निरवाह ।।9।।

गीत लोकदेवी करणीजी रौ

कीधौ तैं कोप साजियौ कांनौ,
रिड़मल नै दीधा तै राज ।

चारणवाड़ा तणी चारणी,
लोक मही तूं राखै लाज ।।1।।
वटपाड़ां धरपाड़ा वाली,
आभ जड़ां नाखै ऊपाड़ ।
कोय न गाज सकै कनियांणी,
झीझलियाल तुहाला झाड़ ।।2।।
मेछां अपराधियाँ मारणी,
भलां सेवगा आवै भाव ।
करै करा छायां तू करनी,
गाँजै कुण गढवाड़ां गाव ।।3।।
बाका मेहासधू म बीसरै,
सकट हरै साभलै साद ।
गढवाड़ां गढ़ औलै गाजै,
मढ़रै औलै गढां म्रजाद ।।4।।

हरजस

1

तार्‌या वांका तरस्यां म्हैं तो ।। टेक ।।
नहीं तारोगा जितै तरण की मोहण हूंस्यां मरस्या ।
जाणाला करस्यां थांकौ जस, आरंभ और न करस्यां ।
बकबिहारी थांका ढब सूं, भोग न जमकूं भरस्या ।

2

हेली म्हांरी बांका बिहारीजी नूं हेर ।। टेक ।।
गया छै अब ही कुंजगळी में, तूं मत लावै देर ।
पिताम्बर कै मंगा पकड़्यौ छै, देख अठै द्रग देर ।
म्है लीनी दीनी नर मुरळी, जाणां आसी फेर ।

हू पछतावू हियै न लपटी, लाल भुजा बिच लेर ।
छैल माळ मे यूं छाजै, ज्यू मणिया माळ सुमेर ।

3

हजलदे रा मैहला हालौ, हालौ म्हारा ढोला ।
आज सियाळै उत्तर दिस रौ, पवन दियै छै झोला ।
पुर कसमीर हुयोडा पड़दा, सोहै छै घणमोला ।
भीतर ईंधण अगर जळै छै, सोरंभ लियौ महोला ।
सौकडिया रौ कहियौ सुण सुण, म करो डांवाडोला ।
जो नह हंजलदे रै जासौ, कहिसा छाती छोला ।

4

गिर हरिया बरसै गाजै छै, बादळ मधुरी बाण ।
बणिया बाग रंगीला तणिया इन्द्र-धनुस असमाण ।
मोर पपीहिया सौर मचायौ, बीजा खिवण वखाण ।
जो प्रीतम दरसण नह देसी, पावस लेसी प्रांण ।

5

कान्ह कंवर मोनूं अटकै माई, कान्ह कंवर अटकै ।
झगड़ा करै निडर व्है झूबै, म्हारै गोरस मटकै ।
वन मे ग्वाळ-मडली बींठै, कहणै नागरनट कै ।
ज्यूं ज्यू बरजां त्यू त्यू जालिम, चाढै भ्रगुटी चटकै ।
चाळै लागौ गाया चारै, भमरा ज्यू मन भटकै ।
नदराणी थारा नदण नू, जसुमत कान्हड़ हटकै ।

6

आली म्हारी बांका बिहारीजी नू आण ।। टेक ।।

सावण झड़ लायौ सबर रिप,, काढी ताण कुवाण ।
गिर हरिया वरसै गाजै छै, बादळ मुधरी वांण ।
वणिया बाग रंगीला तणिया, इन्द्र धनस असमाण ।
मोर पपीया सोर मचायौ, बीजा खीवण वखाण ।
जो प्रीतम दरसण नह देसी, पावस लेसी प्राण ।

7

हेली म्हारी बाकाबिहारी जै बाक ।। टेक ।।
ससि वदनी किण विध व्है सनमुख, ज्यू तेसठ रौ आक ।
आस्या थारै सदन आज म्हैं, सजौ सिंगार निसाक ।
यू कहि जावै सदन और कैं, जाणै राव' र रान ।
आवै अठै हुवै अरुणौदै ले न खरे खन ढान ।
कर अवरा न सकुचै क्यू हीं, देत धिठाई दान ।

8

थे नव निहचै तारो बाला, थे नव निहचै तारौ ।
करुणानिध जगदीस कहावौ, थारै न म्हारौ थारौ ।
भ्रगु लाति दीनी छाती मे, खून कियौ उण खारौ ।
आप नमण कीधी उण आगै, सो जाणै जग सारौ ।
बाका बिहारी मंगळकारी, सकट माहि ऊबारौ ।
दीनबधु बिछळ विसवनर खिणविण विधन निवासरौ ।

स्फुट-गीत

गीत जीव दया री महमा रौ

जालम सूं डरै त्रिणां सूं जीवै, मदत नकौ मारियै मुवै ।
वाघ थकै जांणौ वीसारै, हिरणां लारै काय हुवै ।।1।।
रवि ऊगै आखेटां रमणौ, पूगै देखै खोज पगा ।
म्रगा न थारौ बाप मारियौ, मारे तू किम खून म्रगा ।।2।।
कांधै लिया बदूक कापुरस, खेलै दाव विकार खरै ।
मार कुरंग मास रै मांटै, क्यूं हर हूंत कुरंग करै ।।3।।
त्यागै दया सिकार तेवड़ै, करड़ा पाप जिका रै केड़ ।
जोखौ करै वेड़ रा जीवां, वांका जिकै कसाई वेड ।।4।।

गीत जाटा री तारीफ रौ

धानां रा कोठार भरै धणिया रा,
कपि खायां नै बुरा किण ।
वणै सदा जाटां सू बसती,
बसती सोभ न जाट विण ।।1।।
काधै हीरावळ कांबळ कांधै,
टिपस करै कर जांणै टौक ।
चौक तणा सिरदार चौधरी,
चौधरियां सू फाबै चौक ।।2।।
ठगां तणी नह चलै ठगाई,
वात ऊपजै तुरत विचार ।

जाटा सू गांमा री जाणत,
जाटां धर पाइवा जैकार ।।3।।
पैड़ौ चाढै प्रथी नूं पोखै,
क्यावर चित ऊधरै करै ।
करमा धनौ हुया यारै कुळ,
भगता सिध जग साख भरै ।।4।।

गीत नाजोगा पूत रौ

सिरै बैस रच अैस प्याला पियै सराबां,
लाल चष षतग बाधै लपेटा ।
बाप रा घातका तणा न किया बरंग,
बाप रौ भोगवै पटौ बेटा ।।1।।
गवाड़ै तायफा चढ़ै मसतक गजा,
साम नू कहै सोह बाधसा सूत ।
नह लियो पिता रौ वैर लाजै नही,
पिता रै ठिकाणै विराजै पूत ।।2।।
जोड़ रां पास बैठा मगज जणावै,
चित महीं आबरू गिणै चौषौ ।
जीव हर तात रौ गया अर जीवता,
धरै नही दीकरा रती धोषौ ।।3।।
ओरिया नही जाडा दळा बीच अस,
बाप रै बैर षाविंद तणी बेळ ।
नरां अवसाण जावै जिकौ न आवै,
तरंग नद सींह सगम त्रिया तेल ।।4।।

गीत बिसर गाया नै सतावण रौ

रज राषण जिती नहीं रजपूती,
थापण अधरम सहज थयौ ।

भौमीचारा तणौ भला रण,
गाया घेचण हूंत गयौ ।।1
वीर हूअै नह धरम विचारै,
षटब्रण तणौ कणकौ षाय ।
घालै गाय धकै घोड़ा रै,
ज्यारी न्याय सम्पदा जाय ।।2
इसट न मानै तैण आबरू,
वैरहरा कर जाय बिकै ।
षत्री धेन तगड़ै चढ़ षैगां,
जाणौ झगड़ै धेन जिकै ।।3
सत राखै पूजै नित सुरही,
बाहुज लियै दियै वग बोह ।
वच्छा सुरहिया करै बिछोहौ,
लड़ता ज्यारौ पौहड़ै लोह ।।4

गीत गुण ग्रायकता री नाकद्री रौ

अटक लोप दरवान ढबकर समर ईसरी,
मिळै कोइक गुणी जाय माडा ।
सुणावै गीत जस रा नई भड़ सको,
गीत गावै विपत लाष गाडा ।।
विना सनमान मन काज किम विकासै,
काज घ्रत रौ सरै केम कीटै ।
निज घणी सभा रौ बात पूछै नही,
पात कर सू किसू कमळ पीटै ।।2
नर सहूं देषिया नजर मेळै नहीं,
फायदा नह सूझै बषत फीकौ ।
जीवतौ मुऔ चित हूंत सोचै जई,
काव्य चारण घरै हुवौ कीकौ ।।3
षळक मे बिया जिम षेत कांसू षड़ै,

जूग लद कतारां साथ जासू ।
प्रथी पुड़ जीव सू जिकै साषम प्रभू,
इसी ओळग करण नथी आसूं ।।4

थळवट-बत्तीसी

गाधी जेथ न सचरै, नही बजाजां हट्ट ।
सभा नही कवि मंड़ितां, बुरौ देस थळवट्ट ।।1
जठै भट्टी सू फूल मद, काढै नही कलाळ ।
जठै अतर नह चौनणा, नह फूला री माळ ।।2
जठै वसै भूता जिसा, मानव बिना मुवांह ।
ढोल ढमकै नीसरै, पाणी अंघ कुआह ।।3
जठै पुरा नह संचरै, उतै झाड़ अभग ।
विमळ वणै किण विध वसन, साबू जळ नह सग ।।4
जठै कढ़ीजै कोहरा, जळ माडा अठ जाम ।
थळ माडा लाधै नहीं, माडा आवै गाम ।।5
नर भूखा तर झंगरा, घोरा धूर उडत ।
अळगा अळगा गांम है, जठै म जावै कत ।।6
नीर प्रघळ तर ठाही नह, आवै लुआ लपट्ट ।
नोज दिखावै नारायण, ऊनाळै थळवट्ट ।।7
ऊठै बळ थळ ऊजळा, किरणा तपै कुघट्ट ।
दुख दायक दोजख ज्युंही, ऊनाळै थळवट्ट ।।8
होळी दीवाळी बिना, गोहू गुळ थळ गाम ।
औरा दिना नह वापरै, रांक किया नर राम ।।9
लागै गांमां लायगा, ऊनाळै थळवट्ट ।।
बरसाळै ही कोहरा, पूर रहै पणघट्ट ।।10
नदी सरोवर जेथ नह, नह गिर निरझर पात ।
कीजै थळवट री किसू, वरसाळै ही बात ।।11
जीकारा विण बोलणा, अर सिनांन विण अंग ।
मारग सीतळ छांह विण, विना घौळहर ध्रंग ।।12

पीवै वारी बाघ प्रज, ऊडा खारा अब ।
जैन मिळै नह बभ जळ, मरौ भलां ही बब ।।13
सास पियै पीणा सरप, जुवा रुधर पिय जाय ।
पांणी खारौ पीण नू, किण विध प्यास बुझाय ।।14
पौ फाटा चालै पही, सिर आया किरणाळ ।
नीठ नीठ पहुंचै कहै, धोरा हंदै ढाळ ।।15
पंथी मारग पातरै, हिया फूट हिय हार ।
जबुक हूहूरव करै, सूनी माळ मझार ।।16
सुपने ही इण देसडै, श्रवण रसण सुखदान ।
नर न सुणै खावै नही, पिकवाणी पकवान ।।17
नह जांणै दारू नसौ, सौधा तणी सुबास ।
जळ तरणौ जांणै नही, वसिया थळवट वास ।।18
थळवट माझल कीध थित, सूनह लोक जडग ।
बरसाळै ढाणी वसै, सूना गांम भड़ग ।।19
उमग जंवाई आविया, कै दीयाळी रात ।
थळियां घर दीवौ हुवै, वसुधा जाहर बात ।।20
थल हंदौ पूठी रखौ, अेवड़ जांणै आथ ।
सुतरज जांही करण रौ, हूनर ज्यारै हाथ ।।21
नकूं भरोसौ भाग रौ, नकूं भरोसौ राम ।
सदा भरोसौ केण रौ, करही थळियां काम ।।22
फोगां बन फूलै फळै, कुंभट खेजड़ कैर ।
थळवासी राजी थियै, सुख पावै वन सेर ।।23
परहण मैला पंगरण, सुचिता सूं सौ सौस ।
पाणी आवै दीवड़ां, होका चम्मड़पोस ।।24
कांधा ऊपर कांमळौ, लाठी कर में लेंह ।
अेवड़ चारण जाय सह, दीवड़ छाछ भरेह ।। 25
जळ मतीर अम्रत जठै, मानै मेघा मद ।
हाटा सू पीवै हरख, कैर कुसम मकरद ।।26
काळिगा तूसा कुळी, हूचा हूत जियत ।
ऊमर दिन औछा करण, पगी राब पियत ।।27

साल ठिकाणै झूंपड़ा, भीत ठिकाणै बाड़ ।
बाग ठिकाणै फोग बन, लिखिया जिका लिलाड़ ।।28
थळवासी भटकै थळा, विच सत सग वसै न ।
नह धोवै मुख नीर सू, दातण दत घसै न ।।29
तरतुक हूनर चाच तिम, जिकै लगाड़ै दत ।
विकळ हुवै जळ वासतै, चातक ज्यू विळपत ।।30
ऊटा हळ घर आक रा, ऊटा दुद्ध पियत ।
सदा सोक दुख मे रहै, मुख मे पीळा दत ।।31
बधिया केस कुबास वप, जगळ थळ नर जोय ।
भूल जाण चित भै-चक्के, लसै विदेसी लोय ।।32

वीर-गीत व अन्य

गीत पाबूजी राठौड़ रौ

प्रथम नेह भीनौ महाक्रोध भीनौ पछै,
        लाभ चमरी समर झोक लागै ।
रायकँवरी बरी जेण बागै रसिक,
        बरी घड़ कँवारी तेण बागै ।।1
हुवै मंगल़ धमल़ दमंगल़ बीरहक,
        रंग तूठौ कमध जग रूठौ ।
सधण बूठौ कुसुम बौह जिण मौड़ सिर,
        बिषम उण मौड़ सिर लोह बूठौ ।।2
करण अखियात चढ़ियौ भलां काल़मी,
        निवाहण बयण भुज बाँधिया नेत ।
पँवाराँ सदन वरमाल़ सूँ पूजियौ,
        खलां किरमाल सूँ पूजियौ खेत ।।3
सूर बाहर चढ़े चारणाँ सुरहरी,

इतै जस जितै गिरनार आबू ।
बिहँड खल़ खीचियाँ तणा दल़ विभाड़े,
पोढियौ सेज रण भोम पाबू ।।4

गीत बलूजी चांपावत रौ

ए आगम कथन जैसहर आवै, पोह धू जांणै मेर प्रमाण ।
मोनै अस रीझे मोकलियौ, देसू अस बदलो दीवांण ।।1
जग पुड़ वचन कहै जोधपुरौ, पता बचन नह षता पर ।
दहबारी कौंकल हुवै तण दिन, भाड़ौ असचौ लीध भर ।।2
प्रभणै गोपालोत यसी परां, जाँण उदैगिर रीत जही ।
आहाड़ा अस तसरौ अदलो, नरंद बलू चूकसी नही ।।3
अमर सुछल़ गजगाह आगरै, रण चढे घणा मार सू रोद ।
चलतै दल़ घाटी चीतोड़ा, साकुर भर लीजै सीसोद ।।4
भिड़ै षुरसाण रांण दल़ भागां, समहर असुर भाजिया सार ।
उभै दलां निजर जद आयौ, अस नीलो कमध असवार ।।5
घाट निराट अहाड़ा घटता, झाट षगां अर घाट जलू ।
नरपुर तणौ बचन निरवाहे, बसियौ सुरपुर पछै बलू ।।6

गीत महाराज पदमसिंघ वीका बीकानेर रौ

पदम साह दरगाह जिका कीध खापां पखै,
चढै उण धकै कुंण साव चाखै ।
समर अणचूक खळ दळ महीं करण सुत,
रूक किम खापटां मांहिं राखै ।।1
मुहम दिखणाद अवरंग दळ मुसाहिब,
हुवौ हमगीर लेवा दुरंग हेम ।
कटहड़ै दिखायौ वाढ केवाण रै,
केविया वाढ नहं दिखावै केम ।।2
राठवड़ उरड़ जम हूंत भारथ रचै,

करै गज घाव नारंग मचै कीच ।
वीकहर खाग अबखास में बजाड़ी,
बजाड़ै न्याव खग अरि चमू बीच ।।3
उरस लागै भुजा मचाणै अरियण,
कमध सत-पुरस सामत कलू रा ।
जैत वसोधरण धरा सूरा जिकै,
सार बळ पर धरा हुअै सूरा ।।4

गीत दुरगादास राठौड़ रौ

दुरगादास सोनिग दुहु भीच ग्रहिया दुजड़,
कथन पतसाहनै यू कहावै ।
जसारा डीकरा बिना गढ जोधपुर,
षत्री अन षसै सुज षता षावै ।।1
आसक्रन तणौ बीठल तणौ कहै अेम,
पात रछपाल ग्रहिया षड़ग पॉण ।
राजरौ थापियौ राज न लहै रवद,
धणी म्हैं थापसा जकौ जोधाण ।।2
भीर म्है जका भीरी विसभर,
गाज कुण सकै जसराज रा गाव ।
राव एक थाप ऊथापिया रिड़मला,
रिडमला पुडदडी राषिया राव ।।3
जके भड छेड़ षोसाड़ अकबर जवन,
हाथ त्है हीया हत हणिया ।
पाण जोधाण अदू सीग फल पामिया,
साह मोकालिया जगत सुणिया ।।4

गीत ठाकर दुरगादास करणौत रौ

हजरत गोरिया व्याकुळ व्हैं हेली,

षत्रवट आळ आसउत षेली ।
लांठै रोक घाटियां लेली,
हजरत नावै लाल हवेली ।।1
ख्वाजासरा ऊपरां खीजै,
भाषै हुरम विरह दुख भीजै ।
कमधज मारग बंध न कीजै,
दिली दिलीपत आवण दीजै ।।2
षड़ग पकड़ दिषण रा षूंणां,
लुकियौ साह अभिनमां लूणा ।
लालकोट अंबषास अलूणा,
साह आविया हुअे सलूणा ।।3
औरग सौ मण सूत अलूधौ,
सत्तर बौहत्तर सू न सलूधौ ।
राह दिषण दुरगा तै रुधौ,
सूरत सू बीजापुर सूधौ ।।4

गीत उत्तमचंद भंडारी रौ

समर बरुथां घड़ा खंडण करण सतारौ,
प्रजा मन मोद मंडण पतीजौ ।
दुआ कुसलेस इम सूझसी बीच दिल,
बूझसी जदी विजपाल बीजौ ।।1।।
खजानां भरण पोखण गुणां बरण खट,
अदल नेकी अमल करण आणद ।
चैन रा नद यूं प्रगटसी मांझ चित,
निडर तौ बूझ करसी गुमन नंद ।।2।।
फैल दळ बिरद दिग-विजै रा फबावण,
थिरू सुरताण रा दबावण थांन ।
इसी उतमेस मन मंझारां आवसी,
महाबुध्र आवसी पूछसी मांन ।।3।।

बखाणा रतन जड़सी कनक बिचाळै,
दुरद गणा दुरद-सा चंदरसी ।
डमर सुभवास चद्रक तणा डावड़ा,
धूंन चंद्रक नरां नाथ धरसी ।।4।।

अंग्रेजों के खिलाफ के गीत

आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर,
आहस लीधा खैचि उरा ।
धणियां मरै न दीधी धरती,
धणिया ऊभा गई धरा ।।1
फौजा देख न कीधी फौजा,
दोयण किया न खला डला ।
खवा खाच चूड़ै खावद रै,
उणहिज चूड़ै गई यला ।।2
छत्रपतिया लागी नह छाणत,
गढपतिया धर परी गुमी ।
बल नह कियौ बापड़ा बोता,
जोता जोता गई जमी ।।3
दुय चत्रमास बाजियो दिखणी,
भोम गई सो लिखत भवेस ।
पूगो नही चाकरी पकड़ी,
दीधो नहीं मरैठो देस ।।4
बजियो भलो भरतपुरवालो,
गाजै गजर धजर नभ गोम ।
पहिला सिर साहब रो पड़ियो,
भड़ ऊभै नह दीधी बोम ।।5
"महिजाता चीचाता महिला,
अै दुय मरण तणा अवसाण" ।
राखो रे किहिक रजपूती,

मरद हिन्दू की मुस्सलमाण ।।6
पुरजोधांण उदैपुर जैपुर,
पहु थांरा खूटा परियाण ।
आंकै गी आवसी आकै,
बाकै आसल किया बखाण ।।7

गीत लाहोर रा महाराजा रणजीतसिंघ सिक्ख रौ

अमल कियौ कसमीर मुलताण कीधौ अमल,
गिर वडा अटक नद पार गाहे ।
जाट निधड़क थकौ कहै हू जोवसू,
मकौ मथरा तणा वैर माहे ।।1
श्रीनगर कोट लाटा तंणी सामणी,
अषै दियौ बाबा तणौ अस ।
तेज रणजीत हद तेण निस दिन तचै,
वचै नह साह अहमद तणौ वंस ।।2
देस बरफांण रौ पियै विष दहल सुण,
फौज पसरा दियै समंद फाटौ ।
लाभपुर धणी गढ सहर भुजबळा लियै,
घर सदोजई रै थियौ घाटौ ।।3
खालसा तणौ इकबाल दीपग खतंग
निकर गिलजां पतग जेम निजळै ।
असुर धर धणी सिंध साह अपणावसो,
दिनां में पावसो खैंग दिजळै ।।4

गीत : भरतपुर रा जाटा रा जुद्ध रौ

उतन विलायत किलकता कांनपुर आविया,
ममोई लक मदरास मेळा ।
यलम धुर वहण अंग्रेज़ दाटण यळा,

भरतपुर ऊपरा हुवा भेळा ।।1
अली मनसूर रौ वस कीधौ असत,
रेस टीपू विजै त्रबट रुड़िया ।
लाट जनराल जरनेल करनेल लख,
जाट रै किलै जमजाळ जुडिया ।।2
सेन रिजमट असख पलटणा तणै सग,
भड तिलग बग किलग तणा भिळिया ।
अभग जग भरतखड पारका ऊसर ऊवै,
मारका वजद्र रै दुरग मिळिया ।।3
सराबा बोतला पीया छक छक सड़क,
कीया निधड़क हिया हरवळा कोप ।
वीररस ओपिया हला विध-विध वधै,
टोपिया दवादस तणा टोप ।।4
पीठ बडबडात कूरम छटा प्रळै री,
मही खड खडात हैजम मचौळा ।
मुनि हडहडात घडघडात तोपा महत,
गयण गडगडात पड झाट गोळा ।।5
अ:क दुत सोम सम नमै लोयणा असम,
धूआ तम तोम लग धूरा धूरा ।
तठै सूर लडैता थटै घण तदूरा,
हरख सूरा निरख रभ हूरा ।।6
करै तदबीर गोरा चढण कागुरा,
तिलग फररै फुस्त फैल ताळी ।
छूट पिसतोल पड होल सायर छिलक,
करावीण सिलक किलक काळी ।।7
तुरा खुरताळ बज तूर तासा त्रवट,
माळ फरहर गजा धजा माळा ।
अड़ण अणडोल जाटापत आवियौ,
तोल खग कपाटा खोल ताळा ।।8
आग झड़हडै डूडै रमै रम आगणै

नाग फण नमै करै मसत्र नागा ।
कठा लग कवादी व्यूह रचना करै,
लठावन तणा भड़ लड़ण लागा ।।9
धड़ा सिर जोम ताजै धड़ां घमा घम,
कागुरा तरफ बाजै कुहाड़ा ।
किलौ गिरधरण ओळै रयण बंध कड़ा,
विरोळै चौवड़ा फिरंगवाड़ा ।।10
दिया सूजा तणै पैंड तोपां दिसा,
सफीला तणा नह लिया सरणां ।
वीजळां रीठ पावै सझा विलावै,
विजा करपूर करपूर बरणां ।।11
अणी जटवाड़ वीरा तणी आफलै,
विवध तीरां तणी मची वरखा ।
हुसम अंगरेज री आठवाटां हुई,
पूर पाटां थई रुधर परखा ।।12
अराबा तणौ असबाब अपणावियौ,
भट किलकता तणौ भागौ ।
आड रोपी वज्रदं झीक वागौ असम,
लीक टोप पटक पथ लागौ ।।13
अमावड़ वनां मे हुई लोथां अनन्त,
चढै घोड़ां बात दिगन्त चाली ।
सांथरा दिराणां हजारां साहिबां,
खुरसियां हजारा हुई खाली ।।14
अण खरब कळहतर कहै दुज अेकठा,
गरबवां किताबां तणा गळिया ।
थया बळहीण लसकर फिरंग थांन रा,
चीण ईनांन रा इलम चलिया ।।15
मेर मरजाद रणजीत आखाड़मल,
खेर दीधा डसण जबर खेटै ।
पुखत गुरगम मिळी सैन पण पांकियौ,
भरतपुर फेर नह उसर भेंटै ।।16

गीत भरतपुर रा जाटां री राड़ रौ

पेलै कवादी तिलगा वाड़ा जगी राग घोरै पोष,
महा जोरै आप रंगी लीक सूबा मौड़ ।
गैण थंभ तूटै क्यूं भरत्थानेर चक्र गोरै,
ठोरै षभ राम कैसौ किवाड़ां री ठौड़ ।।1
तीर तोपां कराबीणां दूरबीणा लाया तोल,
बोल फैर उडाया पाषाण तेग वाण ।
किलै रैण वाळै माया आसुरी न लागै कजी,
अेवजी फाटका थाया हली चक्रिपांण ।।2
लाघ षाई पूर पाटा षहै कंपू षेघ लागा,
वहै षाटां घायलां निराटा भोमवार ।
केम भाजै लाट राटां जाट राटा वाळौ कोट,
कपाटां ठिकांणा ऊभा नंदरा कंवार ।।3
भुरज्जाळ आया श्रीगोपाल काम पाळ भीड़,
निराताळ चाळ बाधै जीतौ सूजानंद ।
लेर बीडौ कंपणी सू जमीदारा थान लेबा,
फौजां फिरै फिरंगी ना नाखै फेर फंद ।।4

गीत अगरेजा रै विणास री अरदास रौ

सति वाहरू आ अरज सुणीजै, रेणा षत्रिया रै रापीजै ।
दध रै तळै किलकतौ दीजै, काळौ मुष गोरा रौ कीजै ।।1
परसै सुपच दुजां भय परहर, थान द्वारका जिसड़ौ थरहर ।
हेकोकार मडाणौ हर हर, निरदळजै अगरेजा नरहर ।।2
भरतषंड सामौ भाळीजै, वछां सुरभिया दिन वाळीजै ।
पाध बधा दासां पाळीजै, गोपीवर टोपी गाळीजै ।।3
थापांणौ कासी मऊ थांणौ, बिच ब्रजदेस तंदूर बजाणौ ।
मेटीजै टीकम मेछांणौ, हव सारै कीजै हिंदवांणौ ।।4

गीत नींबावत साधा रौ

हूंणौ हूंतौ सो व्है गयौ गल्ला सुणायां हुवै कीं हमै,
कीधौ नीबावता धाया रंग में कुरग ।
जाटां नै दूर सू गोरा दुरबीणा दे दे जोता,
दादू वाळा होता तो ना तूटतौ दुरंग ।।1
सोर झाळा ऊठता बाजतां षगां भार साहै,
गाजतां घोर ज्यू गोळा बूठता गरम्म ।
प्रथी सारी कहै माय होता जो दयाल पथी,
भरत्थानेर रौ नत्थी जावतौ भरम्म ।।2
वैरागिया सलीमाबाद रा काम कीधौ बुरौ,
घोरौ या ऊपरां राम काळ रौ गुरज ।
नागा जो नराणै वाळा राषतौ जौ जुध नैड़ा,
भरत्थाणै वाळौ न गाजतौ भुरज ।।3
दादू रा आबेर चाड वेळा केई वार सीस दीधा,
कुरम्मां री धरा रा निरम्भै कीधा कोट ।
गुरु व्है सुणाया नाम कंठी बंधी झाल गळै,
फिरंगी सू साधी तेणा नींबावता फोट ।।4

गीत वैरागी साधा रौ

हुवौ कपाटा रौ खोलबौ हतै फिरगी थाटा रौ हलौ,
मंत्र षोटां घाटां रौ उपायो पाय माग ।
भाया भड़ा फाटां रौ हरीफां हाथ दीनौ भेद,
ऊभा टीका वाळा कीनौ जाटां रौ अभाग ।।
माल खायौ ज्यारौ त्यांरौ हियै रती नायो मोह,
कुबता सू चायौ भायौ नहीं रमाकंत ।
बेसासा द्रोह सू काम कमायौ बुराई वाळौ,

माजनौ गमायौ नीबावता रै महत ।।2
भूप बिया च्यारू संप्रदाय कौ भरोसौ भागौ,
लागौ काळौ सलीमाबाद नू गाडा लाष ।
नागा सायबां सूं मिळे भिळायौ भरत्थानेर,
राज कंठी बधा रौ मिळायौ धूड़ राष ।।3
आगरा सू लूट सूजै अेकठौ कियौ छौ आणे,
षजांनो वौ तूट ताळा लूटिजियौ षास ।
कंपणी सूं बेध मोटौ जागिया पालटै किलौ,
वैरागिया हूता हुवौ जाटा रौ विणास ।।4

सुजस-छतीसी

सेस हिमालय श्रग, सुर गय हय नय पय दरस ।
रुद्र सिलोचय रंग, जय जय लकवरीस जस ।।1
हुवा जसोधन पुरस जे, इल बड मत अवदात ।
ज्यारी कही पुराण मे, व्यास तपोधन बात ।।2
कवियण पौहरै करन रै, नित ले ज्यांरो नाम ।
जिके जसोधन पुरस धन, बाँका करण विराम ।।3
निरवाहै पण आपणौ, जे चाहै जसवास ।
माँगण ज्याँ हूंता मिले, नैंह जावही निरास ।।4
ज्यौ जस छत्र तणावियो, माथै जगत मझार ।
जिके छत्रधर जाँणणा, सुदताराँ सिणगार ।।5
जस छल जागणहार, धरपुड़ त्यागणहार धिन ।
अरुणानुज असवार, कर छाया ज्याँ सिर करै ।।6
लिख लिख बाँचै लोक, के सीखै चरचै किता ।
सुणै हरण मन सोक, दातारा जस दूहड़ा ।।7

देस सिंध ऊनड़ दियो, दीधो सिर जगदेव ।
बाँका जसरै वासतै, दाता नकूँ अदेव ।।8
जस चाहै वाहै जिको, माँसा चूकी हड्ड ।
अखियाताँ बाताँ वचै, जरा काल़ डर छड्ड ।।9
सदा करै सनमाँन, मीठा बोलै हँसं मिलै ।
दिऐ धरा धन दान, जस खाटै ठाकुर जिकै ।।10
सोई पुरस सुलच्छणौ, सोइ ज पूत सपूत ।
सोइज कुल़रो सेहरौ, ताँडै जसरथ जूत ।।11
ताँत तणका गायकाँ, ईहग वरण उचार ।
सुणै नवो नित निज सुजस, साँचा ऐ सुदतार ।।12
आल़स बालो मगणां, उर मगणां उदार ।
बक उदारा विसव मैं, बाल़ो जस बिसतार ।।13
कवि पडित जाहिर करै, मोटां रा जसवास ।
छोटां रा जसरो हुवै, पहियां हूंत प्रकास ।।14
हातमताई हरख सूं, पोषंतो बहियांह ।
अमर नाम उणरो, अजै, की जादा कहियांह ।।15
बाल़पणै मै बाजिया, जेहल रा जस ढोल ।
न कूं बसावै क्रपण नर, बूढा ही जस-बोल ।।16
जस न हुवै धन जोड़िया, धन दीधां जस होय ।
बीसलदे बीकम तणौ, जग मे विवरो जोय ।।17
जाहर जस खुसबोह जुत, सुदता कुसम सुसोह ।
कांटां सूं भूँडो क्रपण, वप अपजस बदबोह ।।18
क्रपणा जस भावै कठे, विधि विमुखा नू वेद ।
बाँका भोजन नँह रुचै, ज्यारै वप ज्वर खेद ।।19
क्रपणा जस भावै कठै, गुरु विमुखां नू ग्यान ।
असुरा दया न ऊपजै, चंचल़ चित्ता ध्यान ।।20
मैलो अत अदतार मन, रुच जस तणौ रहै न ।
तन काल़ो विसहर तणौ, कंचुक स्वेत सहै न ।।21

पगी गंग प्रवाह, निरमल़ तन कीधो नहीं ।
चित क्यूँ राखै चाह, तिके सरग पावण तणो ।।22
है सबोधन वासतै, बल़ै फिछाणण बक ।
पिण अदतारा नाम नँह, अमर होण इक अक ।।23
जस गाडा भरियो जुड़ै, जग सो करो जतन्न ।
औ आभरणां आभरण, रतना सिरै रतन्न ।।24
क्रपणाँ री मतवाल़ की, करसण खाचे खेत ।
नीर विलोणो है नही, दत अन रो गन हेत ।।25
इक कपि राकस दैत इक, दूणा दोय दुजात ।
या जिम नांम उदार रो, चिरंजीवै सुखदात ।।26
मच्छा रै जल़जीव जिम, सबजी तरां सदीव ।
अदतारा धन जीव इम, जस दातारा जीव ।।27
साँभल़ वित समपै नहीं, बडका तणा बखाण ।
काह्व जिका कुलीनता, उर माझल तू आंण ।।28
साँस छतै जीवै सकल़, ऊमर रै आधार ।
जससूं जीवै जगत मे, सांस पखै सुदतार ।।29
आठ पौर जस इंदुरी, जिण घर दुत जागत ।
तिम घर सूं अपजस तिमर, अल़गा थी भागत ।।30
जसरी गत अदभुत जिका, सत धारियां सुहाय ।
नर जीवै नरलोक में, जस अमरापुर जाय ।।31
कुल़वती सूं क्रीतरौ, उलटौ है आचार ।
वा न तजै घव आपरौ, जग इणरौ संचार ।।32
नर विवनै वा नंह रहै, जग मे आ रह जाय ।
कुल़वंती सूँ क्रीतरी, उलटी गति इण भाय ।।33
थियो सदय सुम निज थुई, टींटभ हूंत क्रसान ।
उणरा बाल उबारिया, महामन्त्र जस मान ।।34
दियै पैंड दातार हो, दातारां रै पंथ ।
ग्यानी पुरसांरा किया, ग्यानी चरचै ग्रंथ ।।35

हुवै जेम हर हंस सूं, वासर कमल़ विकास ।
एम धरम जस हुवै उभै, दत सूं बांकीदास ।।36
सुदता इणनूं सांभल़ै, अमी नजर सूं ईख ।
क्रपणांरौ, इण में कुज़स, सुजस छतीसी सीख ।।37
सती बल़ै जूझै सुभट, करै ग्रंथ कविराज ।
दाता माया ऊंधमैं, नाम उबारण काज ।।38

संतोष-बावनी

सोरठा

मन गज जग सर माहि, लोभ ग्राह बस करि लियो ।
तुरत छुडावण ताहि, होय संतोष हरि हमैं ।।1

दोहा

बंक तेज कारण वणै, निहचल़ तप निरदोष ।
ग्यान मोक्ष कारण गिणै, सुख कारण संतोष ।।2
आथ अटूट अखूट अन, प्रजा घणौ सुख पोष ।
धन बांका ऊ धंगड़ौ, साहिब जे संतोष ।।3
सुणै पढ़ै नह सासतर, सेवै नंह सतसंग ।
सुखदायक किम सांपजै, उर संतोष अभंग ।।4

सोरठा

तरु संतोष तणेह, नर छाया बैठा नहीं ।
कलकलती किरणेह, बांका भटकै लोभ बन ।।5

अत चिता, अभिलाष, परहर मारग पेमरौ ।
रे सतोषहि राख, बिण चिता अभिलाष बिण ।।6

दोहा

बाका धीरज धरण सू, हुवै न कूंजर हाण ।
की घर घर भटका करै, कूकर अधिक कमाण ।।7
उर नभ जितै न ऊगमै, औ सतोष अदीत ।
नर तिसना किसना निसा, मिटै इतै नह मीत ।।8
ज्यूँ ज्यूँ लालच खार जल, सेवै दुरमत सग ।
बाका अत त्यूँ त्यूँ बधै, त्रसनां तणी तरंग ।।9
गलो कटावै लोभ यो, लोभी काटणहार ।
लीजै कांनौ लोभ सू, मिल सतोष मझार ।।10
परवाही पुरसां तणी, मेट प्रतीत मनाह ।
वप ऊतरिया चढ़त विष, परवाही पवनांह ।।11
आवै धन ज्याँ आविया, जिके नवी नित जोड़ ।
अदभुत गुर लालच अठै, कला सिखावै कोड़ ।।12
चित सू आगम चितवै, आ मजबूत उपाध ।
बक जुड़ै नह वांछियौ, इण कारण व्है आध ।।13
मांनवियाँ मन बन मंही, लागी लालच लाय ।
बाँका इण सतोष विण, बीजै केण बुझाय ।।14
लालच री दौड़ै लहर, भवन बिया धन भाल ।
बैठो थावर बारमो, कांधै आण कराल ।।15
गह चढिया संतोष गज, धर पड़ ज्यांनू धोक ।
चढिया ज्यानू चहरजे, लालच गरधभ लोक ।।16

सोरठा

लालच रस रै लाग, मांखी लपटाणी मधू ।

उडणो बलियो आग, जिणरै मुसकल जीवणो ।।17
भव दरियाव भयंद, लहरा ऊठै लोभरी ।
माहे ज्यां मतमद, मनख घणा डूबै मरै ।।18

दोहा

के प्रपच कुपिया करै, रुपिया जोड़ण रोक ।
परपीड़ा पेखै नहीं, ऐ लोभीड़ा लोक ।।19
आथ धरै घर औररी, यण इस्ट दे बीच ।
आ आछी न करै अठै, न दिये पाछी नीच ।।20
आणै मोती अबर सूं, चीण फिटक चित चाय ।
रोहिण गिर खोजै रतन, सिंघलदीप सिधाय ।।21
जेथ बरफ बरसै जमै, परबत सिखरा पत ।
बक सियालै लोभ बस, भालै चीम भुटंत ।।22
आणै हिलंवी आदरस, वोह यमनी बोदार ।
हाथी झरता हबसरा, कसतूरी तातार । 23
छाछ कवांण खुदंग सर, समसेरां ईरान ।
आणै अस ऐराक सूं, थटण घणो धन थान ।।24
धज फरकावै जीवतो, जोड़ कोड़ धन रोक ।
नाखै मर उण ठौड़ नर, नाग हुवै निरमोक ।।25
मोल मगाड़ै चंद्रमण, दहम सुथंभण दाह ।
दाह हिए लालच दहण, जतन न थंभण जाह ।।26

सोरठा

आवै जो अकलीम, सात हेक सुरतांणरै ।
नहीं जिका दे नीम, ईछै लेवा आठमी ।।27

दोहा

जो तू चाहै मुकत फल़, धूनां मन धीरच्छ ।
तोष मानसरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ ।।28
पोहचै काल़ा-पाणिया, हेम भरेबा हाट ।
छाती लालच छाकिया, करड़ी बजर कपाट ।।29
नर सपत विलसै नही, जाझा दुख सू जोड़ ।
लियो परख लालच लहर, खरी बुरी आ खोड ।30
हेक रती नह हालियो, सोनो रावण साथ ।
लेजावण लोभी करै, आथ साथ असमाथ ।।31
यल़ भीतर खाटे अधम, दाटे राखै दाम ।।32

सोरठा

चढिया जै कर चाह, लालच घोड़ै ललकणै ।
बाँका व्है बदराह, पड़िया दीठा पुरषड़ा ।।33

दोहा

नाचै लाज निवार नित, बांका जाण बनोक ।
जग मे भटकै स्वान जिम, लोभ तणै बस लोक ।।34
नागलोक नरलोक की, नँह सुरलोक समाय ।
जेथ तेथ प्राणी जल़ै, लालच हंदी लाय ।।35
लोभी कापड़ ढक्किया, तोपिण उरिया तेह ।
है उरिया ही ढंक्किया, जन संतोषी जेह ।।36
वायक सतगुर वैदरो, घणौ करै हित घोष ।
रे इण लालच रोग रो, सद औषद सतोष ।।37
हिये बसाई हरष सूँ, मधुसूदन महाराज ।

नर जिणसूं ललचै नहीं, सो त्रिभुअण सिरताज ।।38
गुरु प्रसाद संतोष गज, जे नर बैठा जाय ।
जग लालच कूकर जियाँ, लाल सकै न लगाय ।।39

सोरठा

जे सतोष सुमेर, चढ़ बैठा मानव चतुर ।
देख नवै ज्याँ देर, कुवचन सर लागै कठै ।।40

दोहा

सबर राख कुसमै समै, कासू घबर करीस ।
खिण खिण ले जगची खबर, जबर सगत जगदीस ।।41
जग संतोष तुषार नर, बसै निरंतर बक ।
तिया लोभ ग्रीषम तणी, सुपनै ही नह सक ।।42
सिध साधक राखै सबर, सबर तजै मतमद ।
सबर काज सुधरै सहू, साईं सबर पसद ।।43
जिण दिन ओ मन जाणसी, सोनो धूड़ समान ।
उण दिन सूरज ऊगसी, सोनारो सुखदान ।।44
जग थित झूठी जाणणी, मूठी भीड़ म रख्ख ।
माया मेवो माडुवा, चगा चाखव चख्ख ।।45

सोरठा

दुज जंगम दुरवेस, जोगी संन्यासी जती ।
लोभ न राखै लेस, बाका उणनूं बंदिये ।।46

दोहा

ज्यारै खाख विछावणो, ओढ़णनूं आकास ।

ब्रह्म पोष संतोष वित, पूरण सुख ज्याँ पास ।।47
खलक मँही वै खोजणाँ, सुच प्रसन्न सुख संत ।
धार जिके संतोष धन, विण परवाह वसत ।।48
बाका हरष न व्रधि सूँ, हाण हुवा नह सोक ।
हरि संतोष दियौ हिये, तिणनू दीध त्रिलोक ।।49
आया जेथ प्रसन्न हुवै, वधै घटै नह वित्त ।
प्रभु राखै उण पाखड़ो, सदा अमीणौ सत्त ।।50
बाका वेद पुराण बिच, सायद आ छै सूत ।
सुख संतोष सराहियो, आप दत्त अवधूत ।।51
लालच बलती लाय मे, बालो बडी बलाय ।
बहती नदी बहाय द्यो, हूवै राजी हरिराय ।।52
मन सतोष प्रकासवै, वन श्रीखड विकास ।
आलस उरग न आभडै, तो की कहणो तास ।।53
सापुरषाँ संतोषिया, खाणा जवहर षोण ।
बेलाँ चित्रा बेलड़ी, पारस सयल पखाँण ।।54
अट्ठारासै अठंतरे मोजी फागण मास ।
सुद तेरस सतोष गुण, बरणे बांकीदास ।।55

कृपण-पच्चीसी

माहव सूम मिलाव मत, अैड़ा घरा हिसाब ।
के हल्लर फल्लर करै, पावै कल्लर राब ।।1
अदताराँ घर ऊख रस, नँह कारण मिसठाण ।
मन कारण मिसठांणरो, जठै भूख रस जांण ।।2

ऊख गिरी धर ऊपरै, यल़ खाँडों मय आब ।
तूम्बाँ मीठम होय तो, सूबाँ होय सबाब ।।3
अदता टाणाँ ऊपरै, नाणाँ खरचै नाहि ।
हाथ घसै निरधन हुवां, माँखी ज्यों जग माँहि ।।4
सावण मास सुहावणो, लागै झड़ दल़ लूँम ।
उण दिन ही आसव तणी, सोरभ नँह ले सूँम ।।5
हुवै मुवाँ बिन मुकत नंह, भै बिन हुवै न प्रीति ।
सुधा पियाँ बिन अमरपद, हुवैन दिया बिन क्रीत ।।6
भूपत भणकाराह, जसरा जिके न चांलिया ।
तां ता तणकारांह, गाणां क्यो गरबीजिया ।।7
ऊतर मीठा आखरां, नीपण खारै साव ।
सीलोही बन जालवै, उत्तर हंदो बाव ।।8
कल़ में बुधवंता करै, सौंपड विमल़ शरीर ।
पाँण न मूढ़ पखाल़ही, नदी बहंतै नीर ।।9
जोईजै निज घर दियो, पर घर दियो निकाज ।
आपस में म ऊचरै, सब कूँ जस सज साज ।।10
उत्तर नूँ खाली कहै, उर ज्यां वडी अंधेर ।
उत्तर दिसा सुमेर है, उत्तर मांहि कुबेर ।।11
जस थहरै तो जीभ में, क्रपा हूँत बिधि कीध ।
मंहरै तो मृगसींग में, पैठो बान पसीध ।।12
अंगण मंगण आवियां, उत्तर बेगो अप्प ।
एह महा ध्रम आतमा, ऐ तीरथ ऐ तप्प ।।13
दरब किसी ओपम दियाँ, तो सूँ है सह कोय ।
तो सारीखो तुंहिज तूं, अवर न दूजो कोय ।।14
सोना हंदी लंक सुण, जग तरसै सह जीव ।
जगत पंथ कोय न गिणै, गत थारी हयग्रीव ।।15

करूँ अरज कमलालया, त्यागां बार न तुज्ज ।
जिण दिन ओ जग छौंडस्यौं, उण दिन तोसूं कज्ज ।।16
गरक घणै जल गूदड़ा, ले तन सूं लपटाय ।
अत्थ बत्थ भर काडवै, मन्दिर जलतां माय ।।17
मूल बरण उणईसमो, इक्क बीस मय आन ।
साधहु विध तुम जतन सो, बिस्नुक भो भगवान ।।18
रहो बीवरे रामरस, अनरथ घणो अलत ।।
याहिज है ध्रम आतमा, ऐ तीरथ ऐ तत ।।19
कवियण रसण क्रपाणरो, साजौ हुवै न घाव ।
बीह न इसी बलायरो, सूंमां हुवै न घाव ।।20
पापी पाप न कीजिये, न्यारा रहिए आप ।
करणी आपो आपरी, कुण बेटो कुण बाप ।।21
रीझै विषधर राग सूँ, किया न जिणरै कान ।
कान किया क्यो क्रपणरै, सुणै न क्यों ही ज्ञान ।।22
जवन म्रतक तन क्रपण धन, अन कण कीड़ी आण
धरती मे ऊँडो धरै, जाण भलो निज जांण ।।23
की हुवै तूंबा बांधिया, सूमां हके सत्थ ।
नर डूबै बहती नदी, सायर तरण समत्थ ।।24
दान घणो उत्तर दिये, हूते बित सत हार ।
मुँहडो ले उण मिनखरो, भोभर भीतर भार ।।25
लुल डालो तर लोभरै, झूलै रहिया झूल ।
देणो दान कबूल नैंह, क्रपणां मरण कबूल ।।26
सारा अदतारां मँही, आछो पड़दा-पोस ।
मुँह न दिखावै मंगणाँ, देणो उत्तर दोस ।।27
देणाँ उत्तर कविजणाँ, सुवरण अरथ सनेह ।
सुकवि सूँम सम दाखिए, नही तफावज रेह ।।28

सूधै मन बांको सदा, अरज करै अविरुद्ध ।
वारै लइबा जावणों, देह दई मा बुद्ध ।।29

कायरबावनी

सिव सिवसुत हिमगिरसुता, बिसनु दिवाकर बंद ।
अब कायर उपहास री, रचना रचूं अमंद ।।1
आग न जागै आँखियां, तिण सिर दीधा तंत ।
पल़ पल़ मुख पुल़कावणो, कायर ही उचकंत ।।2
दिन नू रजनी दाखियां दाखै तारावत ।
न दे ओहड़ो वाँ नरां, कनै म राखो कंत ।।3
कंथ म राखो कायराँ, करै नजर जो कोड़ ।
दोयण दल़ बीटो दियां, छल़ कर जावै छोड़ ।।4
कंथ सुहावै ज्यू करो, कायर नावै काज ।
रहै न कायर राज में, रहै जिकां घर राज ।।5
गाडां भरिया गोलणां, सूनो सदन सुरंग ।
कंथ घणाँ ही कायरां, जाणीजै इम जग ।।6
कंथ म राखो कटक में, नर कायर निरलज्ज ।
काल़ा बल़दां काढ़जै, कांकल़ जीपण कज्ज ।।7
काल़ न आवै कायराँ, बालम बिसवाबीस ।
पकड़ै रण घर पंथ नूं, पकड़ै नह पाँडीस ।।8
कायर अधरम कुजस सूं, नीच न डरपै नाह ।
डरपै परदल़ देखियाँ, रण तज लागै राह ।।9
लाखां सठ दे लीजिए, पंडित गुण भरपूर ।
कायर लाखां बेचकर, साहिब लीजै सूर ।।10

भेष लियांसूं भगत नह, हूवै नंह गहणा हूर ।
पोथी सूं पडित नही, ससतर सूं नह सूर ।।11
आवै अनदातार नूं, भारथ खला भलाय ।
पितरेसुर जिण रा पड़ै, नरक बिचालै न्याय ।।12
ज्यू कुकवि की जीभ में, ब्रह्मसुता नंह बास ।
त्यू कायर री तेग मे, नंह कालिका निवास ।।13
अदता केरी अत्थ ज्यूं, कायर री किरमाल़ ।
कोड़ प्रकारा कोससू, नंह पावै नीकाल़ ।।14
मंजन करे सधीर मन, सूरा सारा धार ।।
कायरड़ा मजन करै, आसू धार मझार ।।15
आसू नाखै आंख सू कर हूता किरमाल़ ।
भागल़ नंह नाखै भिड़ज, असहा सिर आताल़ ।।16
बरणी कायरता बड़ी, खोड़ां मांझल खोड़ ।
देखै खल़ मुख मै दिवै, तेग थकां त्रण तोड़ ।।17
कहणो गोल़ां हूंत की, डोल़ा हूत डरंत ।
खल़ दल़ केरी खेह सूं, कायर खेह करंत ।।18
काकल़ समै कुबेलियां, म दे संग महमाय ।
निजरां आगै निमष मैं, हार मोर व्है जाय ।।19
जाणै बल्लभ जीवणो, कायर नाणै कोह ।
लोपै सांकल़ लोह री, लख रण नागो लोह ।।20
आवै लोही ईखियाँ, तन ज्या, भड़ां तिवाल़ ।
अचरज किसो अचेत हुवै, देख लोह विकराल ।।21
ज्यूं कामण पोसाक कर, पाछा नूं पेखत ।
भागल पाछे भालही, भाजंतो इण भंत ।।22
दव विण सारा दाहिया, अथवा खारच अंग ।
नर कायर बाँछै नही, जिण घर माथै जंग ।।23

करसण सेही स्याल् बिल, गिर त्रिय बाँभण गाय ।
समरांगण माह् साधणा, चाहे चित्त चलाय ।।24
लाजाळू बागां मही, कायर कटकां मांहि ।
परसे नर कर रो पवन, सकुचै ससो नांहि ।।25
त्रण दांतां लेणा तुरत, आडा देणाँ पाण ।
भारथ जे पड़ भागणां, अै कुभटां अवसांण ।।26
भागल् भारथ भीड़ में, बाणी सह बिसरंत ।
मुख बापूड़ो मावड़ी, भाईड़ो भाखत ।।27
कांकल् समै कुबेलियाँ, सरकण तणौं सुभाव ।
निगुणां थिर रोपै नही, पाव घड़ी ही पांव ।।28
नर कायर आंणै नहीं, लूण लिहाज लगार ।
धोलै दिन छोड़ै धणी, अणी मिलै उण बार ।।29
कांकल् छोड़े कूदियो, भागल् पोरस-भंग ।
कीधा जाणै काढ़मां, कुड़ नीसरे कुरंग ।।30
कायर थाको दौड़कर ससि सू करै पुकार ।
म्रग ज्यू मुझ बसावजै, मंडल् तणै मंझार ।।31
गत गैंवर कटि केहरी, रमणी हाटक रंग ।
कुच गिरवर लोयण कमल् अै हैं कुसलै अग ।।32
सुख सूं बैठी सदन में, क्यूं पूछो कुसलात ।
तो तन कुसलायत तणी, बालम पूछूं बात ।।33
मूंछ नाक सिर रो मुकुट, ससतर सांम सनाह ।
साबत लायो समर सूं, कै नंह लायो नाह ।।34
मूंछ केस खंडत नहीं, नाक न खंडत कोर ।
पड़ी पुलंतां पाघड़ी, सुकुलीणी तज सोर ।।35
आपड़ियो मो जेथ अरि, तजिया ससतर तेथ ।
लागा धंधै लेण रै, आयो कुसले ऐथ ।।36

धण सुण थारा धरम सू, साबत लायो सीस ।
मोल अबार मगावसू, पाघा बीस पचीस ।।37
पाघ बजाजा पूंछ पी, लेसो मोल मगाड़ ।
ईजत किण विध आणसो, पूछू हेला पाड ।।38
समर ढिलोकर साम नू, लस आवै लबड़ाक ।
मूछ थकाँ मूडत जिके, नाक थका बिण नाक ।।39
हूं कुल़ में पापी हुवो, पत नू दीन्ही पीठ ।
तिया पतिव्रत पाल़ तू, धिक धिक मत कह धीठ ।।40
के खाधा मीठा कवा, प्रीतम जिणरै पास ।
तो खाता खारा कवा, होजे काय उदास ।।41
कांकल़ मे खारा कवा, मिलि़या नही मजाल ।
तीर बाण दीठा तठै, लागा गोल़ा लाल ।।42
खावद कवा खवाड़िया, मीठा लेले मोल ।
सहस गुणां मै सीलिया, बोले मीठा बोल ।।43
बादल़ ज्यूं सुरधनुष बिण, तिलक बिना दुजपूत ।
बनो न सोभै मोड़ बिन, घाव बिना रजपूत ।।44
पिसण पीठ खग जो जड़ूं, पिसण जड़ै मो पीठ ।
किसूँ नफो कह कामणी, राड़ बजायाँ रीठ ।।45
न लिवूँ हू बदलो नियम, असमर बाहो आन ।
साँचां मन सूँ सीखियो, गौरी ब्रहम-गिनांन ।।46
पैलो खोसै पाघड़ो, हँसे दिखालूँ दत ।
कायर मोनैं क्यो कहै, सुद्ध सुभावाँ सत ।।47
लैं लारै तरवार रै, पायो रिजक पलीत ।
दीधो खॉवंद नूं दगो, संत नहीं इण रीत ।।48
काटल़ आवध मूझ कर, मन मंदाइण मन्न ।
आवध राखै ऊजल़ा, मैला ज्याँरा मन्न ।।49

अधिक सूर कै हूँ अधिक, बनिता समझ विवेक ।
जग सारो मो नूँ हँसै, उण सूँ नारद ऐक ।।50
दल़ ओला पैला दुहूँ, लत्योबत्थ हुवाह़ ।
जेथ मुवाजे जीविया, जे जोविया मुवाह ।।51
पिसंणां रा सरसूं पुल़े, बप मैं लियो बचाय ।
सो बप तैं कुवचन सराँ, घायो अगणत घाय ।।52
भारथ मत कर भामणी, मो भारथ नंह मेल़ ।
वापी कूप बताव बिख, कै कर म्हासूँ केल़ ।।53
एकोतरै अठार सै, साँवण दुतियक स्वेत ।
बांकै ग्रथ बणावियो, कायर कुजस निकेत ।।54

में ही अपना हित समझ चुके थे और अंग्रेजों के सरक्षण को अपने लिये वरदान मान चुके थे ।

अंत में उथल-पुथल के उस युग में अंग्रेजो के सत्ता-पाश ने भारत भूमि को अपनी अर्थ लोलुप पकड़ में ले लिया और वह जकड़ सन् १९४७ में जाकर ही कही छूटी और भारत स्वाधीन हुआ ।

ऐतिहासिक व सांस्कृतिक टिप्पणियां

लोकदेवी करणीजी—

करणीजी चरण कुलोत्पन्न लोकदेवी है । इनका जन्म वि. स. 1444 आश्विन शुक्ला 7 के दिन सुवाप ग्राम मे हुआ था । इनके पिता चारणों की किनिया शाखा के मेहा थे । करणीजी का विवाह केलू के पुत्र देपा वीठू के साथ हुआ था । राजस्थान मे इनका देशनोक (बीकानेर) मे सगमरमर से निर्मित भव्य और विशाल मंदिर है । यो चारणो के गांव गांव मे इनके छोटे बड़े अनेक पूजास्थल है । राजस्थान और गुजरात में करणीजी की विशेष मान्यता है । बीकानेर राजवश मे करणीजी की विशेष मान्यता थी । लोक मानस मे इनके प्रति बड़ी आस्था और श्रद्धा का भाव है । लोक प्रसिद्धि है कि यह देवी शक्ति सम्पन्न नारी थी और आज भी अपने भक्तो और आराधको का संकट निवारण करती है । इसीलिए इन की देव रूप मे पूजा-अर्चना की जाती है । कहते है कि जोधपुर के राजकुमार और बीकानेर राज्य के संस्थापक राव बीका को जागलु का राज्य उन्ही के आर्शीवाद से प्राप्त हुआ था । बीकानेर राजघराने में इन के प्रति पूर्ण प्रतिष्ठा और श्रद्धा भाव है ।

इनका देशनोक मे दोनो नवरात्रो पर विशाल मेला भरता है जहां बिना जातीय भेदभाव के सब ही जातियो के लाखो नरनारी दर्शनार्थ एकत्र होते हैं ।

राजस्थानी साहित्य मे इनके चमत्कारिक कार्यों और परिचयो पर अनेक कवियो द्वारा सर्जित सहस्रो दोहे, सोरठे, गीत और कवित्तादि छंद उपलब्ध हैं । वि. स. 1995 चैत्र शुक्ला नवमी को 151 वर्ष की आयु मे इनका महाप्रयाण होना कहा जाता है—

पन्द्रह सौ पिचाणवै, देव सुकल गुरु नम्म ।
देवी सागै देह सूं, पूगा जोत परम्म ।।

पाबूजी राठौड़—

पाबूजी राठौड़ का जन्म 1323 विक्रमाब्द में मारवाड़ में हुआ था । मालानी प्रदेश के स्वामी आसथान के द्वितीय पुत्र राव धांधल के पाबूजी छोटे पुत्र थे । यह बड़े वीर, प्रतिज्ञा धनी और सुधारवादी प्रकृति के थे । राजस्थान में अछूतोद्धार में इनका सर्वोपरि स्थान माना जाता है । इनकी सेना में 124 थोरी (भील) जाति के प्रमुख सैनिक थे । एक बार नागौर (मारवाड़) पट्टी के खीची राजपूत शासक जिनराज ने उदा चारण की पत्नि देवलदेवी से कालमी नामक उसकी घोड़ी मागी । वह उस जमाने की श्रेष्ठ घोड़ियों में गिनी जाती थी । देवलबाई ने जिनराज को वह घोड़ी देने से मना कर दिया और पाबू को दे दी । इस पर जिनराज और देवलबाई में विरोध उत्पन्न हो गया । फलतः जिनराज ने देवलदेवी की गायों का अपहरण कर लिया । उस समय पाबू सिंध के अमरकोट स्थान पर सोढ़ा क्षत्रियों के वहाँ विवाह करने के लिए गया हुआ था । देवलबाई ने इस घटना की सूचना पाबू को दी । प्रतिज्ञा धनी पाबू विवाह मंडप मे भावरें पड़ते बीच में ही उठ खड़ा हुआ और नागौर जाते हुए जिनराज को मार्ग में ही जा पकड़ा । दोनो पक्षों में जमकर लड़ाई हुई । गायें छुड़ा कर पाबू और उसके वीर सहयोगी भील लड़ते हुए मारे गए ।

पाबू की स्मृति में मारवाड़ और बीकानेर भूभागों के गाँव गाँव में मड (मडप) हैं । उन में उसकी लोक देवता के रूप में पूजा होती है । थोरी जाति के लोग उसके पुजारी हैं और वे चित्रपट दिखाते हुए उसका कीर्तिगान (प्रवाड़े) गाते हैं । इन थोरियो को आस्थावान जनता भरपूर ईनाम देकर उनकी पड़ (चित्रपट) देखते और प्रवाड़े (प्रशस्तिगान) सुनते हैं । अस्पर्श थोरी जाति को अपनाने और उनका उत्थान कर समाज में समुचित स्थान दिलवाने में इनका

महत्वपूर्ण योगदान है । मारवाड़ के फलोदी परगने के कोलूमण्ड स्थान पर हजारों बीघा भूमि मे इनका अरण्य और दो विशाल देवल है ।

बल्लू—

बल्लू चांपावत पाली के ठाकुर गोपालदास का पुत्र था । यह आठ भाई थे । जिनमें सात भाई विभिन्न स्थानो के युद्धो मे मारे गए थे । इसके वंशधरों के अधिकार में जोधपुर राज्य का हरसोलाव ठिकाना था । यह प्रारंभ में राव अमरसिंह राठौड़ नागौर की सेवा में था । फिर राव से अनबन हो जाने पर महाराणा राजसिंह के पास उदयपुर चला गया । वहाँ से यह बादशाह शाहजहां के पास गया । वि. स. 1701 मे राव अमरसिंह के आगरा में शाही फौजबख्शी सलावतखाँ को मार कर स्वयं के मर जाने पर बल्लू और भावसिह कूंपावत ने आगरा के किले पर आक्रमण कर राव अमरसिह के शव को निकाल कर दाह संस्कार किया और अपने कई साथियो के साथ शाही सेनासे लड़ कर काम आया । बल्लू बड़ा स्वाभिमानी वीर था । प्रसिद्धि है कि उदयपुर के प्रवेशद्वार दहबारी के युद्ध मे इसने मृत्यु के बाद भूत दह से शाही सेना पर आक्रमण कर उसे खदेड़ कर मुक्ति लाभ किया था । गीत में आगरा और दहबारी की लड़ाइयो का वर्णन है ।

महाराज पद्मसिंह—

महाराज पद्मसिंह बीकानेर के महाराजा कर्णसिंह का छोटा पुत्र और महाराजा अनूपसिह का छोटा भाई था । यह बड़ा साहसी वीर और बलवान व्यक्ति था । शाही सेवा में प्रवेश पाने पर यह अपने बड़े भाई केशरीसिंह के साथ शाहजदा औरंगजेब का पक्षधर रहा । वि. सं. 1715 के धर्मात और धोलपुर के युद्धो में पद्मसिह ने बड़ी वीरता दिखायी थी । खजवा के युद्ध में भी यह औरंगजेब की ओर से युवराज दाराशिकोह के विरुद्ध लड़ा । इसने दक्षिण की कई लड़ाइयों मे भाग लिया था और साहस दिखाया था ।

वि. सं. 1728 में शाहजादे मुअज्जम के साले मुहम्मद मीर तोजक और पदमसिंह के भाई मोहनसिंह के तकरार हो गया । इस पर मुहम्मद ने मोहनसिह को मार डाला । इस पर पदमसिंह ने अपने भाई के प्रतिशोध मे औरंगाबाद में मुहम्मद को भरे दरबार तलवार के घाट उतार कर मोहनसिह का वैर लिया । यह वि. स. 1739 में सावतराय और जादवराय मरहठा की सेना से लड़ते हुए मृत्यु को प्राप्त था । पदमसिह की तलवार बीकानेर के शास्त्रागार में अब भी सुरक्षित है । यह इतनी भारी है कि साधारण व्यक्ति तो दोनों हाथों में ही उसे कठिनता से उठा सकता है । डा. गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने बीकानेर के इतिहास में लिखा है कि पदमसिह ने मुगलो के स्थान पर मरहठों का साथ दिया होता तो हिन्दुस्तान का इतिहास दूसरे ही ढंग से लिखा जाता । प्रस्तुत गीत में उसके ओजस्वी व्यक्तित्व और पराक्रम की प्रशंसा की गई है ।

दुर्गादास राठौड़—

दुर्गादास राठौड़ जोधपुर के महाराजा जसवतसिंह प्रथम के प्रधानामात्य ठाकुर आशकरण का पुत्र और मुगल बादशाह औरंगजेब का समकालीन था । वह अपने युग का दुधर्ष योद्धा और प्रवीण राजनीतिज्ञ था । जोधपुर नरेश जसवतसिंह का जब पेशावर मे देहांत हो गया और उनके परिजन नवजात महाराजा अजीतसिह व दलथभन के साथ दिल्ली में औरंगजेब की कपट नीति के कारण भयातुर हो गए तो दुर्गादास ने बड़े साहस और चातुर्य के साथ अजीतसिंह और दलथंभन को दिल्ली से सकुशल निकाल कर मारवाड़ में ले आने मे सफल हुआ । बाद में औरंगजेब के शाहजादे अकबर को अपने पक्ष मे कर तत्कालीन राजनीति को नयी दिशा में मोड़ दिया । वह मेवाड़ के महाराणा राजसिंह तथा छत्रपति शिवाजी मरहठा के पुत्र से भी सम्पर्क रखता था । दुर्गादास की स्वामिभक्ति, देशभक्ति और त्याग प्रसिद्ध है । उसी के दीर्घकालीन संघर्ष से औरंगजेब के निधन के बाद महाराजा अजीतसिंह को जोधपुर का राज्य मिला था । दुर्गादास पर रचित प्रथम गीत में दुर्गादास और उसके सहयोगी वीर ठाकुर सोनंग चांपावत के साहस और बादशाही आज्ञाओं का उल्लंघन

कर शाही सल्तनत को चुनौती देने का वर्णन है । द्वितीय गीत मे औरंगजेब क़ो युद्धों में उलझाये रखने पर शाही बेगमो की विहरजन्य दशा का वर्णन है ।

उत्तमचंद भंडारी—

उत्तमचंद भंडारी ओसवाल वैश्य चैनराम जोधपुर का द्वितीय पुत्र था । यह साहित्य और काव्य का बड़ा अनुरागी और श्रेष्ठ कवि था । इसने महाराजा मानसिंह जोधपुर के आध्यात्मिक गुरु आयस लाडूनाथ के समय नाथ चद्रिका पिगल काव्य ग्रथ और "रतनाहमीर" री वारता नामक राजस्थानी प्रेम कथा लिखी है । महाराजा मानसिह ने उत्तमचंद को जागीर प्रदान की थी । उत्तमचंद का बड़ा भाई उदयचंद भी उच्चकोटि का विद्वान था । उसकी ब्रजभाषा के आचार्यों मे गणना की जाती है । गीत मे उसके पाडित्य और काव्य प्रतिभा का वर्णन किया गया है । यह बाकीदास की मित्र मण्डली मे था ।

गीत जाटां री तारीफ रौ—

पश्चिमी उत्तरी राजस्थान के झूझुनू, सीकर, चूरू, नागौर और बीकानेर जिले में जाट जाति के कृषकों का बाहुल्य है । यों राजस्थान में भरतपुर और धोलपुर जाटो के दो राज्य भी थे । नागौर जिले के जाटो मे वृद्ध गृहपति के निधन के बाद बारहवे दिवस या उसके पश्चात् सुविधानुसार पट्टी जिमाने की एक व्ययपूर्ण परम्परा थी । इसमे एक ऐसा बड़ा भोज किया जाता है या जिस मे पट्टी विशेष के अपने जाति घटकों को निमंन्त्रित किया जाता है और उन्हें हलुवा या लड्डू का भोज दिया जाता था । इसकी व्यवस्था के लिए अलग अलग अहाते बनाकर आगन्तुकों को भोजन कराया जाता था । इसी प्रकार पेड़ा चढाने की भी इन मे एक विशिष्ट परम्परा थी । पेड़ा चढाने की परम्परा में अनेक पट्टियों को न्यौंता जाता था और गांव के आम रास्तों पर आदमी नियत कर दिये जाते थे । वे आदमी बिना जातीय भेद भिन्नता के राहगीरों तक को रोक कर गाँव में जाकर उक्त अवसर निमित्त बनाए हुए पकवान्न को जीम कर ही अपने गन्तव्य तक जाने का अनुरोध करते थे । भोज्य की समाप्ति

पर जंगल से एक शमी का पेड़ काट कर लाते और उस पर गाड़ी का पेड़ा (चक्र) तथा ध्वजा चढाई जाती थी । बाद में उस ध्वजा को किसी देव मंदिर पर फहरा देते थे । इस मे मिष्ठान्नादि में देशी धृत और शर्करा का प्रयोग किया जाता था । मिष्ठान्न में हलुवा अथवा लड्डू बनाए जाते थे । राजस्थान मे ठाकुर जागीरदारों में भी इसी प्रकार ब्रह्मपुरी भोज का प्रचलन था । इसे ब्रह्मपुरी जिमाना या 'हेड़ा' देना कहते थे । यह भोज अलग अलग दिवसो पर अलग अलग गावों कस्बों अथवा नगरों के ब्राह्मण समाज को जिमा कर उन्हे शक्ति अनुसार दक्षिणा देकर सम्पन्न किया जाता था । खूड़ के ठाकुर रामप्रतापसिंह ने अपने जीवन काल में कुचामन, सीकर, ब्यावर, जयपुर, सौरंग घाट मथुरा और हरिद्वार की ब्रह्मपुरियों को भोजन करवाकर चारआना प्रति व्यक्ति दक्षिणा दी थी ।

ये प्रथाएं समाज मे जहाँ अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान प्रकट करना सिखाती थी वहाँ पुन्न तथा उदारता का भी प्रकटन करती थी । अब ये सब परम्पराएं अथवा प्रथाएं समाप्त हो गई हैं ।

करमा—

यह जाट कृषक जाति में उत्पन्न एक गृहस्थ नारी थी । इसका जन्म स्थान मारवाड़ के बिलाड़ा क्षेत्र के गाँव में माना जाता है । करमा स्वभाव की सर्वथा सरल और भगवान् की परमभक्त नारी थी । राजस्थान में रात्रि जागरणों में भक्त लोग करमा के नाम की छाप के भजन और हरजस श्रद्धा के साथ गाते है । लोकमानस मे प्रसिद्धि है कि मंदिर के पुजारी के तीर्थयात्रा पर चले जाने पर भगवान् ने उसके हाथ का पकाया खीचड़ा बाजरा मोठ का पक्कवान-सदेही रूप धारण कर खाया था ।

धना—

यह जाट जाति में उत्पन्न भक्त था । भगवान ने इसकी भक्ति से प्रसन्न होकर इसके खेत में अन्न के स्थान पर हीरे मोतियों की फसल उत्पन्न की थी । राजस्थान में कबीरदास, रविदास, सैन भक्त, सज्जनकसाई, दादूदयाल आदि भक्तों के साथ धन्ना भक्त का भी

स्मरण किया जाता है । इसका निवास और कर्मक्षेत्र-मारवाड़ में ही माना जाता है ।

जाम ऊनड़—

यह सिंध का क्षत्रिय राजा था । यह बड़ा वीर, दयालु और उदार व्यक्ति था । उसने चारण कवि सावल सूध की काव्य रचना और वाक् चातुर्य से प्रसन्न होकर अपने राज्य की सम्पूर्ण आय सावल सूध को दे दी थी । सावल सूध और जाम ऊनड़ के दान प्रसग के अनेकशः वर्णन मिलते है ।

जगदेव पंवार—

धारा नगरी के राजा उदयादित्य पवार की सोलकनी रानी का पुत्र जगदेव महान् वीर तथा परम दानवीर था । उसकी अपूर्व यश कथाओं से मालवा, गुजरात और राजस्थान महक रहा है । वह सर्व गुण सम्पन्न शासक था जिसका विभिन्न भाषाओं मे गुणगान हुआ है । वह मालवा छोड़ कर सिद्धराज जयसिंह के पास गुजरात चला गया था । उसकी कई देशों पर विजय के उल्लेख मिलते हैं । डोगर गाव के शिलालेख मे लिखा है कि जगदेव जब याचको को और शत्रुओं पर स्वर्ण मुद्राओं और बाणों की वर्षा करता तो अर्थी समुद्र का परित्याग कर निशक उसकी उपासना करते । न वह देश था, न वह ग्राम, न वह लोक था, न वह सभा, न वह रात्रि थी और न वह दिन था जहाँ जगदेव के यश का ज्ञान न होता हो । वह वीरता, दान और धर्म निष्ठा मे अद्वितीय था । उसकी मृत्यु 1137 ई. के आसपास मानी जाती है ।

भरतपुर—

राजस्थान मे 22 राज्य थे जिनमे भरतपुर और धोलपुर दो राज्य जाटों के थे । भरतपुर राज्य का निकास करौली राज्य के यादव क्षत्रियो से माना जाता है । यहाँ के जाट राजा बदनसिह और उसका पुत्र राजा सूरजमल जयपुर के राजा सवाई जयसिह के सहयोगी, विश्वस्त और स्वामीभक्त शासक थे । अंग्रेजों के समय मे भरतपुर

का राजा रणजीतसिंह बड़ा वीर और साहसी हुआ । उसने अंग्रेजों से प्रताड़ित राजा यशवंत राव इन्दौर की अंग्रेजों के विरुद्ध सहायता की और एक अर्से तक अपने पास रखा । इस पर अंग्रेजो ने भरतपुर और डीग पर चढ़ाई की । जाटों और मराठों ने अंग्रेजों का डटकर सामना किया जिसमें अंग्रेज सेनानामक लार्ड लेक मारा गया । मगर रणजीतसिंह अंग्रेजों के सामने नही झुका और बराबर मुकाबला करता रहा । अत में सन् 1805 में अंग्रेजो को विवश होकर भरतपुर के साथ सधि करनी पड़ी । इन लड़ाइयों मे भरतपुर वालों के धार्मिक गुरु निम्बार्क सम्प्रदाय के साधुओं ने भरतपुर के शासक के साथ गद्दारी की । बांकीदास ने अपने गीतो में निम्बार्क सम्प्रदाय के साधुओं की निंदा और दादूपथी साधुओ की प्रशंसा की है । चेतावनी के गीत में बांकीदास ने अंग्रेजो की कूटनीति पूर्ण चालों तथा षड्यन्त्रों से हिन्दू नरेशों को सगठित होकर उनका सामना करने का आवाहन किया है । उक्त गीत में बांकीदास की दूरदृष्टी और राष्ट्री भावना का स्वर स्पष्ट रूप में मुखरित हुआ है ।

हातिमताई—

यह फारस देश के तायनगर का निवासी था और अभाव पीड़ित दुःखी मनुष्यों की बड़ी सहायता करता था । इसके नाम पर हातिमताई नामक एक पुस्तक है जिसमे इसकी उदारता पर विस्तार से लिखा गया है । राजस्थान के कई कवियों ने हातिमताई की दयालुता और उदारता की सराहना करते हुए दोहे, सोरठे आदि लिखे हैं ।

विसलदेव—

यह गौड़ क्षत्रिय राजा अर्णोराज अजमेर का जेष्ठपुत्र और उत्तराधिकारी था । यह उत्तम श्रेणी का विद्वान् और पंडितों का आश्रयदाता था । इसने अजमेर में एक विशाल भवन बनवाकर उसमे पाठशाला बनायी थी जिसके खण्डहर अढ़ाई दिन के झोपड़े के नाम से प्रसिद्ध हैं । यह बड़ा धनी और विजयशाली था । इसने आनासागर की खुदाई में बीस करोड़ रुपये व्यय किये पर उसमें फिर भी पानी

नहीं रहा । इसलिए किसी ने कहा है– "बीस करोड़ बीसलदे वाली पड़गी ऊंडै पाणी' ।

बीकम–

इसका शुद्ध नाम विक्रमादित्य था । विक्रमादित्य परमार क्षत्रिय और भारत का चक्रवर्ती सम्राट था । इसकी राजधानी उदयिनी (उज्जैन) मालवा मे थी । यह अति शूरवीर, परमदानी, विद्वान् और प्रतापी सम्राट था । विक्रम संवत् इसी सम्राट् के नाम पर प्रचलित है । राजस्थानी लोकसमाज में वीर विक्रमादित्य के नाम से अनेक कथा कहानियाँ प्रचलित हैं ।

लाखा फुलाणी–

यह जाड़ेचा (यादवों की एक शाखा) के कच्छ भुज राज्य का शासक था। लाखा महान्दानी था । गुजरात और राजस्थान में इसे कर्ण की भाँति प्रातः स्मरणीय मानते हैं । लोक गायक लाखा और बाघा कोटड़िया का स्मरण कर अपना गायन प्रारंभ करते हैं ।

जेहा भाराणी–

जेहा (जसराज) अकबर कालीन राजा भारामल जाड़ेचा कच्छ भुज का राजकुमार था । इसने अपने यौवराज्य काल में कवियों, कला विद्रों और संगीतकारों को लाखो रुपये दान, सम्मान और पुरस्कार में बांटे थे । यह अपने पिता की विद्यमानता मे ही मर गया था । इस प्रकार जैसा ने अपने पूर्वज लाखा और ऊनड़ की दान-परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखा ।

बांकीदास पर अभिमत

अथ गीत जात वेलियौ सौहणौर कुंवरजी श्री बाकीदासजी रौ धौला माणक गाव भगू सीलवावासी रौ कह्यौ—

सिवसुत ससिधरण गणा रा सामी, देवां आगैवाण दयाल ।
लबोदर तौ चरणा लागू, सुभ कविता दीजै सूंडाल ।।1।।
वीणा कर धरणी हंसवाहणी, धांमज ध्रवलौ धराधर ।
सकती सुकलबरा सारदा, वागीसवरी समाप वर ।।2।।
प्रथमी पुड़ मुकट आसियां पूजौ, सद मत मालौ वैरसल ।
भीम कड़ाय करण भल भालम, नायक कुल खेतल नवल ।।3।।
सूरजमल बलहठ माल सिंघालौ, सत मत गुण सागर सगत ।
जायौ फतै इता चाढण जल, बाकीदास चढंती वेस ।।4।।
वरणू जस जिकण तणै सुभवाण, मत माफक कर उकत मत ।
छिलतै मच्छर आसिया छोगौ, विधिया पातारी रीझै करत ।।5।।
द्वारा जगनाथ दला साझे दिन, चैजन दसा राम बड़ चीत ।
अखा किसन जनां मानां इम, राखण देद वलू कुल रीत ।।6।।
अड़पायत माना दला अगजत, पतसाई पाई कवि पीर ।
साकर राणा जसा सरीखा, गणपत भोपत गुणा गहीर ।।7।।
काधल भीमेण करमसी कहीजै, नरु नरिद भुज बाधा नेत ।
दूदा राधौदास दीपिया, सुज पीवल खग त्याग समेत ।।8।।
सोह सोध लिया इक साथ सासतर, नाथ क्रपा सू बोध निधान ।
गाढै मते वक कुंवरांगुर, वडा आसिया चाढ़ै वान ।।9।।
ईसाणद आसा लखपत अखई, नरहर साकर निभैनर
राजड़ जसवत कला रोहड़ा, हुवा उजागर चंदहर ।।10।।
चित निरमल राम उपासी चूडा, माधवदास उदारमत ।

खीमां आसा हुआ अड़ीखंभ, सग्रहिया धधवाड़ सत ।।11।।
चक चारू प्रगट कौल नै चादण, दासा लूभा भैरुदास ।
हुकमा अमरा जगड मनोहर, वरना जाणिया विधिया व्यास ।।12।।
सतपुरस अलू गागा डूगरसी, सगह नरु भाना सादूल़ ।
पचायण करणा लखपावण, सिध कविया असहा अरसूल़ ।।13।।
भाछलि़या बीजाणद भाषजै, महिपह रावज किसन अजमाल ।
राघव ईसरदास उचरुंष, दीपिया भादा वरन दुझाल़ ।।14।।
दुरसा साल किसन वडदाता, मधकर नै नीसाण मल ।
कान महेस जिसा गज केहर, आण पग बागा अचल़ ।।15।।
हूफा रामेव मालदे वडहथ, कांना नाथा कुंभक्रन ।
तेजल दल़पत भैरवा सदा, मुदै सादुवा मोट मन ।।16।।
भल़ पात पसायत चागा भीमा, सहजपाल चौल़ा सुभियांण ।
गोकल़ केसव माधव गिणजै, वस गाडण अविरल वांण ।।17।।
इल़ जाडा लूणपाल उचतापत, कविद महड़वां महण कवि ।
अचला वीदा हरी सडायच, राखण जसलग चद रवि ।।18।।
कालू वल कूंपा कमा बोगसा, केसरिया हरदास कहि ।
महियारया अदौ मछरायल, मेट बाटियां प्रगट महि ।।19।।
रगरेल़ा मेहरज सूजा जसरस, सुकवि वीठवा कुल़ सिणगार ।
सौदां दौला नख सुचारण, साईयां झूलां बिरद सधार ।।20।।
रवि ईसर जेवाणद रतनुवां, सामोरा कवि हेम सकाज ।
सूरापत टापरिया सोभा, सूध सावलां भाल़म साज ।।21।।
मरजादा मड वरसड़ा मावल, वणसूरां सिवदास वखाण ।
भारी तोल काल व्रत भादां, जेम लाल़सां खेतल जांण ।।22।।
वीसा सौ साख चारणा व्रनरी, साख साख मझ हुआ सपूत ।
ज्यां सारां सिणगार जागियौ, भापण गुण वाकौ अदभूत ।।23।।
भणियोड़ौ आज ससक्रत भाषा, रूपै कुंण ड़ीगल सूं राड़ ।
बाकीदास चारण व्रन रै, कवच ढाल औछाड किवाड़ ।।24।।
मल कुरबा वार क्यावरा भीमौ, सूरातन दूदौ सरस ।
वाकौ एम आखरा वाकौ, दाखै सुसबद देस दस ।।25।।
वादी पाठीन वेद सू वढहणा, अरथ नीर गहरे अतर ।

वांणी तणा समंद रौ वांकौ, प्रवल तिमंगल़ पूंजहर ।।26।।
सूरजमल वजिन्द्र आगरै सोधै, साह्-तणा भडार सब ।
वाकै कविन्द्र एम वांणी रा, अपणाया भडार अब ।।27।।
नह चरचा पार ख्यात नरनाहा, गिण विणपार विद्वान गुण ।
जोड़ अपार पार नह जुगतां, कियौ वक अभियास कुंण ।।28।।
हठकर करवादी थी रुचकै, नह मचारल है दर नेम ।
चरचा पंजा वक चातरी, गज अरजण सरपजर जेम ।।29।।
षट राग सासतर वेद अंग षट, वल कायब षट भाष विवेक ।
सात पदारथ सात छंद सुर, निज आसल समझै कविमनेक ।।30।।
नवधा हरिभगत अक नवरस नव, वलन द्रवनद व्याकरण ।
जाणै नवखड इल़ भेद जुत, तीखी मति फतमाल तण ।।31।।
दस आगम विध्यां चार अनै दस, किल पींगल सोल़ह करम ।
बावन वरन उपनिसद बावन, मालहरौ जांणै मरम ।।32।।
समरत नवदूण पूराण कोस सुध, जगरूपक चौरासी जात ।
चौसठ कल़ा ऊजलै चेतन, वक पिछाणै इल़ विखियात ।।33।।
छपह पनग खड़ग इता गुण दूसण. कायब गुण दूसण कहर ।
रतन पच भारथ रामायण, भैरू वांकौ भीमहर ।।34।।
कपूरमंजरी अनै संकुतल़, मदालसा सदकुंवर मुरार ।
वर चरित्र संबरण वैणी, सरस मालती माधव सार ।।35।।
हयग्रीव ललित माधवनै हणमत, नेह आवरत नागाणद ।
बांकै इता नाटकां वाल़ा, अक लिया अवगाहि अमद ।।36।।
मत मंत्य कतुबी मीर मैछबूदी, सदरा समस वाजगां सार ।
नामौसाह सिकंदरनामौ, वल़ेज लिखां रस विसतार ।।37।।
दीठी मसनवी वहारा दानस, वहौ जुगतां मीनाबाजार ।
और दीवान हाफजां उरफी, बंक किताबां लीध विचार ।।38।।
सीराज बलख खुरसांण सीसथां, तुरकसथान ताज नै तोस ।
हिलंब, किनान चीण ऐम व हद मह रूम भायरां नह वर रोस ।।39।।
बगदाद अनै तुरान बुखारौ, अरबसथान वल़ै ऐराक ।
बडी मीसर ईरांन विलायत, वंक दिखावै कर चष वाक ।।40।।

उपमा द्रसट अलौकिक उकता, हुवै भाव निरवाह् हद ।
चौखा धड़े धूधड़ै चारण, सगताहर सहता सबद ।।41।।
विचरंता पवन मलयगिरवाला, आसल रा कायब अणरेह ।
अतिश्री षड ग्रंथ सग्रह् अति, इल अनुमान करावै ऐह ।।42।।
भवभूत माघ श्रीहरस भारवी, वररुच बाण ऊवै वैताल ।
कालदाससा बरणण कीना, नर सुर रहिया जिके नृपाल ।।43।।
राजा जैचद समरसी रावल, प्रथीराज एकाध पत ।
वसुधा चंद तणा वचना सूं, साबत सहित प्रताप सत ।।44।।
जैसिघ जसौ वीरमदे जगदे, ऊनड़ हेम हमीर उदार ।
जेहल चादण लाखौ जगपत, सोम गजन रासो सुदतार ।।45।।
अै राजा कीना अमर आषरां, पातां अगलूणा प्रगट ।
राखण अमर आजरा राजा, आसल वाकौ उप्रवट ।।46।।
सिरपाव जवाहर, गज धज सासण, कज मूंदड़ा षड़ग कटार ।
कमध पसाव लाखरौ कीनौ, विजपतहरै मान वडवार ।।47।।
सुखपाल कुरब ऊठण रा समपै, समपै बैठक सिरै सकाज ।
देख गुणां दिस भीम दुवानूं, मनसुध गुर कीधौ महाराज ।।48।।
वस हुवै नही पतसाहा वेढक, नरपाहां माथै नकस ।
राजा मान प्रगट दोय राहा, बांकै गाहा कियो वस ।।49।।
भल आकृत अरथ आव सू भरिया, आखर मोताहल उजवाल ।
पोय गुणां बांकै पहिरावै, मान कंठ नित किरतमाल ।।50।।
निसवासर एक इस्ट रौ निहचौ, विदिया बिसन चौगुणै वांक ।
पारखघर आज आक घटतीं रौ, आसल रै वधती रै आक ।।51।।
उदियापुरां रामपुरै भुज ईडर, रूपनगर बूदी रतलांम ।
आमझरै देवलियै आका, नवैनगर सगताहर नाम ।।52।।
गढ़ जूनै बीकानेर गागुरण, पाटण आबानैर प्रकास ।
कोटै जैसलमेर करौली, वाकीदास तणौ जसवास ।।53।।
वांहवाड़ै गिरपुर लूंणावाड़े, पालणपुर नै पारकर।
वींकमपूर बहियापुर बदर, पूंजाहर कीरत पसर ।।54।।
पहि महि, नरवर भावनगर, मांचेड़ी वल़ गुंडल़ हल़वद वढ़वांण।
सौपुर नै वणहड़ै सायपुर, रूपक पूगा आसल राण ।।55।।

परदीपै खडे प्रमांणै प्रथमी, तटा दरू दरियावां तीख ।
वापरिया रूपक वांकारा, साहतणा गज सिकां सरीख ।।56।।
जै समरण करत समाजी जीतै, जोड़ि जताई चपै जुबान ।
चालै समा जुबान चढता, बंक गुणां देवता वरदान ।।57।।
मालहरा भरतखड माहे, सोभै इम रूपक ततसार ।
सोभै जिम ऊजल़ वरतुल़ सम, मोती सुबरण थाल़ मझार ।।58।।
गण औजस साद माधुर जा गौरव, अरथ सबद रस अलकृत ।
विदियाणंद उपासै वांकौ, रसो छइ श्रुती रति ।।59।।
रै हीर जल़ाहृत वैधण रतनां, ओर्लाग दस देसां ऊचास ।
समरथ इम समरथ कायब सौह, विध विध चरचण बाकीदास
।।60।।
तरसै सौह कोइक धाप पियैतर, कल़स भरै कोटा मझ कोय ।
बादल़ भरै आंणिया वांकै, जिण सरसत सागर सूं जोय ।।61।।
सागर दिगपाल़ मेर ससि सूरज, इल ऊपर जैतै अचल़ ।
अैतै अचल़ वाकडौ आसल, वातां राखण वल़ोवल़ ।।62।।
सुद कातिक बीजवार धरणी सुत, सत सर वरस अपार सत ।
वणियौ अदभुत गीत वेलियौ, पुर जोधांणै धण प्रनत ।।63।।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1.	राजस्थानी निबंध-संग्रह	सौभाग्यसिंह शेखावत, जोधपुर
2.	बाँकीदासरी ख्यात	प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, जोधपुर
3.	जसवत जसोभूषण	कविराज मुरारिदान आशिया, जोधपुर
4.	राजस्थानी साहित्य संपदा	सौभाग्यसिंह शेखावत, बीकानेर
5.	बाँकीदास ग्रंथावली भाग I	पं. रामकर्ण आसोपा, काशी
6.	बाँकीदास ग्रंथावली भाग III	मुरारिदान और महताबचंद्र, काशी
7.	महाकवि बांकीदास ग्रथावली भाग I और II	सौभाग्यसिह शेखावत, चौपासनी
8.	कविमत मडण	डॉ शक्तिदान कविया, जोधपुर
9.	बोलावण	प्रो. सूर्यकरण पारीक, पिलानी
10.	स्वतत्रता सेनानी डूंगजी जवाहरजी	सौभाग्यसिंह शेखावत, चौपासनी
11.	पूर्व आधुनिक राजस्थान	डा. रघुवीरसिंह, उदयपुर
12.	दयालदास री ख्यात	डा. दशरथ शर्मा, बीकानेर
13.	महाराजा मानसिंह व्यक्तित्व और कृतित्व	डा. रामप्रसाद दाधीच, जोधपुर
14.	चारण साहित्य का इतिहास भाग १-२	डा. मोहनलाल 'जिज्ञासु' जोधपुर
15.	राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम काव्य	राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
16.	राजस्थानी वीरगीत संग्रह भाग १-४	सौभाग्यसिंह शेखावत, जोधपुर